# SĀMAVEDA

OF THE

# JAIMINĪYAS

## Text and Mantra Index




Prof. Dr. Raghu Vira

Sarasvati Vihara Series

EDITED BY

**Raghu Vira,** M. A., Ph. D., D. Litt. et Phil.
*DIRECTOR, INTERNATIONAL ACADEMY OF INDIAN CULTURE, LAHORE*
*IN COLLABORATION WITH OTHER SCHOLARS*

Volume 3

# SĀMA VEDA OF THE JAIMINĪYAS

Rupees 10/-    Shillings 15/-

August 1938

Published by the Director

for

The International Academy of Indian Culture,
Lahore, India

*Printed by Mr. Sadhu Ram, M. A., at the Academy's own printing works, the Arya Bharati Press*
LAHORE

सरस्वती-विहार-ग्रन्थाः

३

सामवेदीया

# जैमिनीय-संहिता




आचार्य-रघुवीरेण परिष्कृता

मूल्यं-रूप्याणां दश विक्रमाब्दाः १९९५

प्रकाशिता—सरस्वती-विहारः, लवपुरम्

एषा संहिता सरस्वती-विहार आर्यभारत्य्-अभिधे मुद्रण-गृहे मुद्रिता

# जैमिनीय-मन्त्राणां

## कौथुम-संहितायां क्रमः

| जैमिमीये | कौथुमीये | जैमिनीये | कौथुमीये |
|---|---|---|---|
| पूर्वार्चिकम् ॥१॥ | पूर्वार्चिकम् ॥१॥ | | तृतीयः प्रपाठकः ॥३॥ |
| आग्नेयं पर्व ॥ | प्रथमः प्रपाठकः ॥१॥ | | पूर्वार्धः ॥१॥ |
| | पूर्वार्धः ॥१॥ | २१.१-१० | १.१-१० |
| १.१-१० | १.१-१० | २२.१-१० | २.१-१० |
| २.१-१० | २.१-१० | २३.१-९ | ३.१-९ |
| ३.१-१४ | ३.१-१४ | २४.१-९ | ४.१-४,७,८,५,६,९ |
| ४.१-१० | ४.१-१० | १० | नास्ति |
| ५.१-१० | ५.१-१० | २५.१-१० | ५.१-१० |
| | अपरार्धः ॥२॥ | | अपरार्धः ॥२॥ |
| ६.१-८ | १.१-८ | २६.१-१० | १.१-१० |
| ७.१-१० | २.१-१० | २७.१-१० | २.१-१० |
| ८.१-८ | ३.१-८ | २८.१-१० | ३.१-१० |
| ९.१-१० | ४.१-१० | २९.१-१० | ४.१-४,७,८,५,६,९,१० |
| १०.१-६ | ५.१-४,६,५ | ३०.१-१० | ५.१-१० |
| | द्वितीयः प्रपाठकः ॥२॥ | | चतुर्थः प्रपाठकः ॥४॥ |
| | पूर्वार्धः ॥१॥ | | पूर्वार्धः ॥१॥ |
| ११.१-१० | १.१-१० | ३१.१-१० | १.१-१० |
| १२.१-८ | २.१-८ | ३२.१-१० | २.१-१० |
| ९,१० | न स्तः | ३३.१-१० | ३ १-१० |
| ऐन्द्रं पर्व ॥ | | ३४.१-९ | ४.१-९ |
| १३.१-१० | ३.१-१० | ३५.१-१० | ५.१-१० |
| १४.१-१० | ४.१-१० | | अपरार्धः ॥२॥ |
| १५.१-१० | ५.१-१० | ३६.१-१० | १.१-१० |
| | अपरार्धः ॥२॥ | ३७.१-८ | २.१-८ |
| १६.१-१० | १.१-१० | ३८.१-१० | ३.१,२,५,६,३,४,७-१० |
| १७.१-१० | २.१-१० | ३९.१-११ | ४.१-११ |
| १८.१-१० | ३.१-१० | | पञ्चमः प्रपाठकः ॥५॥ |
| १९.१-१० | ४.१-१० | | पूर्वार्धः ॥१॥ |
| २०.१-९ | ५.१-९ | ४०.१-१० | १.१-१० |

| जैमिनीये | कौथुमीये |
| --- | --- |
| ४१.१-८ | ४.१-८ |
| ४२.१-१० | ५.१-१० |
| | चतुर्थः प्रपाठकः ॥४॥ |
| | अपरार्धः ॥२॥ |
| ४३.१-१० | ५.१-१० |
| | पञ्चमः प्रपाठकः ॥५॥ |
| | पूर्वार्धः ॥१॥ |
| ४४.१-८ | १.३,२,१,४-८ |
| ४५.१-१० | २.१-१० |
| | अपरार्धः ॥२॥ |
| ४६.१-१० | १.१-१० |
| ४७.१-१० | २.१-६,९,७,८,१० |
| ४८.१-१० | ३.१-४,८,१०,५-७,९ |
| पावमानं पर्व ॥ | |
| ४९.१-१० | ४.१-१० |
| ५०.१-१० | ५.१-१० |

| जैमिनीये | कौथुमीये |
| --- | --- |
| | षष्ठः प्रपाठकः ॥६॥ |
| | पूर्वार्धः ॥१॥ |
| ५१.१-१० | १.१-१० |
| ५२.१-१४ | २.१-१४ |
| ५३.१-१२ | ३.१-९,१२,११,१० |
| ५४.१-१० | ४.१-४,७-१०,५,६ |
| ५५.१-१२ | ५.१-६,८,७,१०,१२, ९,११ |
| | अपरार्धः ॥२॥ |
| ५६.१-९ | १.१,२,७,८,३-६,९ |
| ५७.१-१२ | २.१-६,९,१०,७,८, ११,१२ |
| ५८.१-१२ | ३.१-१२ |
| ५९.१-८ | ४.१-८ |
| | इति षष्ठः प्रपाठकः ॥ |
| | इति पूर्वार्चिकं समाप्तम् ॥ |

| आरण्यकम् ॥२॥ | अरण्यसंहिता ॥ |
| --- | --- |
| १.१ | १.२ |
| २ | ३.२ |
| ३ | ३ |
| ४ | १ |
| ५ | नास्ति |
| ६ | ६ |
| ७ | ५ |
| ८ | ४.१२ |
| ९ | नास्ति |
| १० | ३.४ |
| २.१ | ४.८ |
| २ | ३.१० |
| ३ | ८ |
| ४ | ९ |

| | |
| --- | --- |
| | पूर्वार्चिकम् ॥१॥ |
| | तृतीयः प्रपाठकः ॥३॥ |
| | पूर्वार्धः ॥१॥ |
| ५ | ४.१० |
| | अरण्य-संहिता ॥ |
| ६-८ | ३.७,१२,१३ |
| ९ | ४.१ |
| ३.१ | ११ |
| २ | ५.२ |
| ३ | ४.२ |
| ४,५ | न स्तः |
| ६-१० | ४.३-७ |
| ४.१,२ | न स्तः |
| ३ | ४.९ |
| ४ | नास्ति |

| जैमिनीये | कौथुमीये |
|---|---|
| ५ | ४.१० |
| ६ | ५.३ |
| ७ | नास्ति |
| ८ | १.३ |
| ९ | ४.११ |
| १० | १.१ |
| ५.१-५ | १.४-८ |

| जैमिनीये | कौथुमीये |
|---|---|
| | अरण्य-संहिता |
| ६-१० | २.१,५,३,४,२ |
| ६.१ | ७ |
| २-५ | ५.१,४-६ |
| अथ शक्वर्यः ॥ | महानाम्न्यः |
| ७.१-३ | |
| अथ पुरीष-पदानि ॥ | |
| ७.४ | |

| | |
|---|---|
| उत्तरार्चिकम् ॥३॥ | उत्तरार्चिकम् ॥२॥ |
| गायत्रम् ॥ | नवमः प्रपाठकः ॥९॥ |
| | अपरार्धः ॥२॥ |
| १.१,२ | ७.१,३ |
| | प्रथमः प्रपाठकः ॥१॥ |
| | पूर्वार्धः ॥१॥ |
| ३-११ | १.१-३.३ |
| २.१-१२ | ४.१-७.३ |
| अग्निष्टोमः ॥ | |
| ३.१-८ | ८.१-१०.३ |
| ४.१-९ | ११.१-१४.२ |
| ५.१-३ | १५.१-३ |
| | अपरार्धः ॥२॥ |
| ४,५ | २२.१,२ |
| | पूर्वार्धः ॥१॥ |
| ६-१३ | १८.१-२०.२ |
| अतिरात्रः ॥ | |
| ६.१-८ | २१.१-२३.३ |
| | तृतीयः प्रपाठकः ॥३॥ |
| | पूर्वार्धः ॥१॥ |
| ९-११ | २२ १-३ |
| | प्रथमः प्रपाठकः ॥१॥ |
| | अपरार्धः ॥२॥ |
| ७.१-१२ | १.१-४.३ |

| | |
|---|---|
| ८.१-१२ | ५.१-८.३ |
| ९.१-३ | ९.१,३,२ |
| ४-७ | १०.१-११.१ |
| ८,९ | ११.३,२ |
| १०-१२ | १२.१-३ |
| प्रथमम् अहः ॥ | |
| १०.१-६ | १३.१-१५.२ |
| ११.१-९ | १६.१-१८.३ |
| १२.१-६ | १९.१-२१.१ |
| ७,८ | २२.२,३ |
| द्वितीयम् अहः ॥ | द्वितीयः प्रपाठकः ॥२॥ |
| | पूर्वार्धः ॥१॥ |
| १३.१-१५ | १.१-५.३ |
| १४.१-९ | ६.१-८.३ |
| १०-१२ | ९.१-३ |
| १५.१-१२ | १०.१-१४.२ |
| १६.१-३ | १५.१-३ |
| | प्रथमः प्रपाठकः ॥१॥ |
| | पूर्वार्धः ॥१॥ |
| ४,५ | १६.१,१७.१ |
| | द्वितीयः प्रपाठकः ॥२॥ |
| | पूर्वार्धं ॥१॥ |
| ६-१७ | १६.१-१९.३ |

| जैमिनीये | कौथुमीये |
|---|---|
| तृतीयम् अहः ॥ | |
| | अपरार्धः ॥२॥ |
| १७.१-९ | १.१-३.३ |
| १०,११ | ३.५,४ |
| १२-१४ | ४.१-३ |
| १८.१-१२ | ५.१-८.३ |
| १९.१-१३ | ९.१-१३.२ |
| २०.१-३ | १४.१-३ |
| | षष्ठः प्रपाठकः ॥६॥ |
| | द्वितीयार्धः ॥२॥ |
| ४ | ६.१ |
| | चतुर्थः प्रपाठकः ॥४॥ |
| | अपरार्धः ॥२॥ |
| ५ | ९.१ |
| | द्वितीयः प्रपाठकः ॥२॥ |
| | अपरार्धः ॥२॥ |
| ६-१९ | १५.१-१९.३ |
| चतुर्थम् अहः ॥ | तृतीयः प्रपाठकः ॥३॥ |
| | पूर्वार्धः ॥१॥ |
| २१.१-४ | १.१-२.१ |
| ५,६ | २.२,३ |
| ७-२१ | ३.१-५.३ |
| | षष्ठः प्रपाठकः ॥६॥ |
| | द्वितीयार्धः ॥२॥ |
| २२.१-३ | ७.१-३ |
| | तृतीयः प्रपाठकः ॥३॥ |
| | पूर्वार्धः ॥१॥ |
| ४-१५ | ६.१-९.३ |
| २३.१-९ | १०.१-१३.१ |
| १०,११ | १३.३,२ |
| १२-१६ | १४.१-१५.२ |
| २४.१-३ | १६.१,३,२ |
| ४-१७ | १७.१-२१.३ |

| जैमिनीये | कौथुमीये |
|---|---|
| पञ्चमो ऽध्यायः ॥ | अपरार्धः ॥२॥ |
| २५.१-१० | १.१-३.४ |
| २६.१-१० | ३.५-४.७ |
| २७.१-७ | ५.१-६.३ |
| | षष्ठः प्रपाठकः ॥६॥ |
| | द्वितीयार्धः ॥२॥ |
| २८.१-३ | १०.१-३ |
| | तृतीयः प्रपाठकः ॥३॥ |
| | अपरार्धः ॥२॥ |
| ४-१५ | ७.१-१०.३ |
| २९.१-१४ | ११.१-१५.३ |
| ३०.१-६ | १६.१-१८.१ |
| ७,८ | १८.३,२ |
| ९-२३ | १९.१-२३.३ |
| षष्ठो ऽध्यायः ॥ | चतुर्थः प्रपाठकः ॥४॥ |
| | पूर्वार्धः ॥१॥ |
| ३१.१-३३ | १.१-६.३ |
| ३२.१-३ | न सन्ति |
| ४-१३ | ७.१-१०.१ |
| १४,१५ | १०.३,२ |
| ३३.१-१२ | ११.१-१५.१ |
| १३,१४ | १५.३,२ |
| १५,१६ | १६.१,२ |
| १७ | १६.३ (चरमैव पंक्तिः समाना) |
| ३४.१-२३ | १७.१-२४.३ |
| सप्तमो ऽध्यायः ॥ | अपरार्धः ॥२॥ |
| ३५.१-९ | १.१-९ |
| १० | ११ |
| ३६.१ | १० |
| २-१० | १२-२.८ |
| ३७.१-४ | २.९-१२ |
| ३८.१-३ | न सन्ति |
| ४-१२ | ३.१-५.३ |
| ३९.१-५ | ७.१-८.२ |

| जैमिनीये | कौथुमीये |
|---|---|
| | पूर्वार्चिकम् ॥१॥ |
| | षष्ठः प्रपाठकः ॥६॥ |
| | अपरार्धः ॥२॥ |
| ४०.१,२ | ४.७,८ |
| | उत्तरार्चिकम् ॥२॥ |
| | चतुर्थः प्रपाठकः ॥४॥ |
| | अपरार्धः ॥२॥ |
| ३-१८ | ९.१-१४.१ |
| १९,२० | १४.३,२ |
| अष्टमो ऽध्यायः ॥ | पञ्चमः प्रपाठकः ॥५॥ |
| | पूर्वार्धः ॥१॥ |
| ४१.१-१० | १.१-२.७ |
| ४२.१-६ | २.८-३.४ |
| ७,८ | ३.६,५ |
| ९,१० | ७,८ |
| ४३.१-१० | ९-४.९ |
| ४४.१-५ | ५.१-५ |
| | पूर्वार्चिकम् ॥१॥ |
| | षष्ठः प्रपाठकः ॥६॥ |
| | पूर्वार्धः ॥१॥ |
| ६ | १.८ |
| ७,८ | न स्तः |
| | उत्तरार्चिकम् ॥२॥ |
| | पञ्चमः प्रपाठकः ॥५॥ |
| | पूर्वार्धः ॥१॥ |
| ९,१० | ७.१,३ |
| ४५.१ | २ |
| २-४ | ६.१-३ |
| ४६.१-३ | न सन्ति |
| ४-६ | ९.१-३ |
| | षष्ठः प्रपाठकः ॥६॥ |
| | प्रथमार्धः ॥१॥ |
| ७-९ | २.१-३ |

| जैमिनीये | कौथुमीये |
|---|---|
| | पञ्चमः प्रपाठकः ॥५॥ |
| | पूर्वार्धः ॥१॥ |
| १०-१२ | १०.१-३ |
| ४७.१-१० | ११.१-१४.२ |
| ४८.१-४ | १५.१-१६.१ |
| ५,६ | १६.३,२ |
| ७-१७ | १७.१-२०.२ |
| १८ | नास्ति |
| नवमो ऽध्यायः ॥ | अपरार्धः ॥२॥ |
| ४९.१-३ | १.१,३,२ |
| ४ | २.१ |
| ५ | ६ |
| ६ | ५ |
| ७ | ३ |
| ८ | ४ |
| ९ | २ |
| १० | ७ |
| ५०.१-५ | २.८-३.२ |
| ६-९ | ३.४-७ |
| १० | ३ |
| ५१.१ | ८ |
| २-५ | ६.१-४ |
| ६ | ६ |
| ७ | ५ |
| ८-१० | ५.१-३ |
| ५२.१-२ | ४,५ |
| ३ | नास्ति |
| ४,५ | ४.१,२ |
| ६ | ६ |
| ७-९ | ३,५,४ |
| १० | ७.१ |
| ५३.१-५ | २-६ |
| | प्रथमः प्रपाठकः ॥१॥ |
| | पूर्वार्धः ॥१॥ |
| ६-८ | ३.१-३ |

| जैमिनीये | कौथुमीये |
|---|---|
| | अष्टमः प्रपाठकः ॥८॥ |
| | द्वितीयार्धः ॥२॥ |
| ५४.१-३ | १८.१-३ |
| | पञ्चमः प्रपाठकः ॥५॥ |
| | अपरार्धः ॥२॥ |
| ४-६ | ९.१-३ |
| ७-९ | न सन्ति |
| १०-१२ | १०.१-३ |
| ५५.१-१३ | ११.१-१५.२ |
| ५६.१-१० | १६.१-१९.१ |
| ११,१२ | १९.३,२ |
| १३-१५ | २०.१,३,२ |
| | सप्तमः प्रपाठकः ॥७॥ |
| | द्वितीयार्धः ॥२॥ |
| १६,१७ | १०.१,२ |
| | पञ्चमः प्रपाठकः ॥५॥ |
| | अपरार्धः ॥२॥ |
| १८-२३ | २२.१-२३.३ |
| दशमो ऽध्यायः ॥ | षष्ठः प्रपाठकः ॥६॥ |
| | प्रथमार्धः ॥१॥ |
| ५७.१-४ | १.१-४ |

| जैमिनीये | कौथुमीये |
|---|---|
| | तृतीयार्धः ॥३॥ |
| ५-१० | ११.१-१२.३ |
| | चतुर्थः प्रपाठकः ॥४॥ |
| | अपरार्धः ॥२॥ |
| ११-१३ | ६.१-३ |
| | सप्तमः प्रपाठकः ॥७॥ |
| | प्रथमार्धः ॥१॥ |
| ५८.१-३ | ३.१,३,२ |
| | षष्ठः प्रपाठकः ॥६॥ |
| | प्रथमार्धः ॥१॥ |
| ४-१० | ४.१-६.२ |
| | प्रथमः प्रपाठकः ॥१॥ |
| | पूर्वार्धः ॥१॥ |
| ५९.१-५ | १६.१-१७.३ |
| | षष्ठः प्रपाठकः ॥६॥ |
| | प्रथमार्धः ॥१॥ |
| ६-१५ | ७.१-१०.१ |
| १६,१७ | १०.३,२ |
| १८-२० | ११.१-३ |

| | |
|---|---|
| | उत्तरार्चिकम् ॥२॥ |
| उत्तरार्चिकस्य द्वितीयार्धः ॥४॥ | सप्तमः प्रपाठकः ॥७॥ |
| | तृतीयार्धः ॥३॥ |
| १.१-३ | १०.१-३ |
| | नवमः प्रपाठकः ॥९॥ |
| | प्रथमार्धः ॥१॥ |
| ४-६ | १४.१-३ |
| ७-९ | न सन्ति |
| | पूर्वार्चिकम् ॥१॥ |
| | प्रथमः प्रपाठकः ॥१॥ |
| | पूर्वार्धः ॥१॥ |
| १० | ३.११ |

| | |
|---|---|
| २.१,२ | न स्तः |
| | उत्तरार्चिकम् ॥२॥ |
| | षष्ठः प्रपाठकः ॥६॥ |
| | तृतीयार्धः ॥३॥ |
| ३-५ | ४.१-३ |
| | अष्टमः प्रपाठकः ॥८॥ |
| | द्वितीयार्धः ॥२॥ |
| ६-८ | १४.१,३,२ |
| | षष्ठः प्रपाठकः ॥६॥ |
| | तृतीयार्धः ॥३॥ |
| ९,१० | ५.१,२ |

| जैमिनीये | कौथुमीये |
|---|---|
| ३.१ | ५.३ |
| | नवमः प्रपाठकः ॥९॥ |
| | प्रथमार्धः ॥१॥ |
| २,३ | ९.१,२ |
| | सप्तमः प्रपाठकः ॥७॥ |
| | द्वितीयार्धः ॥२॥ |
| ४ | १४.१ |
| ५ | नास्ति |
| | षष्ठः प्रपाठकः ॥६॥ |
| | तृतीयार्धः ॥३॥ |
| ६ | ९.१ |
| ७-९ | १०.२,१,३ |
| | सप्तमः प्रपाठकः ॥७॥ |
| | प्रथमार्धः ॥१॥ |
| १० | १२.३ |
| ४.१ | २ |
| | षष्ठः प्रपाठकः ॥६॥ |
| | तृतीयार्धः ॥३॥ |
| २-७ | १३.१-१४.३ |
| ८-१० | न सन्ति |
| ५.१-४ | न सन्ति |
| | षष्ठः प्रपाठकः ॥६॥ |
| | तृतीयार्धः ॥३॥ |
| ५-७ | १७.१-३ |
| | पूर्वार्चिकम् ॥१॥ |
| | चतुर्थः प्रपाठकः ॥४॥ |
| | पूर्वार्धः ॥१॥ |
| ६.१ | २.१० |
| २-४ | न सन्ति |
| | उत्तरार्चिकम् ॥२॥ |
| | सप्तमः प्रपाठकः ॥७॥ |
| | द्वितीयार्धः ॥२॥ |
| ५-७ | १४.१-३ |

| जैमिनीये | कौथुमीये |
|---|---|
| | पूर्वार्चिकम् ॥१॥ |
| | प्रथमः प्रपाठकः ॥१॥ |
| | पूर्वार्धः ॥१॥ |
| ८ | ३.२ |
| ९,१० | न स्तः |
| | उत्तरार्चिकम् ॥२॥ |
| | अष्टमः प्रपाठकः ॥८॥ |
| | तृतीयार्धः ॥३॥ |
| ७.१-४ | २.१-४ |
| ५-८ | १८.१-४ |
| | षष्ठः प्रपाठकः ॥६॥ |
| | प्रथमार्धः ॥१॥ |
| ९,१० | ३.१,२ |
| ८.१ | ३ |
| | अष्टमः प्रपाठकः ॥८॥ |
| | प्रथमार्धः ॥१॥ |
| २-४ | १३.१-३ |
| | पूर्वार्चिकम् ॥१॥ |
| | प्रथमः प्रपाठकः ॥१॥ |
| | प्रथमार्धः ॥१॥ |
| १ | ५.१० |
| ६ | नास्ति |
| | द्वितीयः प्रपाठकः ॥२॥ |
| | पूर्वार्धः ॥१॥ |
| ७ | ४.२ |
| ८,९ | न स्तः |
| | उत्तरार्चिकम् ॥२॥ |
| | अष्टमः प्रपाठकः ॥८॥ |
| | द्वितीयार्धः ॥२॥ |
| १० | ५.१ |
| ९.१-३ | २-४ |
| ४-९ | ३.१-४.३ |

| जैमिनीये | कौथुमीये. |
|---|---|
| | पूर्वार्चिकम् ॥१॥ |
| | चतुर्थः प्रपाठकः ॥४॥ |
| | अपरार्धः ॥२॥ |
| १० | ५.४ |
| १०.१-४ | न सन्ति |
| | तृतीयः प्रपाठकः ॥३॥ |
| | अपरार्धः ॥२॥ |
| ५ | ३.९ |
| ६,७ | न स्तः |
| | द्वितीयः प्रपाठकः ॥२॥ |
| | अपरार्धः ॥२॥ |
| ८ | १.५ |
| ९,१० | न स्तः |
| | चतुर्थः प्रपाठकः ॥४॥ |
| | पूर्वार्धः ॥१॥ |
| ११.१ | ५.४ |
| २-५ | न सन्ति |
| | उत्तरार्चिकम् ॥२॥ |
| | सप्तमः प्रपाठकः ॥७॥ |
| | तृतीयार्धः ॥३॥ |
| ६,७ | ५.१,२ |
| | नवमः प्रपाठकः ॥९॥ |
| | प्रथमार्धः ॥१॥ |
| ८,९ | ६.१,२ |
| | सप्तमः प्रपाठकः ॥७॥ |
| | प्रथमार्धः ॥१॥ |
| १० | ४.१ |
| १२.१,२ | ३,२ |
| ३-५ | ५.१-३ |
| ६-८ | १२.१,३,२ |
| ९ | १३.१ |
| १० | नास्ति |
| | द्वितीयः प्रपाठकः ॥२॥ |
| | अपरार्धः ॥२॥ |

| जैमिनीये | कौथुमीये |
|---|---|
| ११ | ५.३ |
| १२ | नास्ति |
| | सप्तमः प्रपाठकः ॥७॥ |
| | प्रथमार्धः ॥१॥ |
| १३ | १६.३ |
| १४ | नास्ति |
| | द्वितीयार्धः ॥२॥ |
| १५ | १.१ |
| १३.१-८ | २-३.३ |
| ९-११ | ५.१-३ |
| १४.१,२ | ४.१,२ |
| ३-५ | ६.१-३ |
| ६,७ | ८.१,२ |
| | पूर्वार्चिकम् ॥१॥ |
| | प्रथमः प्रपाठकः ॥१॥ |
| | पूर्वार्धः ॥१॥ |
| ८ | ५.५ |
| ९ | नास्ति |
| | उत्तरार्चिकम् ॥२॥ |
| | सप्तमः प्रपाठकः ॥७॥ |
| | द्वितीयार्धः ॥२॥ |
| १५.१-३ | ९.१,३,२ |
| ४-१० | ११.१-१३.१ |
| १६.१,२ | १३.२,३ |
| ३-१० | न सन्ति |
| | अष्टमः प्रपाठकः ॥८॥ |
| | द्वितीयार्धः ॥२॥ |
| १७.१ | ८.१ |
| २ | नास्ति |
| ३ | ८.२ |
| | पञ्चमः प्रपाठकः ॥५॥ |
| | अपरार्धः ॥२॥ |
| ४-६ | २१.१-३ |

| जैमिनीये | कौथुमीये |
|---|---|
| | पूर्वार्चिकम् ॥१॥ |
| | चतुर्थः प्रपाठकः ॥४॥ |
| | अपरार्धः ॥२॥ |
| ७ | ५.७ |
| | उत्तरार्चिकम् ॥२॥ |
| | सप्तमः प्रपाठकः ॥७॥ |
| | द्वितीयार्धः ॥२॥ |
| ८,९ | न स्तः |
| | अष्टमः प्रपाठकः ॥८॥ |
| | प्रथमार्धः ॥१॥ |
| १० | १४.१,२ |
| ११ | ३ |
| १८.१-८ | न सन्ति |
| | सप्तमः प्रपाठकः ॥७॥ |
| | प्रथमार्धः ॥१॥ |
| ९,१० | २.१,२ |
| | सप्तमः प्रपाठकः ॥७॥ |
| | तृतीयार्धः ॥३॥ |
| १९.१,२ | १९.१,२ |
| ३,४ | न स्तः |
| | पूर्वार्चिकम् ॥१॥ |
| | प्रथमः प्रपाठकः ॥१॥ |
| | पूर्वार्धः ॥१॥ |
| ५ | २.२ |
| ६-१० | न सन्ति |
| | उत्तरार्चिकम् ॥२॥ |
| | सप्तमः प्रपाठकः ॥७॥ |
| | तृतीयार्धः ॥३॥ |
| २०.१-३ | १७.१-३ |
| ४,५ | न स्तः |
| ६,७ | १८.१,२ |
| ८-१० | २१.१,३,२ |
| | प्रथमार्धः ॥१॥ |
| २१.१-५ | १०.१-११.३ |

| जैमिनीये | कौथुमीये |
|---|---|
| ६-१० | न सन्ति |
| २२.१,२ | न स्तः |
| | पञ्चमः प्रपाठकः ॥५॥ |
| | अपरार्धः ॥२॥ |
| ३,४ | ११.२,३ |
| | पूर्वार्चिकम् ॥१॥ |
| | द्वितीयः प्रपाठकः ॥२॥ |
| | पूर्वार्धः ॥१॥ |
| ५ | ५.१० |
| ६,७ | न स्तः |
| | उत्तरार्चिकम् ॥२॥ |
| | सप्तमः प्रपाठकः ॥७॥ |
| | तृतीयार्धः ॥३॥ |
| ८-१० | २.१-३ |
| | अष्टमः प्रपाठकः ॥८॥ |
| | द्वितीयार्धः ॥२॥ |
| २३.१ | १७.१ |
| | पूर्वार्चिकम् ॥१॥ |
| | तृतीयः प्रपाठकः ॥३॥ |
| | अपरार्धः ॥२॥ |
| २ | २.५ |
| ३ | नास्ति |
| | उत्तरार्चिकम् ॥२॥ |
| | सप्तमः प्रपाठकः ॥७॥ |
| | तृतीयार्धः ॥३॥ |
| ४,५ | ८.१,२ |
| | अष्टमः प्रपाठकः ॥८॥ |
| | प्रथमार्धः ॥१॥ |
| ६-८ | ४.२,१,३ |
| ९,१० | ५.१,२ |
| २४.१-७ | ३-७.३ |
| ८-१० | न सन्ति |
| २५.१ | नास्ति |

| जैमिनीये | कौथुमीये |
|---|---|
| | सप्तमः प्रपाठकः ॥७॥ |
| | प्रथमार्धः ॥१॥ |
| २ | ९.१ |
| ३ | नास्ति |
| | द्वितीयार्धः ॥२॥ |
| ४,५ | ७.१,२ |
| | षष्ठः प्रपाठकः ॥६॥ |
| | द्वितीयार्धः ॥२॥ |
| २६.१-३ | ३.१-३ |
| | अष्टमः प्रपाठकः ॥८॥ |
| | द्वितीयार्धः ॥२॥ |
| ४-७ | ६.१-७.२ |
| | षष्ठः प्रपाठकः ॥६॥ |
| | तृतीयार्धः ॥३॥ |
| ८-१० | १५.१-३ |
| | अष्टमः प्रपाठकः ॥८॥ |
| | प्रथमार्धः ॥१॥ |
| २७.१-३ | १०.१-३ |
| | प्रथमः प्रपाठकः ॥१॥ |
| | अपरार्धः ॥२॥ |
| ४-६ | २१.१-३ |
| | अष्टमः प्रपाठकः ॥८॥ |
| | द्वितीयार्धः ॥२॥ |
| ७,८ | ९.१,२ |
| ९,१० | न स्तः |
| २८.१ | नास्ति |
| | पूर्वार्चिकम् ॥१॥ |
| | प्रथमः प्रपाठकः ॥१॥ |
| | अपरार्धः ॥२॥ |
| २ | ४.६ |
| ३,४ | न स्तः |

| जैमिनीये | कौथुमीये |
|---|---|
| | उत्तरार्चिकम् ॥२॥ |
| | पञ्चमः प्रपाठकः ॥५॥ |
| | पूर्वार्धः ॥१॥ |
| ५-७ | ८.१-३ |
| ८,९ | न स्तः |
| | पूर्वार्चिकम् ॥१॥ |
| | प्रथमः प्रपाठकः ॥१॥ |
| | पूर्वार्धः ॥१॥ |
| १० | ३.१३ |
| २९.१,२ | न स्तः |
| | अष्टमः प्रपाठकः ॥८॥ |
| | द्वितीयार्धः ॥२॥ |
| ३-४ | ११.१,२ |
| | पूर्वार्चिकम् ॥१॥ |
| | प्रथमः प्रपाठकः ॥१॥ |
| | अपरार्धः ॥२॥ |
| ५ | १.७ |
| ६ | नास्ति |
| | उत्तरार्चिकम् ॥२॥ |
| | नवमः प्रपाठकः ॥९॥ |
| | प्रथमार्धः ॥१॥ |
| ७-९ | ११.१-३ |
| | षष्ठः प्रपाठकः ॥६॥ |
| | तृतीयार्धः ॥३॥ |
| १० | १.२ |
| ३०.१,२ | १.३,४ |
| | नवमः प्रपाठकः ॥९॥ |
| | द्वितीयार्धः ॥२॥ |
| ३-५ | ११.१,३,२ |
| | षष्ठः प्रपाठकः ॥६॥ |
| | तृतीयार्धः ॥३॥ |
| ६,७ | ६.१-२ |

अस्याः संहिताया एक एव हस्तलेख अस्माकं सकाश आसीत् । समानेऽपि मन्त्रे तत्र पाठ-नानात्वम् । यथा—

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १.१.७ | इ्त्थतरा | ३,६.१ | इ्त्थतरा | १.४३.१ | महं | ३.९.१० | महान् |
| १.२.५ | विविड्ढि | ४.९.४ | विड्ढि | १.४३.४ | त्रिष्णवे | ४.९.१० | त्रिष्णत्रि |
| १.३.१३ | अभिष्टये | ४.२८.१० | अभिष्टय | १.४५.८ | अधा | ३.६.६ | अथा |
| | शं नो | | आपो | १.५०.२ | इवा | ३.१२.१ | इव |
| १.४.१ | शंसिषम् | ३.५.१२ | शंसिषः | १.५१.९ | पीती, नवा | ३.४५.२ | वीती,नव |
| १.४.६ | अमर्त्यम् | ४.११.८ | अमर्त्यं | १.५२.३ | नया | ३.४७.१ | नय |
| १.५.७ | देव | ४.२१.५ | देवं | १.५५.११ | धन्वा | ३.३४.१२ | धन्व |
| १.६.७ | यासि | ४.२९.५ | वेषि | १.५६.७ | विभाससम् | ३.४८.४ | विभासहम् |
| १.१२.५ | सुभगा | ३.५६.१६ | सुभग | १.५७.५ | कृत्वियो | ३४७.४ | कृत्व्यो |
| १.१६.९ | नः | ३.३३.९ | णः | १.५८.७ | ऊर्मिणाव्यं | ३.२४.६ | ऊर्मिणा अव्यं |
| १.१७.२ | गायता | ३.७.४ | गायत | १.५८.११ | अभ्यर्ष } | ३.५.५ | अभ्यू अषनूं |
| १.१७.५ | पिब | ३.८.१ | पिबा | | | ३.१२.७ | |
| १.१८.३ | राभं | ३.८.४ | प्र.भं | १.५९.२ | युव | ३.३०.४ | युवा |
| १.२१.१ | उ त्वा | ४.७.९ | उत् त्वा | १.५९.६ | घोषयत् | ३.२४.४ | घोषयन् |
| १.२६.९ | इवा | ३.५८.९ | इव | १.५९.७ | इवा | ३.४०.१ | इव |
| १.२७.९ | सुतावन्त | ३.१९.९ | सुतावन्तः | १.५९.८ | रुजा | ३.३०.४ | रुज |
| १.२८.१ | ऽविता | ४.२०.३ | ऽवृतः | २.५.४ | परि स्रव | ३.३.२ | परि स्रवा |
| १.२८.७ | ऋचीष्म | ४.१८.९ | ऋचीषभा | २.५.५ | त्रिश्वान्यू | ३.३.३ | विश्वान्नू |
| १.२९.६ | दधर्षते | ४.२७.७ | दधर्षति | २.५.९ | नो | ३.१४.९ | णो |
| १.३०.८ | मघवा | ३.४७.९ | मघवान् | २.५.१० | मिमेति | ३.२०.११ | मिमाति |
| १.३२.२ | अह्वेऽवसे | ३.१०.५ | अंहुयवसं | २.६.३ | पुनः | ३.५९.१८ | पुरः |
| १.३६.४ | उभयाहस्तियू | ३.४०.१८ | उभया- | ३.१.१० | धीतये | ३.५३.७ | धीतयः |
| | आ भरा | | हस्त्यू आ भर | ३.१८.३ | मृडया | ४.१२.११ | मृडय |

यावद् इतर-हस्तलेखा नोपलभ्यन्ते यावच् च जैमिनीयानां गानग्रन्था ब्राह्मणादिकं च नोपस्थितं तावन् न निश्चेतुं शक्यते कः पाठो जैमिनीयानां साधीयान् इति ॥

सामवेदीया

# जैमिनीयसंहिता

| | |
|---|---|
| | १.१ |
| ऋ ६.१६.१० | अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये । |
| | नि होता सत्सि बर्हिषि ॥ १ ॥ |
| ६.१६.१ | त्वम् अग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः । |
| | देवेभिर् मानुषे जने ॥ २ ॥ |
| १.१२.१ | अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम् । |
| | अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ॥ ३ ॥ |
| ६.१६.३४ | अग्निर् वृत्राणि जङ्घनद् द्रविणस्युर् विपन्यया । |
| | समिद्धः शुक्र आहुतः ॥ ४ ॥ |
| ८.८४.१ | प्रेष्ठं वो अतिथिं स्तुषे मित्रम् इव प्रियम् । |
| अग्निं... | अग्ने रथं न वेद्यम् ॥ ५ ॥ |
| ८.७१.१ | त्वं नो अग्ने महोभिः पाहि विश्वस्या अरातेः । |
| | उत द्विषो मर्त्यस्य ॥ ६ ॥ |
| ६.१६.१६ | एह्य् ऊ षु ब्रवाणि ते अग्न इत्थेतरा गिरः । |
| | एभिर् वर्धास इन्दुभिः ॥ ७ ॥ |
| ८.११.७ | आ ते वत्सो मनो यमत् परमाच् चित् सधस्थात् । |
| * त्वांकामया * | अग्ने त्वां कामये गिरा ॥ ८ ॥ |
| ६.१६.१३ | त्वाम् अग्ने पुष्कराद् अध्य् अथर्वा निर् अमन्थत । |
| | मूर्ध्नो विश्वस्य वाघतः ॥ ९ ॥ |
| ऋग्वेदे नास्ति | अग्ने विवस्वद् आ भरास्मभ्यम् ऊतये महे । |
| | देवो ह्य् असि नो दृशे ॥ १० ॥ ॥१॥ |
| | १.२ |
| ऋ ८.७५.१० | नमस् ते अग्न ओजसे गृणन्ति देव कृष्टयः । |
| ...अर्दय (एवं कौ) | अमैर् अमित्रम् अर्दया ॥ १ ॥ |
| ४.८.१ | दूतं वो विश्ववेदसं हव्यवाहम् अमर्त्यम् । |
| | यजिष्ठम् ऋञ्जसे गिरा ॥ २ ॥ |
| ८.१०२.१३ | उप त्वा जामयो गिरो देदिशतीर् हविष्कृतः । |
| | वायोर् अनीके अस्थिरन् ॥ ३ ॥ |
| १.१.७ | उप त्वाग्ने दिवेदिवे दोषावस्तर् धिया वयम् । |
| | नमो भरन्त एमसि ॥ ४ ॥ |

| | |
|---|---|
| १.२७.१० | जराबोध तद् विविड्ढि विशेविशे यज्ञियाय । |
| | स्तोमं रुद्राय दृशीकम् ॥ ५ ॥ |
| १.१९.१ | प्रति त्यं चारुम् अध्वरं गोपीथाय प्र हूयसे । |
| | मरुद्भिर् अग्न आ गहि ॥ ६ ॥ |
| १.२७.१ | अश्वं न त्वा वारवन्तं वन्दध्या अग्निं नमोभिः । |
| | सम्राजन्तम् अध्वराणाम् ॥ ७ ॥ |
| ८.१०२.४ | और्वभृगुवच् छुचिम् अप्नवानवद् आ हुवे । |
| | अग्निं समुद्रवाससस् ॥ ८ ॥ |
| ८.१०२.२२ | अग्निम् इन्धानो मनसा धियं सचेत मर्त्यः । |
| * ईंधे * | अग्निम् इन्धे विवस्वभिः ॥ ९ ॥ |
| ८.६.३० | आद् इत् प्रत्नस्य रेतसो ज्योतिः पश्यन्ति वासरम् । |
| ...दिवा | परो यद् इध्यते दिवि ॥ १० ॥ ॥२॥ |

१.३

| | |
|---|---|
| ऋ ८.१०२.७ | अग्निं वो वृधन्तम् अध्वराणां पुरूतमम् । |
| | अच्छा नप्त्रे सहस्वते ॥ १ ॥ |
| ६.१६.२८ [2]यासद्... | अग्निस् तिग्मेन शोचिषा यंसद् विश्वं न्य् अत्रिणम् । |
| ...वनते * | अग्निर् नो वंसते रयिम् ॥ २ ॥ |
| ४.९.१ [2]य ईम् आ * * | अग्ने मृळ महं अस्य् अय आ देवयुं जनम् । |
| | इयेथ बर्हिर् आसदम् ॥ ३ ॥ |
| ७.१५.१३ ...ष्म * रीषतः | अग्ने रक्षा णो अंहसः प्रति स्म देव रिषतः । |
| | तपिष्ठैर् अजरो दह ॥ ४ ॥ |
| ६.१६.४३ * युक्ष्वा... | अग्ने युङ्क्ष्वा हि ये तवाश्वासो देव साधवः । |
| * * मन्यवे | अरं वहन्त्य् आशवः ॥ ५ ॥ |
| ७.१५.७ [2]* देव धीमहि । | नि त्वा नक्ष्य विश्पते द्युमन्तं धीमहे वयम् । |
| | सुवीरम् अग्न आहुत ॥ ६ ॥ |
| ८.४४.१६ | अग्निर् मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् । |
| | अपां रेतांसि जिन्वति ॥ ७ ॥ |
| १.२७.४ | इमम् ऊ षु त्वम् अस्माकं सनिं गायत्रं नव्यांसम् । |
| | अग्ने देवेषु प्र वोचः ॥ ८ ॥ |
| ८.७४.११ यं...चनिष्ठद् * * | तं त्वा गोपवनो गिरा जनिष्ठद् अग्ने अङ्गिरः । |
| | स पावक श्रुधी हवम् ॥ ९ ॥ |
| ४.१५.३ | परि वाजपतिः कविर् अग्निर् हव्यान्य् अक्रमीत् । |
| | दधद् रत्नानि दाशुषे ॥ १० ॥ |
| १.५०.१ | उद् उ त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः । |
| | दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥ ११ ॥ |
| १.१२.७ | कविम् अग्निम् उप स्तुहि सत्यधर्माणम् अध्वरे । |

देवम् अमीवचातनम् ॥ १२ ॥

१०.९.४ [२]आपो * *

शं नो देवीर् अभिष्टये शं नो भवन्तु पीतये ।
शंयोर् अभि स्रवन्तु नः ॥ १३ ॥

८.८४.७ * * परीणसो * * दंपते

कस्य नूनं परीणसि धियो जिन्वसि सत्पते ।
गोषाता यस्य ते गिरः ॥ १४ ॥ ॥३॥

१.४

ऋ ६.४८.१

यज्ञायज्ञा वो अग्नये गिरागिरा च दक्षसे ।
प्रप्र वयम् अमृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न शंसिषम् ॥ १ ॥

८.६०.९

पाहि नो अग्न एकया पाह्य् उत द्वितीयया ।
पाहि गीर्भिस् तिसृभिर् ऊर्जां पते पाहि चतसृभिर् वसो ॥ २ ॥

६.४८.७ [दीदिहि
[४]रेवन्नः शुक्र दीदिहि द्युमत् पावक

बृहद्भिर् अग्ने अर्चिभिः शुक्रेण देव शोचिषा ।
भरद्वाजे समिधानो यविष्ठ्य रेवत् पावक दीदिहि ॥ ३ ॥

७.१६.७ त्वे ( एवं कौ )...

त्वय्य् अग्ने स्वाहुत प्रियासः सन्तु सूरयः ।
यन्तारो ये मघवानो जनानाम् ऊर्वं दयन्त गोनाम् ॥ ४ ॥

८.६०.१९ ...तेपानो * *
* गृहपतिर् ...

अग्ने जरितर् विश्पतिस् तपानो देव रक्षसः ।
अप्रोषिवान् गृहपते महं असि दिवस् पायुर् दुरोणयुः ॥ ५ ॥

१.४४.१ ...अमर्त्यं (एवं कौ)

अग्ने विवस्वद् उषसश् चित्रं राधो अमर्त्यम् ।
आ दाशुषे जातवेदो वहा त्वम् अद्या देवं उषर्बुधः ॥ ६ ॥

६.४८.९ ...चोदय (एवं कौ)

त्वं नश् चित्र ऊत्या वसो राधांसि चोदया ।
अस्य रायस् त्वम् अग्ने रथीर् असि विदा गाधं तुचे तु नः ॥ ७ ॥

८.६०.५ ...ऋतस् *

त्वम् इत् सप्रथा अस्य् अग्ने त्रातर् ऋतः कविः ।
त्वां विप्रासः समिधान दीदिव आ विवासन्ति वेधसः ॥ ८ ॥

८.६०.११
...स्वयशस्तरम्

आ नो अग्ने वयोवृधं रयिं पावक शंस्यम् ।
रास्वा च न उपमाते पुरुस्पृहं सुनीती सुयशस्तरम् ॥ ९ ॥

८.१०३.६
...यन्त्य्

यो विश्वा दयते वसु होता मन्द्रो जनानाम् ।
मधोर् न पात्रा प्रथमान्य् अस्मै प्र स्तोमा यन्त्व् अग्नये ॥ १० ॥ ॥४॥

१.५

ऋ ७.१६.१

एना वो अग्निं नमसोर्जो नपातम् आ हुवे ।
प्रियं चेतिष्ठम् अरतिं स्वध्वरं विश्वस्य दूतम् अमृतम् ॥ १ ॥

८.६०.१५ * * मात्रोः ...

शेषे वनेषु मातृषु सं त्वा मर्तास इन्धते ।

| | |
|---|---|
| * हव्या... | अतन्द्रो हव्यं वहसि हविष्कृत आद् इद् देवेषु |
| | राजसि ॥ २ ॥ |
| ८.१०३.१ | अदर्शि गातुवित्तमो यस्मिन् व्रतान्य् आदधुः । |
| ...नक्षन्त * | उपो षु जातम् आर्यस्य वर्धनम् अग्निं नक्षन्तु नो |
| | गिरः ॥ ३ ॥ |
| ८.२७.१ | अग्निर् उक्थे पुरोहितो ग्रावाणो बर्हिर् अध्वरे । |
| ...पतिं देवाँ (कौ पते देवा) * * | ऋचा यामि मरुतो ब्रह्मणस् पते देवं अवो वरेण्यम् ॥ ४ ॥ |
| ८.७१.१४ | अग्निम् ईडिष्वावसे गाथाभिः शीरशोचिषम् । |
| ...ऽग्निं * * | अग्निं राये पुरुमीढ श्रुतं नरो अग्निः सुदीतये छर्दिः ॥ ५ ॥ |
| १.४४.१३ | श्रुधि श्रुत्कर्ण वह्निभिर् देवैर् अग्ने सयावभिः । |
| * सीदन्तु...प्रातर्यावाणो अध्वरम् | आ सीदतु बर्हिषि मित्रो अर्यमा प्रातर्यावभिर् अध्वरे ॥ ६ ॥ |
| ८.१०३.२ [२]देवाँ अच्छा * * | प्र दैवोदासो अग्निर् देव इन्द्रो न मज्मना । |
| ...नाकस्य सानवि | अनु मातरं पृथिवीं वि वावृते तस्थौ नाकस्य शर्मणि ॥ ७ ॥ |
| ८.१.१८ | अध ज्मो अध वा दिवो बृहतो रोचनाद् अधि । |
| ...पृण (एवं कौ ) | अया वर्धस्व तन्वा गिरा ममा जाता सुक्रतो पृण ॥ ८ ॥ |
| ३.९.२ | कायमानो वना त्वं यन् मातॄर् अजगन्न् अपः । |
| ...इहाभवः | न तत् ते अग्ने प्रमृषे निवर्तनं यद् दूरे सन्न् इहाभुवः ॥ ९ ॥ |
| १.३६.१९ | नि त्वाम् अग्ने मनुर् दधे ज्योतिर् जनाय शश्वते । |
| | दीदेथ कण्व ऋतजात उक्षितो यं नमस्यन्ति |
| | कृष्टयः ॥ १० ॥ ॥ ५ ॥ |

१.६

| | |
|---|---|
| ऋ ७.१६.११ ...विवष्ट्य् * | देवो वो द्रविणोदाः पूर्णां विवष्ट्व् आसिचम् । |
| | उद् वा सिञ्चध्वम् उप वा पृणध्वम् आद् इद् वो देव |
| | ओहते ॥ १ ॥ |
| १.४०.३ | प्रैतु ब्रह्मणस् पतिः प्र देव्य् एतु सूनृता । |
| | अच्छा वीरं नर्यं पङ्क्तिराधसं देवा यज्ञं नयन्तु नः ॥ २ ॥ |
| १.३६.१३ | ऊर्ध्व ऊ षु ण ऊतये तिष्ठा देवो न सविता । |
| | ऊर्ध्वो वाजस्य सनिता यद् अञ्जिभिर् वाघद्भिर् |
| | विह्वयामहे ॥ ३ ॥ |
| ८.१०३.४ * यं * निनीषसि... | प्र यो राये निनीषति मर्तो यस् ते वसो दाशत् । |
| | स वीरं धत्ते अग्न उक्थशंसिनं त्मना सहस्र- |
| | पोषिणम् ॥ ४ ॥ |
| १.३६.१ | प्र वो यह्वं पुरूणां विशां देवयतीनाम् । |
| * * * ईमहे * सीमिदन्य | अग्निं सूक्तेभिर् वचोभिर् वृणीमहे यं सम् इद् अन्य |
| ईळते | इन्धते ॥ ५ ॥ |
| ३.१६.१ * * * महः * | अयम् अग्निः सुवीर्यस्येशे हि सौभगस्य । |

| | |
|---|---|
| | राय ईशे स्वपत्यस्य गोमत ईशे वृत्रहथानाम् ॥ ६ ॥ |
| ७.१६.५ | त्वम् अग्ने गृहपतिस् त्वं होता नो अध्वरे । |
| ...वेषि * * | त्वं पोता विश्ववार प्रचेता यक्षि यासि च वार्यम् ॥ ७ ॥ |
| ३.९.१ | सखायस् त्वा ववृमहे देवं मर्तास ऊतये । |
| * * * सुदीदितिं... | अपां नपातं सुभगं सुदंससं सुप्रतूर्तिम् अनेहसम् ॥ ८ ॥ ॥६॥ |
| | **१.७** |
| ऋग्वेदे नास्ति | आ जुहोता हविषा मर्जयध्वं नि होतारं गृहपतिं दधिध्वम् । |
| | इडस् पदे नमसा रातहव्यं सपर्यता यजतं पस्त्यानाम् ॥ १ ॥ |
| ऋ १०.११५.१ | चित्र इच् छिशोस् तरुणस्य वक्षथो न यो मातराव् |
| अप्येति * | अन्वेति धातवे । |
| * यदि जीजनद् * च नु ववक्ष * * | अनूधा यद् अजीजनद् अधा चिद् आ ववक्षत् सद्यो महि दूत्यं चरन् ॥ २ ॥ |
| १०.५६.१ | इदं त एकं पर ऊ त एकं तृतीयेन ज्योतिषा सं विशस्व । |
| संवेशने तन्वश्... | संवेशनस् तन्वे चारुर् एधि प्रियो देवानां परमे जनित्रे ॥ ३ ॥ |
| १.९४.१ | इमं स्तोमम् अर्हते जातवेदसे रथम् इव सं महेमा मनीषया । |
| कौ ...रिषाम | भद्रा हि नः प्रमतिर् अस्य संसद्य् अग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥ ४ ॥ |
| ऋ ६.७.१ | मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरम् ऋत आ जातम् अग्निम् । |
| ...आसन्ना * * | कविं सम्राजम् अतिथिं जनानाम् आसन्नः पात्रं जनयन्त देवाः ॥ ५ ॥ |
| ६.२४.६ [२]उक्थेभिरिन्द्रानयन्त यज्ञैः | वि त्वद् आपो न पर्वतस्य पृष्ठाद् उक्थेभिर् अग्ने जनयन्त देवाः । |
| * त्वाभिः सुष्टुतिभिर्वाजयन्त * * जग्मुर्गिर्वाहो * | तं त्वा गिरः सुष्टुतयो वाजयन्त्य् आजिं न गिर्ववाहो जिग्युर् अश्वाः ॥ ६ ॥ |
| ४.३.१ | आ वो राजानम् अध्वरस्य रुद्रं होतारं सत्ययजं रोदस्योः । |
| | अग्निं पुरा तनयित्नोर् अचित्ताद् धिरण्यरूपम् अवसे कृणुध्वम् ॥ ७ ॥ |
| ७.८.१ | इन्धे राजा समर्यो नमोभिर् यस्य प्रतीकम् आहुतं घृतेन । |
| ...सबाध आग्निर् (एवं कौ) अग्र * | नरो हव्येभिर् ईडते सबाधो अग्निर् अग्रम् उषसाम् अशोचि ॥ ८ ॥ |
| १०.८.१ | प्र केतुना बृहता यात्य् अग्निर् आ रोदसी वृषभो रोरवीति । |
| * * अन्ताँ उपमाँ... | दिवश् चिद् अन्ताद् उपमाम् उद् आनड् अपाम् उपस्थे |

| | |
|---|---|
| * ववर्ध (एवं कौ) | महिषो ववर्धा ॥ ९ ॥ |
| ७.१.१ ...हस्तच्युती जनयन्त | अग्निं नरो दीधितिभिर् अरण्योर् हस्तच्युतं जनयत प्रशस्तम् । |
| ...अथर्युम् | दूरेदृशं गृहपतिम् अथर्व्युम् ॥ १० ॥ ॥७॥ |
| | १.८ |
| ऋ ५.१.१ | अबोध्य् अग्निः समिधा जनानां प्रति धेनुम् इवायतीम् उषासम् । |
| ...सिस्रते * <br> अच्छ (एवं कौ) | यह्वा इव प्र वयाम् उज्जिहानाः प्र भानवः सस्नते नाकम् अच्छा ॥ १ ॥ |
| १०.४६.५ ...मूरा * * * <br> नयन्तो गर्भं वनां धियं धुर्हिरिश्मश्रुं [नार्वाणं धनर्चम् | प्र भूर्जयन्तं महां विपोधां मूरैर् अमूरं पुरां दर्माणम् । <br> नयन्तं गीर्भिर् वना धियं धा हरिश्मश्रुं न वर्मणा धनर्चिम् ॥ २ ॥ |
| ६.५८.१ | शुक्रं ते अन्यद् यजतं ते अन्यद् विषुरूपे अहनी द्यौर् इवासि । |
| * * * * स्वधावो... | विश्वा हि माया अवसि स्वधावन् भद्रा ते पूषन्न् इह रातिर् अस्तु ॥ ३ ॥ |
| ३.१.२३ | इळाम् अग्ने पुरुदंसं सनिं गोः शश्वत्तमं हवमानाय साध । <br> स्यान् नः सूनुस् तनयो विजावाग्ने सा ते सुमतिर् भूत्व् अस्मे ॥ ४ ॥ |
| १०.४६.१ ...नृषद्वा * * उपस्थे <br> दधिर् * * स ते वयांसि... | प्र होता जातो महान् नभोविन् नृषद्मा सीदद् अपां विवर्ते । <br> दधद् यो धायि सुते वयांसि यन्ता वसूनि विधते तनूपाः ॥ ५ ॥ |
| ७.६.१ * सम्राजो * प्रशस्तिं... <br> [4]वन्दे दारुं वन्दमानो विवक्मि | प्र सम्राजम् असुरस्य प्रशस्तं पुंसः कृष्टीनाम् अनुमाद्यस्य । <br> इन्द्रस्येव प्र तवसः कृतानि वन्दद्वारा वन्दमाना विवष्टु ॥ ६ ॥ |
| ३.२९.२ [2]गर्भ इव सुधितो गर्भिणीषु | अरण्योर् निहितो जातवेदा गर्भ इवेत् सुभृतो गर्भिणीभिः । <br> दिवेदिव ईड्यो जागृवद्भिर् हविष्मद्भिर् मनुष्येभिर् अग्निः ॥ ७ ॥ |
| १०.८७.१९ | सनाद् अग्ने मृणसि यातुधानान् न त्वा रक्षांसि पृतनासु जिग्युः । |
| * * * क्रव्यादो... | अनु दह सहमूरान् कयादो मा ते हेत्या मुक्षत दैव्यायाः ॥ ८ ॥ ॥ ८ ॥ |
| | १.९ |
| ऋ ५.१०.१ * * * भर (एवं कौ)... <br> * * राया परीणसा... | अग्न ओजिष्ठम् आ भरा द्युम्नम् अस्मभ्यम् अध्रिगो । <br> प्र नो राये पनीयसे रत्सि वाजाय पन्थाम् ॥ १ ॥ |
| ऋग्वेदे नास्ति | यदि वीरो अनुष्याद् अग्निम् इन्धीत मर्त्यः । |

| | |
|---|---|
| | आजुह्वद् धव्यम् आनुषक् शर्म भक्षीत दैव्यम् ॥ २ ॥ |
| ऋ ६.२.६ ...दिवि षच्छुक्र * | त्वेषस् ते धूम ऋण्वति दिवि सं शुक्र आततः । |
| | सूरो न हि द्युता त्वं कृपा पावक रोचसे ॥ ३ ॥ |
| ६.२.१ | त्वं हि क्षैतवद् यशो अग्ने मित्रो न पत्यसे । |
| | त्वं विचर्षणे श्रवो वसो पुष्टिं न पुष्यसि ॥ ४ ॥ |
| ५.१८.१ [रण्यति | प्रातर् अग्निः पुरुप्रियो विश स्तवेतातिथिः । |
| विश्वानि यो अमर्त्यो हव्या मर्तेषु | विश्वे यस्मिन्न् अमर्त्ये हव्यं मर्तास इन्धते ॥ ५ ॥ |
| ५.२५.७ | यद् वाहिष्ठं तद् अग्नये बृहद् अर्च विभावसो । |
| | महिषीव त्वद् रयिस् त्वद् वाजा उद् ईरते ॥ ६ ॥ |
| ८.७४.१ | विशोविशो वो अतिथिं वाजयन्तः पुरुप्रियम् । |
| | अग्निं वो दुर्यं वचः स्तुषे शूषस्य मन्मभिः ॥ ७ ॥ |
| ५.१६.१ | बृहद् वयो हि भानवे अर्चा देवायाग्नये । |
| * * * प्रशस्तिभिर्... | यं मित्रं न प्रशस्तये मर्तासो दधिरे पुरः ॥ ८ ॥ |
| ८.७४.४ आगन्म... | अगन्म वृत्रहन्तमं ज्येष्ठम् अग्निम् आनवम् । |
| यस्य श्रुतर्वा बृहन्नार्क्षो अनीक एधते | यः स्म श्रुतर्वन्न् आर्क्ष्ये बृहद् अनीक इध्यते ॥ ९ ॥ |
| ऋग्वेदे नास्ति | जातः परेण धर्मणा यत् सवृद्भिः सहाभुवः । |
| | पिता यत् कश्यपस्याग्निः श्रद्धा माता मनुः कविः ॥ १० ॥ |
| | १.१० |
| [ह्वामहे | |
| ऋ १०.१४१.३ * * अवसे ऽग्निं गीर्भि- | सोमं राजानं वरुणम् अग्निम् अन्वारभामहे । |
| आदित्यान्... | आदित्यं विष्णुं सूर्यं ब्रह्माणं च बृहस्पतिम् ॥ १ ॥ |
| | इत एत उद् आरुहन् दिवः पृष्ठान्य् आरुहन् । |
| ऋग्वेदे न स्तः } | प्र भूर्जयो यथा पथो द्याम् अङ्गिरसो ययुः ॥ २ ॥ |
| | राये अग्ने महे त्वा दानाय सम् इधीमहि । |
| | ईडिष्वा हि महे वृषं द्यावा होत्राय पृथिवी ॥ ३ ॥ |
| २.५.३ ...ब्रह्माणि वेरु तत् | दधन्वे वा यद् ईम् अनु वोचद् ब्रह्मेति वेर् उतत् । |
| ...इवाभवत् | परि विश्वानि काव्या नेमिश् चक्रम् इवाभुवत् ॥ ४ ॥ |
| १.४५.१ | त्वम् अग्ने वसुंर् इह रुद्रं आदित्यं उत । |
| [श्रुतस्परि | यजा स्वध्वरं जनं मनुजातं घृतप्रुषम् ॥ ५ ॥ |
| १०.८७.२५ ...शृणीहि * । कौ ...वि- | प्रत्य् अग्ने हरसा हरः शृणाहि विश्वतः प्रति । |
| * * * वि रुज * | यातुधानस्य रक्षसो बलं न्य् उब्ज वीर्यम् ॥ ६ ॥ |
| | १.११ |
| [दाशिवाँ) वोचे... | |
| [१]ऋ १.१५०.१ * * दाश्वान् (कौ | पुरु त्वा दाशिवं वोचेद् अरिर् अग्ने तव स्विद् आ । |
| ...महस्य (एवं कौ) | तोदस्येव शरण आ महस्या ॥ १ ॥ |
| ३.१०.५ | प्र होत्रे पूर्व्यं वचो ऽग्नये भरता बृहत् । |
| | विपां ज्योतींषि बिभ्रते न वेधसे ॥ २ ॥ |

| | |
|---|---|
| १.७९.४ | अग्ने वाजस्य गोमत ईशानः सहसो यहो । |
| * धेहि... | अस्मे देहि जातवेदो महि श्रवः ॥ ३ ॥ |
| ३.१०.७ | अग्ने यजिष्ठो अध्वरे देवान् देवयते यज । |
| [शासत * | होता मन्द्रो वि राजस्यति स्रिधः ॥ ४ ॥ |
| ९.१०२.४ जज्ञानं * मातरो वेधाम- | जज्ञानः सप्त मातृभिर् मेधाम् आशासत श्रिये । |
| ...चिकेत यत् | अयं ध्रुवो रयीणां चिकेतद् आ ॥ ५ ॥ |
| ८.१८.७ | उत स्या नो दिवा मतिर् अदितिर् ऊत्या गमत् । |
| * शंताति * करद् (एवं कौ)... | सा शंताता मयस् करद् अप स्रिधः ॥ ६ ॥ |
| ८.२३.१ ईळिष्वा (एवं कौ)... | ईळिष्व हि प्रतीव्यं यजस्व जातवेदसम् । |
| | चरिष्णुधूमम् अगृभीतशोचिषम् ॥ ७ ॥ |
| ८.२३.१५ ...चन (एवं कौ)... | न तस्य मायया चना रिपुर् ईशीत मर्त्यः । |
| ...हव्यदातिभिः | यो अग्नये ददाश हव्यदातये ॥ ८ ॥ |
| ६.५१.१३ | अप त्यं वृजिनं रिपुं स्तेनम् अग्ने दुराध्यम् । |
| | दविष्ठम् अस्य सत्पते कृधी सुगम् ॥ ९ ॥ |
| ८.२३.१४ | श्रुष्ट्य् अग्ने नवस्य मे स्तोमस्य वीर विश्पते । |
| * * तपुषा... | नि मायिनस् तपसा रक्षसो दह ॥ १० ॥ ॥११॥ |

१.१२

| | |
|---|---|
| ऋ ८.१०३.८ | प्र मंहिष्ठाय गायत ऋताव्ने बृहते शुक्रशोचिषे । |
| | उपस्तुतासो अग्नये ॥ १ ॥ |
| ८.१९.३० .. तिरते वाजभर्मभिः | प्र सो अग्ने तवोतिभिः सुवीराभिस् तरति वाजकर्मभिः । |
| ...आवरः | यस्य त्वं सख्यम् आविथ ॥ २ ॥ |
| ८.१९.१ | तं गूर्धया स्वर्णरं देवासो देवम् अरतिं दधन्विरे । |
| ...ओहिरे | देवत्रा हव्यम् ऊहिषे ॥ ३ ॥ |
| ८.१०३.१२ * * हृणीतामतिथिर्... | मा नो हृणीथा अतिथिं वसुर् अग्निः पुरुप्रशस्त एषः । |
| | यः सुहोता स्वध्वरः ॥ ४ ॥ |
| ८.१९.१९ ...सुभग (एवं कौ) * * | भद्रो नो अग्निर् आहुतो भद्रा रातिः सुभगा भद्रो अध्वरः । |
| | भद्रा उत प्रशस्तयः ॥ ५ ॥ |
| ८.१९.३ | यजिष्ठं त्वा ववृमहे देवं देवत्रा होतारम् अमर्त्यम् । |
| | अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ॥ ६ ॥ |
| ८.१९.१५ ...सासहत् (कौ सासाहा) [* * * | तद् अग्ने द्युम्नम् आ भर यत् सासह सदने कं चिद् अत्रिणम् । |
| ...दूढ्यः | मन्युं जनस्य दूढ्यम् ॥ ७ ॥ |
| ८.२३.१३ ...विशि | यद् वा उ विश्पतिः शितः सुप्रीतो मनुषो विशे । |
| | विश्वेद् अग्निः प्रति रक्षांसि सेधति ॥ ८ ॥ |
| ऋग्वेदे नास्ति। तै १.५.१०.२ का ७.१४ | अयम् अग्निः श्रेष्ठतमो अयं वां मधुमत्तमः । |
| [(उभे संहिते नाना) | अयं सहस्रसातमो अस्मिन्न् अस्तु सुवीर्यम् ॥ ९ ॥ |

| | |
|---|---|
| ऋग्वेदे नास्ति । मै ४.१४.१४ | आदित्यः शुक्र उद् अगात् पुरस्ताज् ज्योतिः कृण्वन् वि तमो बाधमानः । |
| मै ... रोचमाना आगात् | आभासमानः प्रदिशो नु सर्वा भद्रस्य कर्ता रुचयन् न आगात् ॥ १० ॥ ॥१२॥ |

इत्याग्नेयं पर्व समाप्तम् ॥

## १.१३

| | |
|---|---|
| ऋ ६.४५.२२ | तद् वो गाय सुते सचा पुरुहूताय सत्वने । शं यद् गवे न शाकिने ॥ १ ॥ |
| ८.९२.१६ [वदावटे)... | यस् ते नूनं शतक्रतव् इन्द्र द्युम्नितमो मदः । तेन नूनं मदे मदेः ॥ २ ॥ |
| ८.७२.१२ * उपावतावतं (कौ उप | गाव उपा वदावटे मही यज्ञस्य रप्सुदा । उभा कर्णा हिरण्यया ॥ ३ ॥ |
| ८.९२.२५ * * गायति श्रुतकक्षो [अरं * | अरम् अश्वाय गायत श्रुतकक्षारं गवे । अरम् इन्द्रस्य धाम्ने ॥ ४ ॥ |
| ८.९३.७ | तम् इन्द्रं वाजयामसि महे वृत्राय हन्तवे । स वृषा वृषभो भुवत् ॥ ५ ॥ |
| १०.१५३.२ ...सहसो (एवं कौ) * * त्वं वृषन् * * | त्वम् इन्द्र बलाद् अधि सहसा जात ओजसः । त्वं सन् वृषन् वृषेद् असि ॥ ६ ॥ |
| ८.१४.५ | यज्ञ इन्द्रम् अवर्धयद् यद् भूमिं व्यवर्तयत् । चक्राण ओपशं दिवि ॥ ७ ॥ |
| ८.१४.१ ...गोषखा * | यद् इन्द्राहं यथा त्वम् ईशीय वस्व एक इत् । स्तोता मे गोसखा स्यात् ॥ ८ ॥ |
| ८.२.२५ | पन्यंपन्यम् इत् सोतार आ धावत मद्याय । सोमं वीराय शूराय ॥ ९ ॥ |
| ८.२.१ | इदं वसो सुतम् अन्धः पिबा सुपूर्णम् उदरम् । अनाभयिन् ररिमा ते ॥ १० ॥ ॥१॥ |

## १.१४

| | |
|---|---|
| ऋ ८.९३.१ | उद् घेद् अभि श्रुतामघं वृषभं नर्यापसम् । अस्तारम् एषि सूर्य ॥ १ ॥ |
| ८.९३.४ | यद् अद्य कच् च वृत्रहन्न् उदगा अभि सूर्य । |

| | |
|---|---|
| | सर्वं तद् इन्द्र ते वशे ॥ २ ॥ |
| ६.४५.१ | य आनयत् परावतः सुनीती तुर्वशं यदुम् । |
| | इन्द्रः स नो युवा सखा ॥ ३ ॥ |
| ८.९२.३१ ...यमन् | मा न इन्द्राभ्य् आदिशः सूरो अक्तुष्व् आ यमत । |
| | त्वा युजा वनेम तत् ॥ ४ ॥ |
| १.८.१ | एन्द्र सानसिं रयिं सजित्वानं सदासहम् । |
| कौ ...भरा | वर्षिष्ठम् ऊतये भर ॥ ५ ॥ |
| ऋ १.७.५ | इन्द्रं वयं महाधन इन्द्रम् अर्भे हवामहे । |
| | युजं वृत्रेषु वज्रिणम् ॥ ६ ॥ |
| ८.४५.२६ | अपिबत् कद्रुवः सुतम् इन्द्रः सहस्रबाह्वे । |
| अत्रादेदिष्ट * | तत्रादर्दिष्ट पौंस्यम् ॥ ७ ॥ |
| ७.३१.४ ...णोनुमो * | वयम् इन्द्र त्वायवो ऽभि प्र नोनुमो वृषन् । |
| | विद्धी त्व् अस्य नो वसो ॥ ८ ॥ |
| ८.४५.१ | आ घा ये अग्निम् इन्धते स्तृणन्ति बर्हिर् आनुषक् । |
| | येषाम् इन्द्रो युवा सखा ॥ ९ ॥ |
| ८.४५.४० | भिन्द्धि विश्वा अप द्विषः परि बाधो जही मृधः । |
| ...भर (एवं कौ) | वसु स्पार्हं तद् आ भरा ॥ १० ॥ ॥२॥ |
| | १.१५ |
| ऋ १.३७.३ | इहेव शृण्व एषां कशा हस्तेषु यद् वदान् । |
| * यामन् (कौ यामं)... | नि यामैश् चित्रम् ऋञ्जते ॥ १ ॥ |
| ८.४५.१६ | इम उ त्वा वि चक्षते सखाय इन्द्र सोमिनः । |
| | पुष्टावन्तो यथा पशुम् ॥ २ ॥ |
| ८.६.४ | सम् अस्य मन्यवे विशो विश्वा नमन्त कृष्टयः । |
| | समुद्रायेव सिन्धवः ॥ ३ ॥ |
| ८.८३.१ | देवानाम् इद् अवो महत् तद् आ वृणीमहे वयम् । |
| | वृष्णाम् अस्मभ्यम् ऊतये ॥ ४ ॥ |
| १.१८.१ सोमानं... | सोमानां स्वरणं कृणुहि ब्रह्मणस् पते । |
| | कक्षीवन्तं य औशिजः ॥ ५ ॥ |
| ८.९३.१८ बोधिन्मना... | बोधन्मना इद् अस्तु नो वृत्रहा भूर्यासुतिः । |
| | शृणोतु शक्र आशिषम् ॥ ६ ॥ |
| ५.८२.४ अद्या... | अद्य नो देव सवितः प्रजावत् सावीः सौभगम् । |
| ...सुव (एवं कौ) | परा दुष्वप्नियं सुवा ॥ ७ ॥ |
| ८.६४.७ क १ स्य... | कास्य वृषभो युवा तुविग्रीवो अनानतः । |
| | ब्रह्मा कस् तं सपर्यति ॥ ८ ॥ |
| ८.६.२८ ** संगथे... | उपह्वरे गिरीणां संगमे च नदीनाम् । |
| | धिया विप्रो अजायत ॥ ९ ॥ |

| | |
|---|---|
| ८.१६.१ | प्र सम्राजं चर्षणीनाम् इन्द्रं स्तोता नव्यं गीर्भिः ।<br>नरं नृषाहं मंहिष्ठम् ॥ १० ॥ ॥३॥ |
| | १.१६ |
| ऋ ८.९२.४ | अपाद् उ शिप्रिय् अन्धसः सुदक्षस्य प्रहोषिणः ।<br>इन्दोर् इन्द्रो यवाशिरः ॥ १ ॥ |
| ६.४५.२५ * * * शतक्रतो ऽभि (कौ पुरुवसो ऽभि) * णोनुवुर् (कौ नोनवुर्) * इन्द्र * * मातरः | इमा उ त्वा पुरोवसो अभि प्र नोनुवुर् गिरः ।<br>गावो वत्सं न धेनवः ॥ २ ॥ |
| १.८४.१५ | अत्राह गोर् अमन्वत नाम त्वष्टुर् अपीच्यम् ।<br>इत्था चन्द्रमसो गृहे ॥ ३ ॥ |
| ६.५७.४<br>* पूषाभवत् * | यद् इन्द्रो अनयद् रितो महीर् अपो वृषन्तमः ।<br>तत्र पूषाभुवत् सचा ॥ ४ ॥ |
| ८.९४.१ | गौर् धयति मरुतां श्रवस्युर् माता मघोनाम् ।<br>युक्ता वह्नी रथानाम् ॥ ५ ॥ |
| ८.९३.३१ | उप नो हरिभिः सुतं याहि मदानां पते ।<br>उप नो हरिभिः सुतम् ॥ ६ ॥ |
| ८.९३.२३ ... वृधासो * | इष्टा होत्रा असृक्षतेन्द्रं वृधन्तो अध्वरे ।<br>अच्छावभृथम् ओजसा ॥ ७ ॥ |
| ८.६.१० ... जग्रभ | अहम् इद् धि पितुः परि मेधाम् ऋतस्य जग्रह ।<br>अहं सूर्य इवाजनि ॥ ८ ॥ |
| १.३०.१३ | रेवतीर् नः सधमाद इन्द्रे सन्तु तुविवाजाः ।<br>क्षुमन्तो याभिर् मदेम ॥ ९ ॥ |
| ऋग्वेदे नास्ति<br>कौ ... हिता | सोमः पूषा च चेततुर् विश्वासां सुक्षितीनाम् ।<br>देवत्रा रथ्योर् हितः ॥ १० ॥ ॥४॥ |
| | १.१७ |
| ऋ ८.९२.१ | पान्तम् आ वो अन्धस इन्द्रम् अभि प्र गायत ।<br>विश्वासाहं शतक्रतुं मंहिष्ठं चर्षणीनाम् ॥ १ ॥ |
| ७.३१.१ ... गायत (एवं कौ) | प्र व इन्द्राय मादनं हर्यश्वाय गायता ।<br>सखायः सोमपाव्ने ॥ २ ॥ |
| ८.२.१६ | वयम् उ त्वा तदिदर्था इन्द्र त्वायन्तः सखायः ।<br>कण्वा उक्थेभिर् जरन्ते ॥ ३ ॥ |
| ८.९२.१९ | इन्द्राय मद्वने सुतं परि ष्टोभन्तु नो गिरः ।<br>अर्कम् अर्चन्तु कारवः ॥ ४ ॥ |
| ८.१७.११ | अयं त इन्द्र सोमो निपूतो अधि बर्हिषि ।<br>एहीम् अस्य द्रवा पिब ॥ ५ ॥ |
| १.४.१ | सुरूपकृत्नुम् ऊतये सुदुघाम् इव गोदुहे । |

| | |
|---|---|
| | जुहूमसि द्यविद्यवि ॥ ६ ॥ |
| ८.४५.२२ | अभि त्वा वृषभा सुते सुतं सृजामि पीतये । |
| | तृम्पा व्यू अश्नुही मदम् ॥ ७ ॥ |
| ८.८२.७ | य इन्द्र चमसेष्व् आ सोमश् चमूषु ते सुतः । |
| | पिबेद् अस्य त्वम् ईशिषे ॥ ८ ॥ |
| १.३०.७ | योगेयोगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे । |
| | सखाय इन्द्रम् ऊतये ॥ ९ ॥ |
| १.५.१ | आ त्व् एता नि षीदतेन्द्रम् अभि प्र गायत । |
| | सखायः स्तोमवाहसः ॥ १० ॥ ॥५॥ |
| | १.१८ |
| ऋ ३.५१.१० | इदं ह्य् अन्व् ओजसा सुतं राधानां पते । |
| पिबा (एवं कौ )... | पिब त्व् अस्य गिर्वणः ॥ १ ॥ |
| १.८.५ * * परश् * नु ... | महं इन्द्रः पुरश् च नो महित्वम् अस्तु वज्रिणे । |
| | द्यौर् न प्रथिना शवः ॥ २ ॥ |
| ८.८१.१ ...ग्राभं (एवं कौ ) * * | आ तू न इन्द्र क्षुमन्तं चित्रं राभं सं गृभाय । |
| | महाहस्ती दक्षिणेन ॥ ३ ॥ |
| ८.६९.४ * * * गिरेन्द्रम् (एवं कौ) | अभि प्र गोपतिं गिर इन्द्रम् अर्च यथा विदे । |
| [* * * | सूनुं सत्यस्य सत्पतिम् ॥ ४ ॥ |
| ४.३१.१ | कया नश् चित्र आ भुवद् ऊती सदावृधः सखा । |
| | कया शचिष्ठया वृता ॥ ५ ॥ |
| ८.९२.७ | त्यम् उ वः सत्रासाहं विश्वासु गीर्ष्व् आयतम् । |
| | आ च्यावयस्य् ऊतये ॥ ६ ॥ |
| १.१८.६ | सदसस् पतिम् अद्भुतं प्रियम् इन्द्रस्य काम्यम् । |
| | सनिं मेधाम् अयासिषम् ॥ ७ ॥ |
| ऋग्वेदे नास्ति । [१.२]शौ ७.५५.१ ये ते पन्था- | ये ते पन्था अथो दिवो येभिर् व्य् अश्वम् ऐरयः । |
| [नो ऽव दिवो येभिर्विश्वमैरयः | उत श्रोषन्तु नो भुवः ॥ ८ ॥ |
| ८.९३.२८ | भद्रंभद्रं न आ भरेषम् ऊर्जं शतक्रतो । |
| | यद् इन्द्र मृडयासि नः ॥ ९ ॥ |
| ८.९४.४ | अस्ति सोमो अयं सुतः पिबन्त्य् अस्य मरुतः । |
| | उत स्वराजो अश्विना ॥ १० ॥ ॥६॥ |
| | १.१९ |
| ऋ १०.१५३.१ | ईङ्खयन्तीर् अपस्युव इन्द्रं जातम् उपासते । |
| भेजानासः * [नकिरा * | वन्वानासः सुवीर्यम् ॥ १ ॥ |
| १०.१३४.७ नकिर् * मिनीमसि | न कि देवा इनीमसि न क्य् आ योपयामसि । |
| | मन्त्रश्रुत्यं चरामसि ॥ २ ॥ |

| | |
|---|---|
| ऋग्वेदे नास्ति | दोषो आगाद् बृहद् गाय द्युमद्गामाथर्वण । स्तुहि देवं सवितारम् ॥ ३ ॥ |
| १.४६.१ | एषो उषा अपूर्व्या व्यू उच्छति प्रिया दिवः । स्तुषे वाम् अश्विना बृहत् ॥ ४ ॥ |
| १.८४.१३ | इन्द्रो दधीचो अस्थभिर् वृत्राण्य् अप्रतिष्कुतः । जघान नवतीर् नव ॥ ५ ॥ |
| १.९.१ | इन्द्रेहि मत्स्य् अन्धसो विश्वेभिः सोमपर्वभिः । महं अभिष्टिर् ओजसा ॥ ६ ॥ |
| ४.३२.१ | आ तू न इन्द्र वृत्रहन्न् अस्माकम् अर्धम् आ गहि । महान् महीभिर् ऊतिभिः ॥ ७ ॥ |
| ८.६.५ | ओजस् तद् अस्य तित्विष उभे यत् समवर्तयत् । इन्द्रश् चर्मेव रोदसी ॥ ८ ॥ |
| १.३०.४ | अयम् उ ते सम् अतसि कपोत इव गर्भधिम् । वचस् तच् चिन् न ओहसे ॥ ९ ॥ |
| १०.१८६.१ * ण... | वात आ वातु भेषजं शंभु मयोभु नो हृदे । प्र न आयूंषि तारिषत् ॥ १० ॥ ॥७॥ |

१.२०

| | |
|---|---|
| ऋ १.४१.१ नू चित् * * * | यं रक्षन्ति प्रचेतसो वरुणो मित्रो अर्यमा । न किः स दभ्यते जनः ॥ १ ॥ |
| ८.४६.१० वरिवस्य महामह | गव्यो षु णो यथा पुराश्वयोत रथया । वरिवस्या महोनाम् ॥ २ ॥ |
| ८.६.१९ | इमास् त इन्द्र पृश्नयो घृतं दुहत आशिरम् । एनाम् ऋतस्य पिप्युषीः ॥ ३ ॥ |
| ८.९३.१७ ...आभवः | अया धिया च गव्यया पुरुणामन् पुरुष्टुत । यत् सोमेसोम आभुवः ॥ ४ ॥ |
| १.३.१० | पावका नः सरस्वती वाजेभिर् वाजिनीवती । यज्ञं वष्टु धियावसुः ॥ ५ ॥ |
| ऋग्वेदे नास्ति । कौ ...तर्पयात् कौ... भरात् | क इमं नाहुषीष्व् आ इन्द्रं सोमस्य तर्पयत् । स नो वसून्य् आ भरत् ॥ ६ ॥ |
| ऋ ८.१७.१ | आ याहि सुषुमा हि त इन्द्र सोमं पिबा इमम् । एदं बर्हिः सदो मम ॥ ७ ॥ |
| १०.१८५.१ * * अवो ऽस्तु... | महि त्रीणाम् अवर् अस्तु द्युक्षं मित्रस्यार्यम्णः । दुराधर्षं वरुणस्य ॥ ८ ॥ |
| ८.४६.१ * पुरूवसो (एवं कौ)... | त्वावतः पुरोवसो वयम् इन्द्र प्रणेतः । स्मसि स्थातर् हरीणाम् ॥ ९ ॥ ॥८॥ |

| | |
|---|---|
| | १.२१ |
| ऋ ८.६४.१ उत् * * स्तोमाः... | उ त्वा मन्दन्तु सोमाः कृणुष्व राधो अद्रिवः । |
| | अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥ १ ॥ |
| ३.४०.६ | गिर्वणः पाहि नः सुतं मधोर् धाराभिर् अज्यसे । |
| [उपानसः * | इन्द्र त्वादातम् इद् यशः ॥ २ ॥ |
| १०.१०५.४ सचायोरिन्द्रश्चर्कृष आँ | सदा व इन्द्रश् चर्कृषद् आ उपो नु स सपर्यन् । |
| नद्योर्विव्रतयोः * * (कौ न देवो वृतः) | न देव कृतः शूर इन्द्रः ॥ ३ ॥ |
| ८.९२.२२ | आ त्वा विशन्त्व् इन्दवः समुद्रम् इव सिन्धवः । |
| | न त्वाम् इन्द्राति रिच्यते ॥ ४ ॥ |
| १.७.१ | इन्द्रम् इद् गाथिनो बृहद् इन्द्रम् अर्केभिर् अर्किणः । |
| | इन्द्रं वाणीर् अनूषत ॥ ५ ॥ |
| ८.९३.३४ | इन्द्र इषे ददातु न ऋभुक्षणम् ऋभुं रयिम् । |
| | वाजी ददातु वाजिनम् ॥ ६ ॥ |
| २.४१.१० | इन्द्रो अङ्ग महद् भयम् अभी षद् अप चुच्यवत् । |
| | स हि स्थिरो विचर्षणिः ॥ ७ ॥ |
| ६.४५.२८ | इमा उ त्वा सुतेसुते नक्षन्ते गिर्वणो गिरः । |
| वत्सं गावो * * | गावो वत्सं न धेनवः ॥ ८ ॥ |
| ६.५७.१ | इन्द्रा नु पूषणा वयं सख्याय स्वस्तये । |
| [ज्यायाँ * * | हुवेम वाजसातये ॥ ९ ॥ |
| ४.३०.१ नकिर् * * उत्तरो * | न कि इन्द्र त्वद् उत्तरं न ज्यायो अस्ति वृत्रहन् । |
| नकिरेवा * * | न क्य् एवं यथा त्वम् ॥ १० ॥ ॥९॥ |
| | १.२२ |
| ऋ ८.४५.२८ | तरणिं वो जनानां त्रदं वाजस्य गोमतः । |
| | समानम् उ प्र शंसिषम् ॥ १ ॥ |
| १.९.४ | असृग्रम् इन्द्र ते गिरः प्रति त्वाम् उद् अहासत । |
| अजोषा... | सजोषा वृषभं पतिम् ॥ २ ॥ |
| ८.४६.४ | सुनीथो घा स मर्त्यो यं मरुतो यम् अर्यमा । |
| मित्रः (कौ मित्रास्)... | मित्रा पान्त्य् अद्रुहः ॥ ३ ॥ |
| ८.४५.४१ | यद् वीडाव् इन्द्र यत् स्थिरे यत् पर्शाने पराभृतम् । |
| | वसु स्पार्हं तद् आ भर ॥ ४ ॥ |
| ८.९३.१६ | श्रुतं वो वृत्रहन्तमं प्र शर्धं चर्षणीनाम् । |
| आ शुषे * * | आशिषे राधसे महे ॥ ५ ॥ |
| ऋग्वेदे नास्ति | अरं त इन्द्र श्रवसे गमेम शूर त्वावतः । |
| | अरं शक्र परेमणि ॥ ६ ॥ |
| ३.५२.१ | धानावन्तं करम्भिणम् अपूपवन्तम् उक्थिनम् । |
| | इन्द्र प्रातर् जुषस्व नः ॥ ७ ॥ |

| | |
|---|---|
| ८.१४.१३ | अपां फेनेन नमुचेः शिर इन्द्रोद् अवर्तयः ।<br>विश्वा यद् अजयः स्पृधः ॥ ८ ॥ |
| ऋग्वेदे नास्ति | इमे त इन्द्र सोमाः सुतासो ये च सोत्वाः ।<br>तेषां मत्स्व प्रभूवसो ॥ ९ ॥ |
| ८.९३.२५ * सोमा सुता इमे * * *<br>* इन्द्रमा वह (कौ इन्द्र मृडय) | तुभ्यं सुतासः सोमाः स्तीर्णं बर्हिर् विभावसो ।<br>स्तोतृभ्य इन्द्र मृडया ॥ १० ॥ ॥१०॥ |
| | १.२३ |
| ऋ १.३०.१ । कौ * * * कृविं ... | आ व इन्द्रं क्रिविं यथा वाजयन्तः शतक्रतुम् ।<br>मंहिष्ठं सिञ्च इन्दुभिः ॥ १ ॥ |
| ८.९२.१० * * * ण ... | अतश् चिद् इन्द्र न उपा याहि शतवाजया ।<br>इषा सहस्रवाजया ॥ २ ॥ |
| ८.४५.४ | आ बुन्दं वृत्रहा ददे जातः पृच्छद् वि मातरम् ।<br>क उग्राः के ह शृण्विरे ॥ ३ ॥ |
| ८.३२.१०<br>साधु ... | बृबदुक्थं हवामहे सृप्रकरस्नम् ऊतये ।<br>साधः कृण्वन्तम् अवसे ॥ ४ ॥ |
| १.९०.१ ... नयतु * | ऋजुनीती नो वरुणो मित्रो नयति विद्वान् ।<br>अर्यमा देवैः सजोषाः ॥ ५ ॥ |
| ८.५.१ * * * सती ...<br>* * विश्वथा° | दूराद् इहेव यत् सतो अरुणप्सुर् अशिश्वितत् ।<br>वि भानुं विश्वथातनत् ॥ ६ ॥ |
| ३.६२.१६ | आ नो मित्रावरुणा घृतैर् गव्यूतिम् उक्षतम् ।<br>मध्वा रजांसि सुक्रतू ॥ ७ ॥ |
| १.३७.१० ... अज्मेष्व् * | उद् उ त्ये सूनवो गिरः काष्ठा यज्ञेष्व् अत्नत ।<br>वाश्रा अभिज्ञु यातवे ॥ ८ ॥ |
| १.२२.१७<br>... पांसुरे | इदं विष्णुर् वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम् ।<br>समूढम् अस्य पांसुले ॥ ९ ॥ ॥११॥ |
| | १.२४ |
| ऋ ८.३२.२१ ... उपारणे<br>इमं रातं ... | अतीहि मन्युषाविणं सुषुवांसम् उपेरया ।<br>अस्य रातौ सुतं पिब ॥ १ ॥ |
| ऋग्वेदे नास्ति | कद् उ प्रचेतसे महे वचो देवाय शस्यते ।<br>तद् इद् ध्य् अस्य वर्धनम् ॥ २ ॥ |
| ८.२.१४ * * * अगोररिर् * * | उक्थं चन शस्यमानं नागो रयिर् आ चिकेत ।<br>न गायत्रं गीयमानम् ॥ ३ ॥ |
| ऋग्वेदे नास्ति | इन्द्र उक्थेभिर् मन्दिष्ठो वाजानां च वाजपतिः ।<br>हरिवान् सुतानां सखा ॥ ४ ॥ |
| १.१५.५<br>तवेद्धि * * | ब्राह्मणाद् इन्द्र राधसः पिबा सोमम् ऋतुंर् अनु ।<br>तवेदं सख्यम् अस्तृतम् ॥ ५ ॥ |

| | |
|---|---|
| ८.३२.७ ...ष्मसि * * * | वयं घा ते अपि स्मसि स्तोतार इन्द्र गिर्वणः । |
| | त्वं नो जिन्व सोमपाः ॥ ६ ॥ |
| ८.२.१९ ओ षु प्र याहि वाजेभिर्मा | आ याह्य् उप नः सुतं वाजेभिर् मा हृणीयथाः । |
| [हृणीथा अभ्यस्मान् | महाँ इव युवजानिः ॥ ७ ॥ |
| १०.१०५.१ * * * * आव * * * | कदा वसो स्तोत्रं हर्यत आ अव श्मशा रुधद् वाः । |
| * * वाताप्याय(एवं कौ) | दीर्घं सुतं वाताप्याया ॥ ८ ॥ |
| ऋग्वेदे नास्ति | एन्द्र पृक्षु कासु चिन् नृम्णं तनूषु धेहि नः । |
| | सत्राजिद् उग्र पौंस्यम् ॥ ९ ॥ |
| १.९.२ एमेनं सृजता सुते * * * | अयम् एनं सचतां सुतो मन्दिम् इन्द्राय मन्दिने । |
| | चक्रिं विश्वानि चक्रये ॥ १० ॥ ॥ १२ ॥ ॥१॥ |

१.२५

| | |
|---|---|
| ऋ ७.३२.२२ | अभि त्वा शूर नोनुमो अदुग्धा इव धेनवः । |
| | ईशानम् अस्य जगतः स्वर्दृशम् ईशानम् इन्द्र तस्थुषः ॥ १ ॥ |
| ६.४६.१ .. साता * * | त्वाम् इद् धि हवामहे सातौ वाजस्य कारवः । |
| | त्वां वृत्रेष्व् इन्द्र सत्पतिं नरस् त्वां काष्ठास्व् अर्वतः ॥ २ ॥ |
| ८.४९.१ | अभि प्र वः सुराधसम् इन्द्रम् अर्च यथा विदे । |
| ...पुरूवसुः (एवं कौ) * * | यो जरितृभ्यो मघवा पुरोवसुः सहस्रेणेव शिक्षति ॥ ३ ॥ |
| ८.८८.१ | तं वो दस्मम् ऋतीषहं वसोर् मन्दानम् अन्धसः । |
| | अभि वत्सं न स्वसरेषु धेनव इन्द्रं गीर्भिर् नवामहे ॥ ४ ॥ |
| ८.६६.१ | तरोभिर् वो विदद्वसुम् इन्द्रं सबाध ऊतये । |
| | बृहद् गायन्तः सुतसोमे अध्वरे हुवे भरं न कारिणम् ॥ ५ ॥ |
| ७.३२.२० | तरणिर् इत् सिषासति वाजं पुरन्ध्या युजा । |
| | आ व इन्द्रं पुरुहूतं नमे गिरा नेमिं तष्टेव सुद्रुवम् ॥ ६ ॥ |
| ८.३.१ | पिबा सुतस्य रसिनो मत्स्वा न इन्द्र गोमतः । |
| * * * °माद्यो ... | आपिर् नो बोधि सधमाद्ये वृधे अस्माँ अवन्तु ते धियः ॥ ७ ॥ |
| ८.६१.७ | त्वं ह्य् एहि चेरवे विदा भगं वसुत्तये । |
| ...इन्द्राश्वमिष्टये (एवं कौ) | उद् वावृषस्व मघवन् गविष्टय उद् इन्द्रो अश्वमिष्टये ॥ ८ ॥ |
| ७.५९.३ | न हि वश् चरमं चन वसिष्ठः परिमंसते । |
| ...पिबत * | अस्माकम् अद्य मरुतः सुते सचा विश्वे पिबन्तु कामिनः ॥९॥ |
| ८.१.१ | मा चिद् अन्यद् वि शंसत सखायो मा रिषण्यत । |
| | इन्द्रम् इत् स्तोता वृषणं सचा सुते मुहुर् उक्था च शंसत ॥ १० ॥ ॥१॥ |

१.२६

| | |
|---|---|
| ऋ ८.७०.३ | नकिष् टं कर्मणा नशद् यश् चकार सदावृधम् । |
| ...धृष्णवोजसम् | इन्द्रं न यज्ञैर् विश्वगूर्तम् ऋभ्वसम् अधृष्टं धृष्णुम् ओजसा ॥१॥ |

| | |
|---|---|
| ८.१.१२ | य ऋते चिद् अभिश्रिषः पुरा जत्रुभ्य आतृदः । |
| ...पुरूवसुर् (एवं कौ) इष्कर्ता * * | संधाता संधिं मघवा पुरोवसुर् निष्कर्ता विह्रुतं पुनः ॥ २ ॥ |
| ८.१.२४ | आ त्वा सहस्रम् आ शतं युक्ता रथे हिरण्यये । |
| | ब्रह्मयुजो हरय इन्द्र केशिनो वहन्तु सोमपीतये ॥ ३ ॥ |
| ३.४५.१ | आ मन्द्रैर् इन्द्र हरिभिर् याहि मयूररोमभिः । |
| * * * * * यमन् विं (कौ येमुर् [इन्]) ... | मा त्वा के चिन् नि येमुर् विं न पाशिनो अति धन्वेव तं इहि ॥ ४ ॥ |
| १.८४.१९ | त्वम् अङ्ग प्र शंसिषो देवः शविष्ठ मर्त्यम् । |
| | न त्वद् अन्यो मघवन्न् अस्ति मर्डितेन्द्र ब्रवीमि ते वचः ॥ ५ ॥ |
| ८.९०.५ ... पते | त्वम् इन्द्र यशा अस्य् ऋजीषी शवसस् पतिः । |
| ...एक इदनुत्ता चर्षणीधृता | त्वं वृत्राणि हंस्य् अप्रतीन्य् एक इत् पुरुरनुत्तश् चर्षणीधृतिः ॥ ६ ॥ |
| ८.३.५ | इन्द्रम् इद् देवतातय इन्द्रं प्रयत्य् अध्वरे । |
| | इन्द्रं समीके वनिनो हवामह इन्द्रं धनस्य सातये ॥ ७ ॥ |
| ८.३.३ * * * पुरूवसो (एवं कौ) ... | इमा उ त्वा पुरोवसो गिरो वर्धन्तु या मम । |
| | पावकवर्णाः शुचयो विपश्चितो अभि स्तोमैर् अनूषत ॥ ८ ॥ |
| ८.३.१५ | उद् उ त्ये मधुमत्तमा गिरः स्तोमास ईरते । |
| ...इव (एवं कौ) | सत्राजितो धनसा अक्षितोतयो वाजयन्तो रथा इवा ॥ ९ ॥ |
| ८.४.३ | यथा गौरो अपा कृतं तृष्यन्न् एत्य् अवेरिणम् । |
| पिब (एवं कौ) | आपित्वे नः प्रपित्वे तूयम् आ गहि कण्वेषु सु सचा पिबा ॥ १० ॥ ॥२॥ |

## १.२७

| | |
|---|---|
| ऋ ८.६१.५ | शग्ध्य् ऊ षु शचीपत इन्द्र विश्वाभिर् ऊतिभिः । |
| | भगं न हि त्वा यशसं वसुविदम् अनु शूर चरामसि ॥ १ ॥ |
| ८.९७.१ | या इन्द्र भुज आभरः स्वर्वं असुरेभ्यः । |
| | स्तोतारम् इन् मघवन्न् अस्य वर्धय ये च त्वे वृक्तबर्हिषः ॥ २ ॥ |
| ८.१०१.५ | प्र मित्राय प्रार्यम्णे सचथ्यम् ऋतावसो । |
| वरूथ्यं ... | वरूथ्ये वरुणे छन्द्यं वचः स्तोत्रं राजसु गायत ॥ ३ ॥ |
| ८.३.७ | अभि त्वा पूर्वपीतय इन्द्र स्तोमेभिर् आयवः । |
| | समीचीनास ऋभवः सम् अस्वरन् रुद्रा गृणन्त पूर्व्यम् ॥ ४ ॥ |
| ८.८९.३ | प्र व इन्द्राय बृहते मरुतो ब्रह्मार्चत । |
| | वृत्रं हनति वृत्रहा शतक्रतुर् वज्रेण शतपर्वणा ॥ ५ ॥ |
| ८.८९.१ | बृहद् इन्द्राय गायत मरुतो वृत्रहन्तमम् । |

| | |
|---|---|
| ...जागृवि (एवं कौ ) | येन ज्योतिर् अजनयन्न् ऋतावृधो देवं देवाय जागृवीम् ॥ ६ ॥ |
| ७.३२.२६ | इन्द्र क्रतुं न आ भर पिता पुत्रेभ्यो यथा ।<br>शिक्षा णो अस्मिन् पुरुहूत यामनि जीवा ज्योतिर् अशीमहि ॥ ७ ॥ |
| ८.९७.७ । कौ ...सधमाद्ये<br>* * ऊती (एवं कौ )... | मा न इन्द्र परा वृणग् भवा नः सधमाद्यः ।<br>त्वं न ऊतिस् त्वम् इन् न आप्यं मा न इन्द्र परा वृणक् ॥ ८ ॥ |
| ८.३३.१ | वयं घ त्वा सुतावन्त आपो न वृक्तबर्हिषः ।<br>पवित्रस्य प्रस्रवणेषु वृत्रहन् परि स्तोतार आसते ॥ ९ ॥ |
| ६.४६.७ | यद् इन्द्र नाहुषीष्व् आ ओजो नृम्णं च कृष्टिषु ।<br>यद् वा पञ्च क्षितीनां द्युम्नम् आ भर सत्रा विश्वानि पौंस्या ॥ १० ॥ ॥३॥ |

## १.२८

| | |
|---|---|
| ऋ ८.३३.१० ...ऽवृतः | सत्यम् इत्था वृषेद् असि वृषजूतिर् नो ऽविता ।<br>वृषा ह्य् उग्र शृण्विषे परावति वृषो अर्वावति श्रुतः ॥ १ ॥ |
| ८.९७.४ | यच् छक्रासि परावति यद् अर्वावति वृत्रहन् ।<br>अतस् त्वा गीर्भिर् द्युगद् इन्द्र केशिभिः सुतावं आ विवासति ॥ २ ॥ |
| ८.४६.१४ * * * अन्धसो (एवं कौ )... | अभि वो वीरम् अन्धसा मदेषु गाय गिरा महा विचेतसम् ।<br>इन्द्रं नाम श्रुत्यं शाकिनं वचो यथा ॥ ३ ॥ |
| ६.४६.९ ...स्वस्तिमत् | इन्द्र त्रिधातु शरणं त्रिवरूथं स्वस्तये ।<br>छर्दिर् यच्छ मघवद्भ्यश् च मह्यं च यावया दिद्युम् एभ्यः ॥ ४ ॥ |
| ८.९९.३<br>* जाते जनमान...<br>दीधिम | श्रायन्त इव सूर्यं विश्वेद् इन्द्रस्य भक्षत ।<br>वसूनि जातो जनिमान्य् ओजसा प्रति भागं न दीधिमः ॥ ५ ॥ |
| ८.७०.७ * * * आपदिषं * *<br>* * * एतशा * हरी इन्द्रो * | न सीम् अदेव आप तद् इषं दीर्घायो मर्त्यः ।<br>एतग्वा चिद् य एतशो युयोजत इन्द्रो हरी युयोजते ॥ ६ ॥ |
| ८.९०.१ * * * हव्य इन्द्रः * भूषतु<br>* * * वृत्रहा * ऋषीषमः ( कौ ऋचीषम) | आ नो विश्वासु हव्यम् इन्द्रं समत्सु भूषत ।<br>उप ब्रह्माणि सवनानि वृत्रहन् परमज्या ऋचीषम ॥ ७ ॥ |
| ७.३२.१६ | तवेद् इन्द्रावमं वसु त्वं पुष्यसि मध्यमम् ।<br>सत्रा विश्वस्य परमस्य राजसि नकिष् ट्वा गोषु वृण्वते ॥ ८ ॥ |
| ८.१.७ | क्वेयथ क्वेद् असि पुरुत्रा चिद् धि ते मनः । |

| | |
|---|---|
| | अलर्षि युध्म खजकृत् पुरन्दर प्र गायत्रा अगासिषुः ॥९॥ |
| ८.६६.७ | वयम् एनम् इदा ह्यो ऽपीपेमेह वज्रिणम् । |
| * * * समना ... | तस्मा उ अद्य सवने सुतं भरा नूनं भूषत श्रुते ॥ १० ॥ ॥४॥ |

१.२९

| | |
|---|---|
| ऋ ८.७०.१ | यो राजा चर्षणीनां याता रथेभिर् अध्रिगुः । |
| * * * ज्येष्ठो ... | विश्वासां तरुता पृतनानां ज्येष्ठं यो वृत्रहा गृणे ॥ १ ॥ |
| ८.६१.१३ | यत इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि । |
| * * * * * ऊतिभिर् ... | मघवन् शग्धि तव तन् न ऊतये वि द्विषो वि मृधो जहि ॥ २ ॥ |
| ८.१७.१४ | वास्तोष् पते ध्रुवा स्थूणांसत्रं सोम्यानाम् । |
| * भेत्ता पुरां ... | द्रप्सः पुरां भेत्ता शश्वतीनाम् इन्द्रो मुनीनां सखा ॥ ३ ॥ |
| ८.१०१.११ | बण् महं असि सूर्य बड् आदित्य महं असि । |
| * * * * पनस्यते ऽद्धा * * * | महस् ते सतो महिमा पनिष्टम मह्ना देव महं असि ॥ ४ ॥ |
| ८.४.१ | यद् इन्द्र प्राग् अपाग् उदङ् न्यग् वा हूयसे नृभिः । |
| | सिमा पुरू नृषूतो अस्य् आनवे ऽसि प्रशर्ध तुर्वशे ॥ ५ ॥ |
| ७.३२.१४ ...त्वावसुं * * दधर्षति | कस् तम् इन्द्र त्वावसव् आ मर्त्यो दधर्षते । |
| * इत् ... [(एवं कौ) | श्रद्धा हि ते मघवन् पार्ये दिवि वाजी वाजं सिषासति ॥ ६ ॥ |
| ८.४.९ * * सुरूप इद् गोमाँ (एवं | अश्वी रथी सुरूपयु गोमं यद् इन्द्र ते सखा । |
| ...चन्द्रो * * [कौ) इद् * * * | श्वात्रभाजा वयसा सचते सदा चन्द्रैर् याति सभाम् उप ॥ ७ ॥ |
| ८.७०.५ | यद् द्याव इन्द्र ते शतं शतं भूमीर् उत स्युः । |
| | न त्वा वज्रिन् सहस्रं सूर्या अनु न जातम् अष्ट रोदसी ॥ ८ ॥ |
| ६.५९.६ | इन्द्राग्नी अपाद् इयं पूर्वागात् पद्वतीभ्यः । |
| हित्वी * * वावदच् ... | हित्वा शिरो जिह्वया रारपच् चरत् त्रिंशत् पदा न्य् अक्रमीत् ॥ ९ ॥ |
| ८.५३.५ | इन्द्र नेदीय एद् इहि मितमेधाभिर् ऊतिभिः । |
| | आ शंतम शंतमाभिर् अभिष्टिभिर् आ स्वापे स्वापिभिः ॥ १० ॥ ॥५॥ |

१.३०

| | |
|---|---|
| ऋ ८.९९.७ | इत ऊती वो अजरं प्रहेतारम् अप्रहितम् । |
| | आशुं जेतारं होतारं रथीतमम् अतूर्तं तुग्रियावृधम् ॥ १ ॥ |
| ७.३२.१ | मो षु त्वा वाघतश् चनारे अस्मन् नि रीरमन् । |
| * चित् ... | आरात्ताद् वा सधमादं न आ गहीह वा सन्न् उप श्रुधि ॥२॥ |

७.३२.८ सुनोता...

सुनोत सोमपाव्ने सोमम् इन्द्राय वज्रिणे ।
पचता पक्तीर् अवसे कृणुध्वम् इत् पृणन्न् इत् पृणते मयः ॥ ३ ॥

६.४६.३
सहस्रमुष्क...

यः सत्राहा विचर्षणिर् इन्द्रं तं हूमहे वयम् ।
सहस्रमन्यो तुविनृम्ण सत्पते भवा समत्सु नो वृधे ॥ ४ ॥

१.१३९.५ ...दशस्यतम्

शचीभिर् नः शचीवसू दिवा नक्तं दिशस्यतम् ।
मा वां रातिर् उप दसत् कदा चनास्मद् रातिः कदा चन ॥ ५ ॥

ऋग्वेदे नास्ति

यदा कदा च मीढुषे स्तोता जरेत मर्त्यः ।
आद् इद् वन्देत वरुणं विपा गिरा धर्तारं विव्रतानाम् ॥ ६ ॥

८.३३.४ * गायान्धसो ...
* * * यः सुते सचा वज्री रथो * {

पाहि गा अन्धसो मद इन्द्राय मेध्यातिथे ।
यः संमिश्लो हर्योर् यो हिरण्यय इन्द्रो वज्री हिरण्ययः ॥ ७ ॥

८.६१.१

उभयं शृणवच् च न इन्द्रो अर्वाग् इदं वचः ।
सत्राच्या मघवा सोमपीतये धिया शविष्ठ आ गमत् ॥ ८ ॥

८.१.५ * * त्वामद्रिवः * * देयाम्

महे चन त्वाद्रिवः परा शुल्काय दीयसे ।
न सहस्राय नायुताय वज्रिवो न शताय शतामघ ॥ ९ ॥

८.१.६

वस्यं इन्द्रासि मे पितुर् उत भ्रातुर् अभुञ्जतः ।
माता च मे छदयथः समा वसो वसुत्वनाय राधसे ॥ १० ॥ ॥६॥

१.३१

ऋ ७.३२.४

इम इन्द्राय सुन्विरे सोमासो दध्याशिरः ।
तं आ मदाय वज्रहस्त पीतये हरिभ्यां याह्य् ओक आ ॥ १ ॥

ऋग्वेदे नास्ति

इम इन्द्र मदाय ते सोमाश् चिकित्र उक्थिनः ।
मधोः पपान उप नो गिरः शृणु रास्व स्तोत्राय गिर्वणः ॥ २ ॥

८.१.१०

आ त्व् अद्य सबर्दुघां हुवे गायत्रवेपसम् ।
इन्द्रं धेनुं सुदुघाम् अन्याम् इषम् उरुधाराम् अरंकृतम् ॥३॥

८.८८.३
* दित्ससि ...

न त्वा बृहन्तो अद्रयो वरन्त इन्द्र वीडवः ।
यच् छिक्षसि स्तुवते मावते वसु नकिष् टद् आ मिनाति ते ॥ ४ ॥

८.३३.७ ... पिबन्तं (एवं कौ) * *
दध्रे (एवं कौ) }

क ईं वेद सुते सचा पिबन्तः कद् वयो दधुः ।
अयं यः पुरो विभिनत्त्य् ओजसा मन्दानः शिप्रिय्

| | |
|---|---|
| अन्धसः (एवं कौ) | अन्धसा ॥ ५ ॥ |
| ऋग्वेदे नास्ति | यद् इन्द्र शासो अव्रतं च्यावया सदसस् परि । |
| | अस्माकम् अंशुर् मघवन् पुरुस्पृहं वसव्ये अधि |
| कौ बर्हय | बर्हया ॥ ६ ॥ |
| ऋग्वेदे नास्ति । शौ ६.४.१ | त्वष्टा नो दैव्यं वचः पर्जन्यो ब्रह्मणस् पतिः । |
| | पुत्रैर् भ्रातृभिर् अदितिर् नु पातु नो दुष्टरं त्रामणं |
| | वचः ॥ ७ ॥ |
| ऋ ८.५१.७ | कदा चन स्तरीर् असि नेन्द्र सश्चसि दाशुषे । |
| ...पृच्यते (एवं कौ) | उपोपेन् नु मघवन् भूय इन् नु ते दानं देवस्य पृच्यसे ॥८॥ |
| ८.३.१७ युक्ष्वा... | युङ्क्ष्वा हि वृत्रहन्तम हरी इन्द्र परावतः । |
| | अर्वाचीनो मघवन् सोमपीतय उग्र ऋष्वेभिर् आ |
| | गहि ॥ ९ ॥ |
| ८.९९.१ | त्वाम् इदा ह्यो नरो ऽपीप्यन् वज्रिन् भूर्णयः । |
| * * स्तोमवाहसाम्... | स इन्द्र स्तोमवाहस इह श्रुध्य् उप स्वसरम् आ |
| | गहि ॥ १० ॥ ॥७॥ |
| | १.३२ |
| ऋ ७.८१.१ प्रत्यु अदर्श्य् (एवं कौ)... | प्रति वो अदर्श्य् आयत्य् उच्छन्ती दुहिता दिवः । |
| * महि व्ययति चक्षसे... | अपो मही वृणुते चक्षुषा तमो ज्योतिष् कृणोति |
| | सूनरी ॥ १ ॥ |
| ७.७४.१ | इमा उ वां दिविष्टय उस्रा हवन्ते अश्विना । |
| | अयं वाम् अह्वे ऽवसे शचीवसू विशंविशं हि गच्छथः ॥ २ ॥ |
| ऋग्वेदे नास्ति | कु ष्ठः को वाम् अश्विना तपानो देवा मर्त्यः । |
| | घ्नता वाम् अश्नया क्षपमाणो ऽंशुनेत्थम् उ आद् व् |
| | अन्यथा ॥ ३ ॥ |
| १.४७.१ * * * * * ऋतावृधा | अयं वां मधुमत्तमः सुतः सोमो दिविष्टिषु । |
| | तम् अश्विना पिबतं तिरोअह्न्यं धत्तं रत्नानि दाशुषे ॥ ४ ॥ |
| ८.१.२० मा...अहं गिरा | आ त्वा सोमस्य गल्दया सदा याचन्न् अहं ज्या । |
| | भूर्णिं मृगं न सवनेषु चुक्रुधं क ईशानं न याचिषत् ॥ ५ ॥ |
| ८.४.११ | अध्वर्यो द्रावया त्वं सोमम् इन्द्रः पिपासति । |
| उप... | उपो नूनं युयुजे वृषणा हरी आ च जगाम वृत्रहा ॥ ६ ॥ |
| ७.३२.२४ | अभी षतस् तद् आ भरेन्द्र ज्यायः कनीयसः । |
| पुरूवसुर (एवं कौ) * * सनादसि... | पुरोवसुर् हि मघवन् बभूविथ भरेभरे च हव्यः ॥ ७ ॥ |
| ७.३२.१८ | यद् इन्द्र यावतस् त्वम् एतावद् अहम् ईशीय । |
| * * दिधिषेय...रासीय(कौ रंसिषम्) | स्तोतारम् इद् दिधिषे रदावसो न पापत्वाय रंसिषः ॥ ८ ॥ |
| ८.९९.५ | त्वम् इन्द्र प्रतूर्तिष्व् अभि विश्वा असि स्पृधः । |
| * * विश्वतूर्... | अशस्तिहा जनिता वृत्रतूर् असि त्वं तूर्य तरुष्यतः ॥ ९ ॥ |

८.८८.५ * हि ... अन्तेभ्यस् * ...अनु स्वधां

प्र यो रिरिक्ष ओजसा दिवः सदोभ्यस् परि ।
न त्वा विव्याच रज इन्द्र पार्थिवम् अति विश्वं ववक्षिथ ॥ १० ॥ ॥८॥

१.३३

ऋ ७.२१.१

असावि देवं गोऋजीकम् अन्धो न्य् अस्मिन्न् इन्द्रो जनुषेम् उवोच ।
बोधामसि त्वा हर्यश्व यज्ञैर् बोधा नः स्तोमम् अन्धसो मदेषु ॥ १ ॥

७.२४.१

योनिष् ट इन्द्र सदने अकारि तम् आ नृभिः पुरुहूत प्र याहि ।

* * * * वृधे च ...

असो यथा नोऽविता वृधश् चिद् ददो वसूनि ममदश् च सोमैः ॥ २ ॥

५.३२.१

अदर्दर् उत्सम् असृजो वि खानि त्वम् अर्णवान् बद्बधानं अरम्णाः ।

...सृजो वि धारा अव दानवं *

महान्तम् इन्द्र पर्वतं वि यद् वः सृजद् धारा अव यद् दानवान् हन् ॥ ३ ॥

१०.१४८.१ ...ससवांसश् च *

सुष्वाणास इन्द्र स्तुमसि त्वा सनिष्यन्तश् चित् तुविनृम्ण वाजम् ।

* * * * * चाकन् त्मना तना सनुयाम *

आ नो भर सुवितं यस्य कोना तना त्मना सह्यामा त्वोताः ॥ ४ ॥

१०.४७.१ जगृभ्मा ...

जगृह्मा ते दक्षिणम् इन्द्र हस्तं वसूयवो वसुपते वसूनाम् ।
विद्मा हि त्वा गोपतिं शूर गोनाम् अस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः ॥ ५ ॥

७.२७.१ ...युनजते (एवं कौ) * *

इन्द्रं नरो नेमधिता हवन्ते यत् पार्या युनजन्ते धियस् ताः ।

* * शवसश्चकान आ ...

शूरो नृषाता श्रवसश् च काम आ गोमति व्रजे भजा त्वं नः ॥ ६ ॥

१०.७३.११

वयः सुपर्णा उप सेदुर् इन्द्रं प्रियमेधा ऋषयो नाधमानाः ।
अप ध्वान्तम् ऊर्णुहि पूर्धि चक्षुर् मुमुग्ध्य् अस्मान् निधयेव बद्धान् ॥ ७ ॥

१०.१२३.६

नाके सुपर्णम् उप यत् पतन्तं हृदा वेनन्तो अभ्य् अचक्षत त्वा ।
हिरण्यपक्षं वरुणस्य दूतं यमस्य योनौ शकुनं भुरण्युम् ॥ ८ ॥

ऋग्वेदे नास्ति
कौ ...आवः (एवमितरासु संहितासु)

ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् वि सीमतः सुरुचो वेन आवत् ।

| | |
|---|---|
| | स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश् च योनिम् असतश् च विवः ॥ ९ ॥ |
| ६.३२.१ | अपूर्व्या पुरुतमान्य् अस्मै महे वीराय तवसे तुराय । |
| ...आसा * तक्षम् | विरप्शिने वज्रिणे शंतमानि वचांस्य् अस्मै स्थविराय तक्षुः ॥ १० ॥ ॥१॥ |

१.३४

| | |
|---|---|
| ऋ ८.९६.१३ * * * * इयानः... | अव द्रप्सो अंशुमतीम् अतिष्ठद् ईयानः कृष्णो दशभिः सहस्रैः । |
| ...स्नेहितीर् * अधत्त | आवत् तम् इन्द्रः शच्या धमन्तम् अप स्नीहितिं नृमणा अधद्राः ॥ १ ॥ |
| ८.९६.७ | वृत्रस्य त्वा श्वसथाद् ईषमाणा विश्वे देवा अजहुर् ये सखायः । |
| | मरुद्भिर् इन्द्र सख्यं ते अस्त्व् अथेमा विश्वाः पृतना जयासि ॥ २ ॥ |
| १०.५५.५ | विधुं दद्राणं समने बहूनां युवानं सन्तं पलितो जगार । |
| | देवस्य पश्य काव्यं महित्वाद्या ममार स ह्यः सम् आन ॥ ३ ॥ |
| ८.९६.१६ | त्वं ह त्यत् सप्तभ्यो जायमानो ऽशत्रुभ्यो अभवः शत्रुर् इन्द्र । |
| | गूढे द्यावापृथिवी अन्व् अविन्दो विभुमद्भ्यो भुवनेभ्यो रणं धाः ॥ ४ ॥ |
| ऋग्वेदे नास्ति | मेळिं न त्वा वज्रिणं भृष्टिमन्तं पुरुधस्मानं वृषभं स्थिरप्स्नुम् । |
| | करोष्य् अर्यस् तरुषीर् दुवस्युर् इन्द्र द्युक्षं वृत्रहणं गृणीषे ॥ ५ ॥ |
| ७.३१.१० * * * महिवृधे... | प्र वो महे महेवृधे भरध्वं प्रचेतसे प्र सुमतिं कृणुध्वम् । |
| * * * चरा... | विशः पूर्वीः प्र चर चर्षणिप्राः ॥ ६ ॥ |
| ३.३०.२२ | शुनं हुवेम मघवानम् इन्द्रम् अस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ । |
| धनानाम् | शृण्वन्तम् उग्रम् ऊतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानि ॥ ७ ॥ |
| ७.२३.१ | उद् उ ब्रह्माण्य् ऐरत श्रवस्येन्द्रं समर्ये महया वसिष्ठ । |
| * * * शवसा... | आ यो विश्वानि श्रवसा ततानोपश्रोता म ईवतो वचांसि ॥ ८ ॥ |
| १०.७३.९ | चक्रं यद् अस्याप्स्व् आ निषत्तम् उतो तद् अस्मै मध्व् इच् चच्छद्यात् । |

पृथिव्याम् अतिषितं यद् ऊधः पयो गोष्व् अदधा ओषधीषु ॥ ९ ॥ ॥२॥

१.३५

ऋ १०.१७८.१ ...सहावानं * *

त्यम् ऊ षु वाजिनं देवजूतं सहोवानं तरुतारं रथानाम् ।
अरिष्टनेमिं पृतनाजम् आशुं स्वस्तये तार्क्ष्यम् इहा हुवेम ॥ १ ॥

६.४७.११
ह्वयामि शक्रं * * स्वस्ति नो * धात्व्

त्रातारम् इन्द्रम् अवितारम् इन्द्रं हवेहवे सुहवं शूरम् इन्द्रम् ।
हुवे नु शक्रं पुरुहूतम् इन्द्रम् इदं हविर् मघवा वेत्व् इन्द्रः ॥ २ ॥

१०.२३.१
* श्मश्रु * ऊर्ध्वथा भूद् * *
दयमानो * *

यजामह इन्द्रं वज्रदक्षिणं हरीणां रथ्यं विव्रतानाम् ।
प्र श्मश्रुभिर् दोधुवद् ऊर्ध्वधा भुवद् वि सेनाभिर् भयमानो वि राधसा ॥ ३ ॥

४.१७.८

सत्राहणं दाधृषिं तुम्रम् इन्द्रं महाम् अपारं वृषभं सुवज्रम् ।
हन्ता यो वृत्रं सनितोत वाजं दाता मघानि मघवा सुराधाः ॥ ४ ॥

ऋग्वेदे न स्तः

यो नो वनुष्यन्न् अभिदाति मर्त उगणा वा मन्यमानस् तुरो वा ।
क्षिधी युधा शवसा वा तम् इन्द्राभी ष्याम वृषमणस् त्वोताः ॥ ५ ॥
यं वृत्रेषु क्षितयः स्पर्धमाना यं युक्तेषु तुरयन्तो हवन्ते ।
यं शूरसातौ यम् अपाम् उपज्मन् यं विप्रासो वाजयन्ते स इन्द्रः ॥ ६ ॥

३.५३.१

इन्द्रापर्वता बृहता रथेन वामीर् इष आ वहतं सुवीराः ।
वीतं हव्यान्य् अध्वरेषु देवा वर्धेथां गीर्भिर् इडया मदन्ता ॥ ७ ॥

१०.८९.४ ...प्रेरयं *
* * चक्रिया...

इन्द्राय गिरो अनिशितसर्गा अपः प्रेरयत् सगरस्य बुध्नात् ।
यो अक्षेणेव चक्रियौ शचीभिर् विष्वक् तस्तम्भ पृथिवीम् उत द्याम् ॥ ८ ॥

१०.१०.१ ओ चित् सखायं * ववृत्यां * * * अर्णवं जगन्वान्
...वेधा अधि क्षमि प्रतरं दीध्यानः

आ त्वा सखायः सख्या ववृत्युस् तिरः पुरू चिद् अर्णवां जगम्याः ।
पितुर् नपातम् आ दधीत वेधा अस्मिन् क्षये प्रतरां दीद्यानः ॥ ९ ॥

१.८४.१६

को अद्य युङ्क्ते धुरि गा ऋतस्य शिमीवतो भामिनो दुर्हृणायून् ।

| | |
|---|---|
| आसन्निषून् हृत्स्वसो मयो॰ ... | आसन्न् एषाम् अप्सुवाहो मयोभून् य एषां भृत्याम् ऋणधत् स जीवात् ॥ १० ॥ ॥३॥ |
| | १.३६ |
| ऋ १.१०.१ | गायन्ति त्वा गायत्रिणो अर्चन्त्य् अर्कम् अर्किणः । |
| | ब्रह्माणस् त्वा शतक्रत उद् वंशम् इव येमिरे ॥ १ ॥ |
| १.११.१ | इन्द्रं विश्वा अवीवृधन् समुद्रव्यचसं गिरः । |
| | रथीतमं रथीनां वाजानां सत्पतिं पतिम् ॥ २ ॥ |
| १.८४.४ | इमम् इन्द्र सुतं पिब ज्येष्ठम् अमर्त्यं मदम् । |
| | शुक्रस्य त्वाभ्य् अक्षरन् धारा ऋतस्य सादने ॥ ३ ॥ |
| ५.३९.१ * * * मेहनास्ति... | यद् इन्द्र चित्र म इह नास्ति त्वादातम् अद्रिवः । |
| ...भर (एवं कौ) | राधस् तन् नो विदद्वस उभयाहस्तिय् आ भरा ॥ ४ ॥ |
| ८.९५.४ | श्रुधी हवं तिरश्च्या इन्द्र यस् त्वा सपर्यति । |
| | सुवीर्यस्य गोमतो रायस् पूर्धि महं असि ॥ ५ ॥ |
| १.८४.१ | असावि सोम इन्द्र ते शविष्ठ धृष्णव् आ गहि । |
| | आ त्वा पृणक्त्व् इन्द्रियं रजः सूर्यो न रश्मिभिः ॥६॥ |
| ८.३४.१ | एन्द्र याहि हरिभिर् उप कण्वस्य सुष्टुतिम् । |
| दिवो (एवं कौ)... | देवा अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥ ७ ॥ |
| ८.९५.१ | आ त्वा गिरो रथीर् इवास्थुः सुतेषु गिर्वणः । |
| * * * * इन्द्र * * मातरः | अभि त्वा सम् अनूषत गावो वत्सं न धेनवः ॥ ८ ॥ |
| ८.९५.७ | एतो न्व् इन्द्रं स्तवाम शुद्धं शुद्धेन साम्ना । |
| * * * शुद्ध... | शुद्धैर् उक्थैर् वावृध्वांसं शुद्धैर् आशीर्वान् ममत्तु ॥ ९ ॥ |
| ६.४४.१ * रयिवो रयिंतमो... | यो रयिं वो रयिंतमो यो द्युम्नैर् द्युम्नवत्तमः । |
| | सोमः सुतः स इन्द्र ते ऽस्ति स्वधापते मदः ॥ १० ॥ ॥४॥ |
| | १.३७ |
| ऋ ६.४२.१ | प्रत्य् अस्मै पिपीषते विश्वानि विदुषे भर । |
| ...नरे | अरंगमाय जग्मये ऽपश्चाद्दघ्वने नरः ॥ १ ॥ |
| ऋग्वेदे नास्ति | आ नो वयोवयःशयं महान्तं गह्वरेष्ठाम् । |
| | महान्तं पूर्विनेष्ठाम् उग्रं वचो अपावधीः ॥ २ ॥ |
| ८.६८.१ | आ त्वा रथं यथोतये सुम्नाय वर्तयामसि । |
| ...इन्द्र * सत्पते | तुविकूर्मिम् ऋतीषहम् इन्द्रं शविष्ठ सत्पतिम् ॥ ३ ॥ |
| ८.६३.१ * * महानां... | स पूर्व्यो महोनां वेनः क्रतुभिर् आनजे । |
| | यस्य द्वारा मनुः पिता देवेषु धिय आनजे ॥ ४ ॥ |
| ५.६१.११ य ईं वहन्त आशुभिः { | यदी वहन्त्य् आशवो भ्राजमाना रथेष्व् आ । |
| पिबन्तो * मधु। अत्र श्रवांसि दधिरे { | पिबन्तो मदिरं मधु तत्र श्रवांसि कृण्वते ॥ ५ ॥ |
| ६.४४.४ | त्यम् उ वो अप्रहणं गृणीषे शवसस् पतिम् । |

| | |
|---|---|
| * विश्वासाहं (एवं कौ) * मंहिष्ठं विश्वचर्षणिम् | इन्द्रं विश्वासहं नरं शचिष्ठं विश्ववेदसम् ॥ ६ ॥ |
| ४.३९.६ | दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोर् अश्वस्य वाजिनः । |
| कौ …न * * | सुरभि नो मुखा करत् प्र ण आयूंषि तारिषत् ॥ ७ ॥ |
| १.११.४ | पुरां भिन्दुर् युवा कविर् अमितौजा अजायत । |
| | इन्द्रो विश्वस्य कर्मणो धर्ता वज्री पुरुष्टुतः ॥ ८ ॥ |
| | ॥५॥ |
| | **१.३८** |
| ऋ ८.६९.१ …मन्दद्वी° | प्रप्र वस् त्रिष्टुभम् इषं वन्दद्वीरायेन्दवे । |
| | धिया वो मेधसातये पुरन्ध्या विवासति ॥ १ ॥ |
| ऋग्वेदे नास्ति । कौ * * याव्… | कश्यपस्य स्वर्विदो य आहुः सयुजाव् इति । |
| कौ …व्रतं * * निचाय्य | ययोर् विश्वम् अपि व्रते यज्ञं धीरा निचाय्या ॥ २ ॥ |
| ८.६८.४ | विश्वानरस्य वस् पतिम् अनानतस्य शवसः । |
| [शशमते | एवैश् च चर्षणीनाम् ऊती हुवे रथानाम् ॥ ३ ॥ |
| ६.२.४ ऋधद्यस्ते सुदानवे धिया मर्तः | स घा यस् ते दिवो नरो धिया मर्तस्य शमतः । |
| * ष… | ऊती स बृहतो दिवो द्विषो अंहो न तरति ॥ ४ ॥ |
| ८.६९.८ नरः नास्ति | अर्चत प्रार्चत नरः प्रियमेधासो अर्चत । |
| …पुरं न * * | अर्चन्तु पुत्रका उत पुरम् इद् धृष्ण्व् अर्चत ॥ ५ ॥ |
| १.१०.५ | उक्थम् इन्द्राय शंस्यं वर्धनं पुरुनिष्षिधे । |
| | शक्रो यथा सुतेषु णो रारणत् सख्येषु च ॥ ६ ॥ |
| ५.३८.१ उरोष्… [मंहय) | विभोष् ट इन्द्र राधसो विभ्वी रातिः शतक्रतो । |
| अधा * * द्युम्ना सुक्षत्र मंहय (कौ अपि | अथा नो विश्वचर्षणे द्युम्नं सुदत्र मंहया ॥ ७ ॥ |
| १.४९.३ …द्विपच् चतुष्पद् * | वयश् चित् ते पतत्रिणो द्विपाच् चतुष्पाद् अर्जुनि । |
| [* * | उषः प्रारन्न् ऋतुं अनु दिवो अन्तेभ्यस् परि ॥ ८ ॥ |
| १.१०५.५ …त्रिष्वा (कौ मध्य आ) | अमी ये देवाः स्थन मध्ये ये रोचने दिवः । |
| * * * * अनृतं क * * आहुतिर्वित्तं मे | कद् व ऋतं कद् अमृतं का प्रत्ना व आहुतिः ॥ ९ ॥ |
| शौ ७.५४.१ …कुर्वते [अस्य रोदसी | ऋचं साम यजामहे याभ्यां कर्माणि कृण्वते । |
| एते सदसि…यच्छतः | वि ते सदसि राजतो यज्ञं देवेषु वक्षतः ॥ १० ॥ ॥६॥ ॥३॥ |
| | **१.३९** |
| ऋ ८.९७.१० * * * नरं… | विश्वाः पृतना अभिभूतरं नरः सजूस् ततक्षुर् इन्द्रं जजनुश् च राजसे । |
| क्रत्वा वरिष्ठं वर आमुरिम्… तवसं * | क्रत्वे वरे स्थेमन्य् आमुरीम् उतोग्रम् ओजिष्ठं तरसं तरस्विनम् ॥ १ ॥ |
| १०.१४७.१… वृत्रं | श्रत् ते दधामि प्रथमाय मन्यवे अहन् यद् दस्युं नर्यं विवेर् अपः । |
| * यत् त्वा भवतो रोदसी अनु रेजते * | उभे यत्वा रोदसी धावताम् अनु भ्यसात् ते शुष्मात् |

| | |
|---|---|
| | पृथिवी चिद् अद्रिवः ॥ २ ॥ |
| शौ ७.२१.१ * विश्वे वचसा * दिव एको विभूर् * * | समेत विश्वा ओजसा पतिं दिवो य एक इद् भूर् अतिथिर् जनानाम् । |
| * * * आविवासत् * वर्तनिर् * * एकमित् पुरु | स पूर्व्यो नूतनम् आजिगीषं तं वर्तनीर् अनु वावृत एक इत् ॥ ३ ॥ |
| ऋ १.५७.४ | इमे त इन्द्र ते वयं पुरुष्टुत ये त्वारभ्य चरामसि प्रभूवसो । |
| | नहि त्वद् अन्यो गिर्वणो गिरः सघत् क्षोणीर् इव |
| प्रति नो हर्य तद् * | प्रति तद् धर्य नो वचः ॥ ४ ॥ |
| ३.५१.१ | चर्षणीधृतं मघवानम् उक्थ्यम् इन्द्रं गिरो बृहतीर् अभ्य् अनूषत । |
| | वावृधानं पुरुहूतं सुवृक्तिभिर् अमर्त्यं जरमाणं दिवे-दिवे ॥ ५ ॥ |
| १०.४३.१ * म * * स्वर्विदः... | अच्छा व इन्द्रं मतयः स्वर्युवः सध्रीचीर् विश्वा उशतीर् अनूषत । |
| * ष्वजन्ते ... | परि ष्वजन्त जनयो यथा पतिं मर्यं न शुन्ध्युं मघवानम् ऊतये ॥ ६ ॥ |
| १.५१.१ * * * * ऋग्मियम् (एवं कौ) ... | अभि त्यं मेषं पुरुहूतम् ऋग्म्यम् इन्द्रं गीर्भिर् मदता वस्वो अर्णवम् । |
| * * * * मानुषा ... | यस्य द्यावो न विचरन्ति मानुषं भुजे मंहिष्ठम् अभि विप्रम् अर्चत ॥ ७ ॥ |
| १.५२.१ ...सुभ्वः * | त्यं सु मेषं महया स्वर्विदं शतं यस्य सुभुवः साकम् ईरते । |
| | अत्यं न वाजं हवनस्यदं रथम् एन्द्रं ववृत्याम् अवसे सुवृक्तिभिः ॥ ८ ॥ |
| ६.७०.१ | घृतवती भुवनानाम् अभिश्रियोर्वी पृथ्वी मधुदुघे सुपेशसा । |
| | द्यावापृथिवी वरुणस्य धर्मणा विष्कभिते अजरे भूरिरेतसा ॥ ९ ॥ |
| १०.१३४.१ | उभे यद् इन्द्र रोदसी आपप्राथोषा इव । |
| | महान्तं त्वा महीनां सम्राजं चर्षणीनाम् । |
| | देवी जनित्र्य् अजीजनद् भद्रा जनित्र्य् अजीजनत् ॥ १० ॥ |
| १.१०१.१ | प्र मन्दिने पितुमद् अर्चता वचो यः कृष्णगर्भा निरहन्न् ऋजिश्वना । |
| ...हवामहे | अवस्यवो वृषणं वज्रदक्षिणं मरुत्वन्तं सख्याय हुवेमहि ॥ |
| | ॥ ११ ॥ ॥१॥ |
| | १.४० |
| ऋ १.८४.१० ...मध्वः * * | स्वादोर् इत्था विषूवतो मधोः पिबन्ति गौर्यः । |

| | |
|---|---|
| ...शोभसे * | या इन्द्रेण सयावरीर् वृष्णा मदन्ति शोभथा वस्वीर् अनु स्वराज्यम् ॥ १ ॥ |
| १.८०.१ ...मदे ब्रह्मा * * | इत्था हि सोम इन् मदो ब्रह्म चकार वर्धनम् ।<br>शविष्ठ वज्रिन्न् ओजसा पृथिव्या निः शशा अहिम् अर्चन्न् अनु स्वराज्यम् ॥ २ ॥ |
| १.८१.१<br>* * * अजिषूतेम्... | इन्द्रो मदाय वावृधे शवसे वृत्रहा नृभिः ।<br>तम् इन् महत्स्व् आजिषूतिम् अर्भे हवामहे स वाजेषु प्र नो ऽविषत् ॥ ३ ॥ |
| १.८०.७<br>* * * * * तमु त्वं मायया वधीर्... | इन्द्र तुभ्यम् इद् अद्रिवो ऽनुत्तं वज्रिन् वीर्यम् ।<br>यद् ध त्यं मायिनं मृगं तव त्यन् माययावधीर् अर्चन्न् अनु स्वराज्यम् ॥ ४ ॥ |
| १.८०.३ | प्रेह्य् अभीहि धृष्णुहि न ते वज्रो नि यंसते ।<br>इन्द्र नृम्णं हि ते शवो हनो वृत्रं जया अपो ऽर्चन्न् अनु स्वराज्यम् ॥ ५ ॥ |
| १.८१.३ ...धना<br>युक्ष्वा... | यद् उदीरत आजयो धृष्णवे धीयते धनम् ।<br>युङ्क्ष्वा मदच्युता हरी कं हनः कं वसौ दधो ऽस्मं इन्द्र वसौ दधः ॥ ६ ॥ |
| १.८२.२ ... | अक्षन्न् अमीमदन्त ह्य् अव प्रिया अधूषत ।<br>अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजा न्व् इन्द्र ते हरी ॥ ७ ॥ |
| १.८२.१<br>यदा * * * आद्... | उपो षु शृणुही गिरो मघवन् मातथा इव ।<br>कदा नः सूनृतावतः कर इद् अर्थयास इद् योजा न्व् इन्द्र ते हरी ॥ ८ ॥ |
| १.१०५.१ | चन्द्रमा अप्स्व् अन्तर् आ सुपर्णो धावते दिवि ।<br>न वो हिरण्यनेमयः पदं विन्दन्ति विद्युतो वित्तं मे अस्य रोदसी ॥ ९ ॥ |
| ५.७५.१<br>* * * * स्तोमन प्रति भूषति | प्रति प्रियतमं रथं वृषणं वसुवाहनम् ।<br>स्तोता वाम् अश्विनाव् ऋषिः स्तोमेभिर् भूषति प्रति माध्वी मम श्रुतं हवम् ॥ १० ॥ ॥२॥ |

१.४१

| | |
|---|---|
| ऋ ५.६.४ | आ ते अग्न इधीमहि द्युमन्तं देवाजरम् ।<br>यद् ध स्या ते पनीयसी समिद् दीदयति द्यवीषं स्तोतृभ्य आ भर ॥ १ ॥ |
| १०.२१.१<br>यज्ञाय स्तीर्णबर्हिषे वि वो मदे<br>शीरं पावकशोचिषं विवक्षसे | आग्निं न स्ववृक्तिभिर् होतारं त्वा वृणीमहे ।<br>शीरं पावकशोचिषं वि वो मदे यज्ञेषु स्तीर्णबर्हिषं विवक्षसे ॥ २ ॥ |

५.७९.१ महे नो अद्य बोधयोषो राये दिवित्मती ।
यथा चिन् नो अबोधयः सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसूनृते ॥ ३ ॥

१०.२५.१ [ * * भद्रं नो अपि वातय मनो दक्षम् उत क्रतुम् ।
अधा * * अन्धसो (एवं कौ) ... रणन् अथा ते सख्ये अन्धसा वि वो मदे रणा गावो न यवसे विवक्षसे ॥ ४ ॥

१.८१.४ * * अनुष्वधं (एवं कौ) * * वावृधे * क्रत्वा महं अनुष्वधो भीम आ वावृते शवः ।
श्रिय ऋष्व उपाकयोर् नि शिप्री हरिवान् दधे हस्तयोर् वज्रम् आयसम् ॥ ५ ॥

१.८२.४ स घा तं वृषणं रथम् अधि तिष्ठाति गोविदम् ।
यः पात्रं हारियोजनं पूर्णम् इन्द्र चिकेतति योजा न्व् इन्द्र ते हरी ॥ ६ ॥

५.६.१ अग्निं तं मन्ये यो वसुर् अस्तं यं यन्ति धेनवः ।
अस्तम् अर्वन्त आशवो ऽस्तं नित्यासो वाजिन इषं स्तोतृभ्य आ भर ॥ ७ ॥

१०.१२६.१ न तम् अंहो न दुरितं देवासो अष्ट मर्त्यम् ।
कौ ... नयति * * सजोषसो यम् अर्यमा मित्रो नयन्ति वरुणो अति द्विषः ॥ ८ ॥ ॥३॥

१.४२

ऋ ९.१०९.१ परि प्र धन्वेन्द्राय सोम स्वादुर् मित्राय पूष्णे भगाय ॥१॥
९.११०.१ पर्यू ऊ षु प्र धन्व वाजसातये परि वृत्राणि सक्षणिः ।
... ईयसे द्विषस् तरध्या ऋणया न ईरसे ॥ २ ॥
९.१०९.४ पवस्व सोम महान् समुद्रः पिता देवानां विश्वाभि धाम ॥ ३ ॥
९.१०९.१० * * क्रत्वे ... पवस्व सोम महे दक्षायाश्वो न निक्तो वाजी धनाय ॥ ४ ॥
९.१०९.१३ इन्दुः पविष्ट चारुर् मदायापाम् उपस्थे कविर् भगाय ॥ ५ ॥
९.११०.२ अनु हि त्वा सुतं सोम मदामसि महे समर्यराज्ये ।
वाजं अभि पवमान प्र गाहसे ॥ ६ ॥
७.५६.१ ... अधा (कौ अथा) क ईं व्यक्ता नरः सनीडा रुद्रस्य मर्या यथा स्वश्वाः ॥ ७ ॥
४.१०.१ अग्ने तम् अद्याश्वं न स्तोमैः क्रतुं न भद्रं हृदिस्पृशम् ।
ऋध्यामा त ओहैः ॥ ८ ॥
ऋग्वेदे नास्ति आविर् मर्या आ वाजं वाजिनो ग्मं देवस्य सवितुः
कौ सवम् सवे ।
कौ स्वर्गाँ .. स्वर्गा अर्वन्तो जयत ॥ ९ ॥
ऋ ९.१०९.७ * * * * महाम् (कौ महाँ) अवीनाम् * * पवस्व सोम द्युम्नी सुधारो महीनाम् अनु पूर्व्यः ॥ १० ॥ ॥४॥

| | |
|---|---|
| | १.४३ |
| ८.१३.१ इन्द्रः ...पुनीत * | इन्द्र सुतेषु सोमेषु क्रतुं पुनीष उक्थ्यम् । |
| * * दक्षसो... | विदे वृधस्य दक्षस्य महं हि षः ॥ १ ॥ |
| ८.१५.१ | तम् व् अभि प्र गायत पुरुहूतं पुरुष्टुतम् । |
| ...विवासत (एवं कौ) | इन्द्रं गीर्भिस् तविषम् आ विवासता ॥ २ ॥ |
| ८.१५.४ ...पृत्सु * | तं ते मदं गृणीमसि वृषणं पृक्षु सासहिम् । |
| | उ लोककृत्नुम् अद्रिवो हरिश्रियम् ॥ ३ ॥ |
| ८.१२.१६ * * * विष्णवि (एवं कौ)... | यत् सोमम् इन्द्र विष्णवे यद् वा घ त्रित आप्त्ये । |
| | यद् वा मरुत्सु मन्दसे सम् इन्दुभिः ॥ ४ ॥ |
| ८.२४.१६ * मध्वो * सिञ्च वा- | एद् उ मधोर् मदिन्तरं सिञ्चाध्वर्यो अन्धसा । |
| ध्वर्यो अन्धसः (कौ अपि अन्धसः) | एवा हि वीरः स्तवते सदावृधः ॥ ५ ॥ |
| ८.२४.१३ ...पिबाति (एवं कौ) * * | एन्दुम् इन्द्राय सिञ्चत पिबत सोम्यं मधु । |
| * राधसा चोदयाते (कौ चोदयते) * | प्र राधांसि चोदयता महित्वना ॥ ६ ॥ |
| ८.२४.१९ | एतो न्व् इन्द्रं स्तवाम सखायः स्तोम्यं नरम् । |
| | कृष्टीर् यो विश्वा अभ्य् अस्त्य् एक इत् ॥ ७ ॥ |
| ८.९८.१ | इन्द्राय साम गायत विप्राय बृहते बृहत् । |
| धर्मकृते... | ब्रह्मकृते विपश्चिते पनस्यवे ॥ ८ ॥ |
| १.८४.७ | य एक इद् विदयते वसु मर्ताय दाशुषे । |
| | ईशानो अप्रतिष्कुत इन्द्रो अङ्ग ॥ ९ ॥ |
| ८.२४.१ * * शिषामहि ... | सखाय आ शिषामहे ब्रह्मेन्द्राय वज्रिणे । |
| | स्तुष ऊ षु वो नृतमाय धृष्णवे ॥ १० ॥ ॥५॥ |
| | १.४४ |
| क ८.९८.४ ... प्रियः * अगोह्यः (कौ [अगोह्य) | एन्द्र नो गधि प्रिय सत्राजिद् अगोह्य । |
| | गिरिर् न विश्वतः पृथुः पतिर् दिवः ॥ १ ॥ |
| ६.४३.१ ...रन्धयः | यस्य त्यच् छम्बरं मदे दिवोदासाय रन्धयन् । |
| ...पिब (एवं कौ) | अयं स सोम इन्द्र ते सुतः पिबा ॥ २ ॥ |
| ८.६२.८ ...उपमं * | गृणे तद् इन्द्र ते शव उपमां देवतातये । |
| ...शचीपते भद्रा इन्द्रस्य रातयः | यद् धंसि वृत्रम् ओजसा शचीपते ॥ ३ ॥ |
| ८.१२.१ | य इन्द्र सोमपातमो मदः शविष्ठ चेतति । |
| | येना हंसि न्य् अत्रिणं तम् ईमहे ॥ ४ ॥ |
| ८.१८.१८ * तनाय... | तुचे तुनाय तत् सु नो द्राघीय आयुर् जीवसे । |
| * सुमहसः * | आदित्यासः समहसः कृणोतन ॥ ५ ॥ |
| ८.२४.२४ | वेत्था हि निर्ऋतीनां वज्रहस्त परिवृजम् । |
| | अहरहः शुन्ध्युः परिपदाम् इव ॥ ६ ॥ |
| ८.१८.१० | अपामीवाम् अप स्रिधम् अप सेधत दुर्मतिम् । |
| | आदित्यासो युयोतना नो अंहसः ॥ ७ ॥ |

| | |
|---|---|
| ७.२२.१ | पिबा सोमम् इन्द्र मन्दतु त्वा यं ते सुषाव हर्यश्वाद्रिः । |
| | सोतुर् बाहुभ्यां सुयतो नार्वा ॥ ८ ॥ ॥६॥ |
| | **१.४५** |
| ऋ ८.२१.१३ | अभ्रातृव्यो अना त्वम् अनापिर् इन्द्र जनुषा सनाद् असि । |
| | युधेद् आपित्वम् इच्छसे ॥ १ ॥ |
| ८.२१.९ | यो न इदमिदं पुरा प्र वस्य आनिनाय तम् उ वः स्तुषे । |
| | सखाय इन्द्रम् ऊतये ॥ २ ॥ |
| ८.२०.१ ...स्थाता * | आ गन्ता मा रिषण्यत प्रस्थावानो माप स्थात समन्यवः । |
| स्थिरा चिन्नमयिष्णवः । कौ दृढा... | दृढाश् चिद् यमयिष्णवः ॥ ३ ॥ |
| ८.२१.३ * याहीम इन्दवो... | आ याह्य् अयम् इन्दवे ऽश्वपते गोपत उर्वरापते । |
| | सोमं सोमपते पिब ॥ ४ ॥ |
| ८.२१.११ | त्वया ह स्विद् युजा वयं प्रति श्वसन्तं वृषभ ब्रुवीमहि । |
| | संस्थे जनस्य गोमतः ॥ ५ ॥ |
| ८.२०.२१ | गावश् चिद् घा समन्यवः सजात्येन मरुतः सबन्धवः । |
| | रिहते ककुभो मिथः ॥ ६ ॥ |
| ८.९८.१० * * * भरँ... | त्वं न इन्द्रा भर ओजो नृम्णं शतक्रतो विचर्षणे । |
| * * पृतनाषहम् | आ वीरं पृतनासहम् ॥ ७ ॥ |
| ८.९८.७ ...कामान्महः ससृज्महे | अधा हीन्द्र गिर्वण उप त्वा काम ईमहे ससृग्महे । |
| * यन्त * | उदेव ग्मन्त उदभिः ॥ ८ ॥ |
| ८.२१.५ ...गोश्रीते मधौ मदिरे [विवक्षणे (एवं कौ) | सीदन्तस् ते वयो यथा गोश्रीस्ते मधोर् मदिरे विवक्षणः । |
| | अभि त्वाम् इन्द्र नोनुमः ॥ ९ ॥ |
| ८.२१.१ | वयम् उ त्वाम् अपूर्व्य स्थूरं न कच्चि् चिद् भरन्तो ऽवस्यवः । |
| वाजे... | वज्रि चित्रं हवामहे ॥ १० ॥ ॥७॥ |
| | **१.४६** |
| ऋग्वेदे न स्तः | विश्वतोदावन् विश्वतो न आ भर यं त्वा शविष्ठम् ईमहे ॥ १ ॥ |
| | एष ब्रह्मा य ऋत्विय इन्द्रो नाम श्रुतो गृणे ॥ २ ॥ |
| ५.३१.४[३.४] | ब्रह्माण इन्द्रं महयन्तो अर्कैर् अवर्धयन्न् अहये हन्तवा उ ॥ ३ ॥ |
| ५.३१.४[१.२] * * * * तक्षन्... | अनवस् ते रथम् अश्वाय तक्षुस् त्वष्टा वज्रं पुरुहूत द्युमन्तम् ॥ ४ ॥ |
| ऋग्वेदे न स्तः | शं पदं मघं रयीषिणे न कामम् अव्रतो हिनोति न स्पृशद् रयिम् ॥ ५ ॥ |
| | सदा गावः शुचयो विश्वधायसः सदा देवा अरेपसः ॥ ६ ॥ |

| | |
|---|---|
| १०.१७२.१ | आ याहि वनसा सह गावः सचन्त वर्तनिं यद् ऊधभिः ॥ ७ ॥ |
| ऋग्वेदे न सन्ति | उप प्रक्षे मधुमति क्षियन्तः पुष्येम रयिं धीमहे त इन्द्र ॥ ८ ॥ |
| | अर्चन्त्य् अर्कं मरुतः स्वर्का आ स्तोभति श्रुतो युवा स इन्द्रः ॥ ९ ॥ |
| | प्र व इन्द्राय वृत्रहन्तमाय विप्राय गाथं गायत यं जुजोषते ॥ १० ॥ ॥८॥ |
| | १.४७ |
| ऋ ८.५६.५[१.२] * * चिकितुर्हव्यवाट् स (कौ हव्यवाड् न) * | अचेत्य् अग्निश् चिकितिर् हव्यवाण् ण सुमद्रथः ॥ १ ॥ |
| ५.२४.१[१.२] ...भवा * | अग्ने त्वं नो अन्तम उत त्राता शिवो भुवो वरूथ्यः ॥ २ ॥ |
| ऋग्वेदे न स्तः | भगो न चित्रो अग्निर् महोनां दधाति रत्नम् ॥ ३ ॥ |
| | विश्वस्य प्र स्तोभ पुरो वा सन् यदि वेह नूनम् ॥ ४ ॥ |
| १०.१७२.४ * * स्वसुस्तमः... | उषा अप स्वसुष् टमः सं वर्तयति वर्तनिं सुजातता ॥ ५ ॥ |
| १०.१५७.१* * * *सीषधामेन्द्रश्... | इमा नु कं भुवना सीषधेमेन्द्रश् च विश्वे च देवाः ॥ ६ ॥ |
| ऋग्वेदे नास्ति। कौ ...कृणुही * | ऊर्जा मित्रो वरुणः पिन्वतेळाः पीवरीम् इषं कृणुहि न इन्द्र ॥ ७ ॥ |
| ऋग्वेदे नास्ति | वि स्रुतयो यथा पथा इन्द्र त्वद् यन्तु रातयः ॥ ८ ॥ |
| ६.१७.१५ | अया वाजं देवहितं सनेम मदेम शतहिमाः सुवीराः ॥ ९ ॥ |
| ऋग्वेदे नास्ति | इन्द्रो विश्वस्य राजति ॥ १० ॥ ॥९॥ |
| | १.४८ |
| ऋ २.२२.१ ...तृपत् * ...यथावशत् | त्रिकद्रुकेषु महिषो यवाशिरं तुविशुष्मस् तृम्पत् सोमम् अपिबद् विष्णुना सुतं यथावशम् । |
| ...स एनं * [...इन्द्रम् * * सत्यमिन्द्रं सत्य इन्दुः । कौ | स ईं ममाद महि कर्म कर्तवे महाम् उरुं सैनं सश्चद् देवो देवं सत्य इन्दुः सत्यम् इन्द्रः ॥ १ ॥ |
| ऋग्वेदे नास्ति। शौ ७.२२.१ | अयं सहस्रमानवो दृशः कवीनां मतिर् ज्योतिर् विधर्म । |
| शौ ७.२२.२ | ब्रध्नः समीचीर् उषसः सम् ऐरयद् अरेपसः सचेतसः स्वसरे मन्युमन्तश् चिता गोः ॥ २ ॥ |
| ऋ १.१३०.१ ...विदथानीव (एवं कौ) * अस्तं... | एन्द्र याह्य् उप नः परावतो नायम् अच्छा विदथान् एव सत्पतिर् अस्ता राजेव सत्पतिः । |
| * * वयं प्रयस्वन्तः सुते सचा * * * | हवामहे त्वा प्रयस्वन्तः सुतेष्व् आ पुत्रासो न पितरं वाजसातये मंहिष्ठं वाजसातये ॥ ३ ॥ |
| ८.९७.१३ अप्रतिष्कुतं (एवं कौ) शवांसि(भूरि | तम् इन्द्रं जोहवीमि मघवानम् उग्रं सत्रा दधानम् अप्रतिष्कुतं श्रवांसि भूरि । |
| ...ववर्तद् * * * [नास्ति) | मंहिष्ठो गीर्भिर् आ च यज्ञियो ववर्त राये नो विश्वा |

| | |
|---|---|
| | सुपथा कृणोतु वज्री ॥ ४ ॥ |
| ऋग्वेदे नास्ति | अभि त्यं देवं सवितारम् ओण्योः कविक्रतुम् अर्चामि |
| | सत्यसवं रत्नधाम् अभि प्रियं मतिम् । |
| | ऊर्ध्वा यस्यामतिर् भा अदिद्युतत् सवीमनि हिरण्यपाणिर् |
| | अमिमीत सुक्रतुः कृपा स्वः ॥ ५ ॥ |
| २.२२.४ | तव त्यन् नर्यं नृतो ऽप इन्द्र प्रथमं पूर्व्यं दिवि प्रवाच्यं कृतम् । |
| यद्... । कौ...असु * * | यो देवस्य शवसा प्रारिणा असुं रिणन्न् अपः । |
| भुवद् * * आदेवम् * विदाद् * * | भुवो विश्वम् अभ्य् अदेवम् ओजसा विदेद् ऊर्जं शतक्रतुर् |
| विदाद् * | विदेद् इषम् ॥ ६ ॥ |
| १.१३९.१ ...तच् * | अस्तु श्रौषट् पुरो अग्निं धिया दध आ नु त्यच् छर्धो |
| | दिव्यं वृणीमह इन्द्रवायू वृणीमहे । |
| ... विवस्वति * संदायि नव्यसी | यद् ध क्राणा विवस्वते नाभा संदाय नव्यसे । |
| * * सू न उप यन्तु * * अच्छा ... | अध प्र नूनम् उप यन्ति धीतयो देवं अच्छ न धीतयः |
| | ॥ ७ ॥ |
| ५.८७.१ | प्र वो महे मतयो यन्तु विष्णवे मरुत्वते गिरिजा एवया- |
| | मरुत् । |
| | प्र शर्धाय प्रयज्यवे सुखादये तवसे भन्ददिष्टये धुनि- |
| | व्रताय शवसे ॥ ८ ॥ |
| ९.१११.१ | अया रुचा हरिण्या पुनानो विश्वा द्वेषांसि तरति |
| स्वयुग्वभिः * * स्वयुग्वभिः | सयुग्वभिः सूरो न सयुग्वभिः । |
| * सुतस्य ... | धारा पृष्ठस्य रोचते पुनानो अरुषो हरिः । |
| * * * परियात्य् ... | विश्वा यद् रूपा परियास्य् ऋक्वभिः सप्तास्येभिर् |
| | ऋक्वभिः ॥ ९ ॥ |
| १.१२७.१ * * * * वसुं * सहसो | अग्निं होतारं मन्ये दास्वन्तं वसोः सूनुं सहसा जातवेदसं |
| [(एवं कौ ) * | विप्रं न जातवेदसम् । |
| | य ऊर्ध्वया स्वध्वरो देवो देवाच्या कृपा । |
| * * अनु वष्टि शोचिषाजुह्वानस्य | घृतस्य विभ्राष्टिम् अनु शुक्रशोचिष आजुह्वानस्य |
| | सर्पिषः ॥ १० ॥ ॥१०॥ ॥४॥ ॥२॥ |
| | १.४९ |
| ऋ ९.६१.१० * * * अन्धसो (एवं कौ ) | उच्चा ते जातम् अन्धसा दिवि सद् भूम्य् आ ददे । |
| [ * षद् ... | उग्रं शर्म महि श्रवः ॥ १ ॥ |
| ९.१.१ | स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया । |
| | इन्द्राय पातवे सुतः ॥ २ ॥ |
| ९.६५.१० | वृषा पवस्व धारया मरुत्वते च मत्सरः । |
| | विश्वा दधान ओजसा ॥ ३ ॥ |
| ९.६१.१९ | यस् ते मदो वरेण्यस् तेना पवस्वान्धसा । |

| | |
|---|---|
| | देवावीर् अघशंसहा ॥ ४ ॥ |
| ९.३३.४ | तिस्रो वाच उद् ईरते गावो मिमन्ति धेनवः । |
| | हरिर् एति कनिक्रदत् ॥ ५ ॥ |
| ९.६४.२२ | इन्द्रायेन्दो मरुत्वते पवस्व मधुमत्तमः । |
| ऋतस्य * * | अर्कस्य योनिम् आसदम् ॥ ६ ॥ |
| ९.६२.४ | असाव्य् अंशुर् मदायाप्सु दक्षो गिरिष्ठाः । |
| | श्येनो न योनिम् आसदत् ॥ ७ ॥ |
| ९.२५.१ | पवस्व दक्षसाधनो देवेभ्यः पीतये हरे । |
| | मरुद्भ्यो वायवे मदः ॥ ८ ॥ |
| ९.१८.१ * सुवानो…अक्षाः | परि स्वानो गिरिष्ठाः पवित्रे सोमो अक्षरत् । |
| | मदेषु सर्वधा असि ॥ ९ ॥ |
| ९.९.१ | परि प्रिया दिवः कविर् वयांसि नप्त्योर् हितः । |
| सुवानो * * | स्वानैर् याति कविक्रतुः ॥ १० ॥ ॥१॥ |

## १.५०

| | |
|---|---|
| ऋ ९.३२.१ …मघोनः | प्र सोमासो मदच्युतः श्रवसे नो मघोनाम् । |
| | सुता विदथे अक्रमुः ॥ १ ॥ |
| ९.३३.१ * * * ऽपां * यन्त्य् * | प्र सोमासो विपश्चितो ऽपो नयन्त ऊर्मयः । |
| …इव (एवं कौ ) | वनानि महिषा इवा ॥ २ ॥ |
| ९.६१.२८ | पवस्वेन्दो वृषा सुतः कृधी नो यशसो जने । |
| | विश्वा अप द्विषो जहि ॥ ३ ॥ |
| ९.६५.४[१.२] | वृषा ह्य् असि भानुना द्युमन्तं त्वा हवामहे । |
| * स्वाध्यः | पवमान स्वर्दृशम् ॥ ४ ॥ |
| ९.६४.१० …मती | इन्दुः पविष्ट चेतनः प्रियः कवीनां मतिः । |
| | सृजद् अश्वं रथीर् इव ॥ ५ ॥ |
| ९.६४.४ | असृक्षत प्र वाजिनो गव्या सोमासो अश्वया । |
| | शुक्रासो वीरयाशवः ॥ ६ ॥ |
| ९.६३.२२ | पवस्व देव आयुषग् इन्द्रं गच्छतु ते मदः । |
| | वायुम् आ रोह धर्मणा ॥ ७ ॥ |
| ९.६१.१६ | पवमानो अजीजनद् दिवश् चित्रं न तन्यतुम् । |
| | ज्योतिर् वैश्वानरं बृहत् ॥ ८ ॥ |
| ९.१०.४ * सुवानास… | परि स्वानास इन्दवो मदाय बर्हणा गिरा । |
| सुता * * | मधो अर्षन्ति धारया ॥ ९ ॥ |
| ९.१४.१ | परि प्रासिष्यदत् कविः सिन्धोर् ऊर्माव् अधि श्रितः । |
| कारं… | कारुं बिभ्रत् पुरुस्पृहम् ॥ १० ॥ ॥२॥ |

१.५१

| | |
|---|---|
| ऋ ९.६१.१३[१.२] | उपो षु जातम् अप्तुरं गोभिर् भङ्गं परिष्कृतम् । |
| | इन्दुं देवा अयासिषुः ॥ १ ॥ |
| ९.४०.१ | पुनानो अक्रमीद् अभि विश्वा मृधो विचर्षणिः । |
| | शुम्भन्ति विप्रं धीतिभिः ॥ २ ॥ |
| ९.६२.१९ | आविशन् कलशं सुतो विश्वा अर्षन्न् अभि श्रियः । |
| शूरो न गोषु तिष्ठति | इन्दुर् इन्द्राय धीयते ॥ ३ ॥ |
| ९.३६.१ | असर्जि रथ्यो यथा पवित्रे चम्वोः सुतः । |
| | कार्ष्मन् वाजी न्य् अक्रमीत् ॥ ४ ॥ |
| ९.४१.१ * ये... | प्र यद् गावो न भूर्णयस् त्वेषा अयासो अक्रमुः । |
| | घ्नन्तः कृष्णाम् अप त्वचम् ॥ ५ ॥ |
| ९.६३.२४ | अपघ्नन् पवसे मृधः क्रतुवित् सोम मत्सरः । |
| | नुदस्वादेवयुं जनम् ॥ ६ ॥ |
| ९.६३.७ | अया पवस्व धारया यया सूर्यम् अरोचयः । |
| | हिन्वानो मानुषीर् अपः ॥ ७ ॥ |
| ९.६१.२२ | स पवस्व य आविथेन्द्रं वृत्राय हन्तवे । |
| | वव्रिवांसं महीर् अपः ॥ ८ ॥ |
| ९.६१.१ * वीती (एवं कौ) ... | अया पीती परि स्रव यस् त इन्दो मदेष्व् आ । |
| * * नव (एवं कौ) | अवाहन् नवतीर् नवा ॥ ९ ॥ |
| ९.५२.१ * द्युक्षः सनद्रयिर्... | परि द्युक्षं सनद् रयिं भरद् वाजं नो अन्धसा । |
| सुवानो... | स्वानो अर्ष पवित्र आ ॥ १० ॥ ॥३॥ |

१.५२

| | |
|---|---|
| ऋ ९.२.६ | अचिक्रदद् वृषा हरिर् महान् मित्रो न दर्शतः । |
| * * रोचते | सं सूर्येण दिद्युते ॥ १ ॥ |
| ९.६५.२८ | आ ते दक्षं मयोभुवं वह्निम् अद्या वृणीमहे । |
| | पान्तम् आ पुरुस्पृहम् ॥ २ ॥ |
| ९.५१.१ ...सृज (कौ नय) | अध्वर्यो अद्रिभिः सुतं सोमं पवित्र आ नया । |
| पुनीहीन्द्राय * | पुनाहीन्द्राय पातवे ॥ ३ ॥ |
| ९.५८.१ | तरत् स मन्दी धावति धारा सुतस्यान्धसः । |
| | तरत् स मन्दी धावति ॥ ४ ॥ |
| ९.६३.१ | आ पवस्व सहस्रिणं रयिं सोम सुवीर्यम् । |
| अस्मे (एवं कौ) * धारय (एवं कौ) | अस्मै श्रवांसि धारया ॥ ५ ॥ |
| ९.२३.२ | अनु प्रत्नास आयवः पदं नवीयो अक्रमुः । |
| | रुचे जनन्त सूर्यम् ॥ ६ ॥ |
| ९.६५.१९ | अर्षा सोम द्युमत्तमो ऽभि द्रोणानि रोरुवत् । |

| | |
|---|---|
| * श्येनो न योनिमा | सीदन् योनौ वनेष्व् आ ॥ ७ ॥ |
| ९.६४.१ | वृषा सोम द्युमं असि वृषा देव वृषव्रतः । |
| ...दधिषे | वृषा धर्माणि दध्रिषे ॥ ८ ॥ |
| ९.६४.१३ | इषे पवस्व धारया मृज्यमानो मनीषिभिः । |
| | इन्दो रुचाभि गा इहि ॥ ९ ॥ |
| ९.६.१ | मन्द्रया सोम धारया वृषा पवस्व देवयुः । |
| अव्यो वारेष्व् * | अव्या वारेभिर् अस्मयुः ॥ १० ॥ |
| ९.४७.१ * सोमः * महश्चिदभ्यव- | अया सोम सुकृत्यया महान् सन्न् अभ्य् अवर्धथाः । |
| * उद् वृषायते [र्धत | मन्दान इद् वृषायसे ॥ ११ ॥ |
| ९.६२.१० | अयं विचर्षणिर् हितः पवमानः स चेतति । |
| | हिन्वान आप्यं बृहत् ॥ १२ ॥ |
| ९.४४.१ * ण * * तन * * * * | प्र न इन्दो महे तु न ऊर्मिं न बिभ्रद् अर्षसि । |
| | अभि देवं अयास्यः ॥ १३ ॥ |
| ९.६१.२५ | अपघ्नन् पवते मृधो ऽप सोमो अराव्णः । |
| | गच्छन्न् इन्द्रस्य निष्कृतम् ॥ १४ ॥ ॥४॥ |

१.५३

| | |
|---|---|
| ऋ ९.१०७.४ | पुनानः सोम धारयापो वसानो अर्षसि । |
| ...देव | आ रत्नधा योनिम् ऋतस्य सीदस्य् उत्सो देवो हिरण्ययः ॥ १ ॥ |
| १ परीतः... | परीतो षिञ्चता सुतं सोमो य उत्तमं हविः । |
| | दधन्वान् यो नर्यो अप्स्व् अन्तर् आ सुषाव सोमम् अद्रिभिः ॥ २ ॥ |
| १० * * सुवानो... | आ सोम स्वानो अद्रिभिस् तिरो वाराण्य् अव्यया । |
| ...दधिषे | जनो न पुरि चम्वोर् विशद् धरिः सदो वनेषु दध्रिषे ॥३॥ |
| १२ | प्र सोम देववीतये सिन्धुर् न पिप्ये अर्णसा । |
| | अंशोः पयसा मदिरो न जागृविर् अच्छा कोशं मधुश्चुतम् ॥ ४ ॥ |
| ८ * * सुवाणः... | सोम उ ष्वाणः सोतृभिर् अधि ष्णुभिर् अवीनाम् । |
| | अश्वयेव हरिता याति धारया मन्द्रया याति धारया ॥५॥ |
| १९ | तवाहं सोम रारण सख्य इन्दो दिवेदिवे । |
| | पुरूणि बभ्रो नि चरन्ति माम् अव परिधींर् अति तं इहि ॥६॥ |
| २१ * सुहस्त्य... | मृज्यमानः सुहस्त्या समुद्रे वाचम् इन्वसि । |
| | रयिं पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहं पवमानाभ्य् अर्षसि ॥ ७ ॥ |
| १४ | अभि सोमास आयवः पवन्ते मद्यं मदम् । |
| * विष्टपि * * स्वर्विदः | समुद्रस्याधि विष्टपे मनीषिणो मत्सरासो मदच्युतः ॥८॥ |

| | |
|---|---|
| ६ … अव्यो वारे * * | पुनानः सोम जागृविर् अव्या वारैः परि प्रियः । |
| * * * ऽङ्गिरस्तमो … । कौ…णः | त्वं विप्रो अभवो ऽङ्गिरस्तम मध्वा यज्ञं मिमिक्ष नः ॥ ९ ॥ |
| २५ | पवमाना असृक्षत पवित्रम् अति धारया । |
| | मरुत्वन्तो मत्सरा इन्द्रिया हया मेधाम् अभि प्रयांसि च ॥ १० ॥ |
| २३ * वाजसातये * * काव्या | पवस्व वाजसातमो ऽभि विश्वानि वार्या । |
| * समुद्रं प्रथमो वि धारयो * * * । | त्वं समुद्रः प्रथमे विधर्मन् देवेभ्यः सोम मत्सरः ॥ ११ ॥ |
| १७ [कौ * * * विधर्मं … | इन्द्राय पवते मदः सोमो मरुत्वते सुतः । |
| | सहस्रधारो अत्य् अव्यम् अर्षति तम् ईं मृजन्त्य् आयवः ॥ १२ ॥ ॥५॥ |

१.५४

| | |
|---|---|
| ऋ ९.८७.१ | प्र तु द्रव परि कोशं नि षीद नृभिः पुनानो अभि वाजम् अर्ष । |
| | अश्वं न त्वा वाजिनं मर्जयन्तो अच्छा बर्ही रशनाभिर् नयन्ति ॥ १ ॥ |
| ९.९७.७ | प्र काव्यम् उशनेव ब्रुवाणो देवो देवानां जनिमा विवक्ति । |
| | महिव्रतः शुचिबन्धुः पावकः पदा वराहो अभ्य् एति रेभन् ॥ २ ॥ |
| ९.९७.३४ | तिस्रो वाच ईरयति प्र वह्निर् ऋतस्य धीतिं ब्रह्मणो मनीषाम् । |
| | गावो यन्ति गोपतिं पृच्छमानाः सोमं यन्ति मतयो वावशानाः ॥ ३ ॥ |
| ९.९७.१ | अस्य प्रेषा हेमना पूयमानो देवो देवेभिः सम् अपृक्त रसम् । |
| …पशुमान्ति * | सुतः पवित्रं पर्य् एति रेभन् मितेव सद्म पशुमन्ति होता ॥ ४ ॥ |
| ९.९७.४० । कौ * * * विधर्मं … राजा | अक्रान् समुद्रः प्रथमे विधर्मन् जनयन् प्रजा भुवनस्य गोपाः । |
| सुवान इन्दुः | वृषा पवित्रे अधि सानो अव्ये बृहत् सोमो वावृधे स्वानो अद्रिः ॥ ५ ॥ |
| ९.९५.१ | कनिक्रन्ति हरिर् आ सृज्यमानः सीदन् वनस्य जठरे पुनानः । |
| …गा * मतीर् * | नृभिर् यतः कृणुते निर्णिजं गाम् अतो मतिं जनयत स्वधाभिः ॥ ६ ॥ |

| | |
|---|---|
| ९.८७.४ ...वृष्णे * * | एष स्य ते मधुमं इन्द्र सोमो वृषा वृष्णः परि पवित्रे अक्षाः । |
| सहस्रसाः शतसा... | सहस्रदाः शतदा भूरिदावा शश्वत्तमं बर्हिर् आ वाज्य् अस्थात् ॥ ७ ॥ |
| ९.९६.१३ ...साना | पवस्व सोम मधुमं ऋतावापो वसानो अधि सानो अव्ये । |
| * * * सीद * * * | अव द्रोणानि घृतवन्ति रोह मदिन्तमो मत्सर इन्द्रपानः ॥ ८ ॥ |
| ९.९६.५ | सोमः पवते जनिता मतीनां जनिता दिवो जनिता पृथिव्याः । |
| | जनिताग्नेर जनिता सूर्यस्य जनितेन्द्रस्य जनितोत विष्णोः ॥ ९ ॥ |
| ९.९०.२ ...आङ्गूषाणाम् * * | अभि त्रिपृष्ठं वृषणं वयोधाम अङ्गोषिणम अवावशन्त वाणीः । |
| ...सिन्धून् * * * | वना वसानो वरुणो न सिन्धुर् वि रत्नधा दयते वार्याणि ॥ १० ॥ ॥६॥ |
| | १.५५ |
| ऋ ९.९६.१ | प्र सेनानीः शूरो अग्रे रथानां गव्यन्न् एति हर्षते अस्य सेना । |
| | भद्रान् कृण्वन्न इन्द्रहवान् सखिभ्य आ सोमो वस्त्रा रभसानि दत्ते ॥ १ ॥ |
| ९.९७.३१ ...वारान् * * * अव्यान् | प्र ते धारा मधुमतीर् असृग्रन् वारं यत् पूतो अत्येष्य् अव्यम् । |
| ...जज्ञानः * * | पवमान पवसे धाम गोनां जनयन् सूर्यम् अपिन्वो अर्कैः ॥ २ ॥ |
| ९.९७.४ ...हिनोत (एवं कौ) * धनाय (एवं कौ) | प्र गायताभ्य् अर्चाम देवान् सोमं हिनोता महते धनाया । |
| * पवाते ...सीदाति * देवयुर्नः | स्वादुः पवताम् अति वारम् अव्यम् आ सीदतु कलशं देव इन्दुः ॥ ३ ॥ |
| ९.९०.१ सनिष्यन्न् | प्र हिन्वानो जनिता रोदस्यो रथो न वाजं सनिषन्न् अयासीत् । |
| | इन्द्रं गच्छन्न् आयुधा संशिशानो विश्वा वसु हस्तयोर् आदधानः ॥ ४ ॥ |
| ९.९७.२२ ...ज्येष्ठस्य वा धर्मणि क्षोर् | तक्षद् यदी मनसो वेनतो वाग् ज्येष्ठस्य धर्मं द्युक्षोर् अनीके । |
| | आद् ईम् आयन् वरम् आ वावशाना जुष्टं पतिं कलशे |

गाव इन्दुम् ॥ ५ ॥

९.९३.१
साकमुक्षो मर्जयन्त स्वसारो दश धीरस्य धीतयो धनुत्रीः ।
हरिः पर्य् अद्रवज् जाः सूर्यस्य द्रोणं ननक्षे अत्यो न वाजी ॥ ६ ॥

९.९७.१०
इन्दुर् वाजी पवते गोन्योघा इन्द्रे सोमः सह इन्वन् मदाय ।
* * * * अरातीर्...
हन्ति रक्षो बाधते पर्य् अरातिं वरिवः कृण्वन् वृजनस्य राजा ॥ ७ ॥

९.९४.१ ...सूर्ये
अधि यद् अस्मिन् वाजिनीव शुभः स्पर्धन्ते धियः सूरे न विशः ।
* * * कवीयन्...
अपो वृणानः पवते कवीयान् व्रजं न पशुवर्धनाय मन्म ॥ ८ ॥

९.९७.४१
महत् तत् सोमो महिषश् चकारापां यद् गर्भो ऽवृणीत देवान् ।
अदधाद् इन्द्रे पवमान ओजो ऽजनयत् सूर्ये ज्योतिर् इन्दुः ॥ ९ ॥

९.९५.३
अपाम् इवेद् ऊर्मयस् तर्तुराणाः प्र मनीषा ईरते सोमम् अच्छ ।
नमस्यन्तीर् उप च यन्ति सं चा च विशन्त्य् उशतीर् उशन्तम् ॥ १० ॥

९.९७.५२ ... धन्व (एवं कौ)
अया पवा पवस्वैना वसूनि मांश्चत्व इन्दो सरसि प्र धन्वा ।
* * अत्र * * जूतः पुरुमेधश्...
* दात्
ब्रध्नश् चिद् यस्य वातो न जूतिं पुरुमेधाश् चित् तकवे नरं धात् ॥ ११ ॥

९.९१.१ ...प्रथमो मनीषी
...ऽजन्ति * सदनान्य्
असर्जि वक्वा रथ्ये यथाजौ धिया मनोता प्रथमा मनीषा ।
दश स्वसारो अधि सानो अव्ये मृजन्ति वह्निं सदनेष्व् अच्छ ॥ १२ ॥ ॥७॥

१.५६

ॠ ९.१०१.१
पुरोजिती वो अन्धसः सुताय मादयित्नवे ।
अप श्वानं श्नथिष्टन सखायो दीर्घजिह्व्यम् ॥ १ ॥

९.१०१.७
अयं पूषा रयिर् भगः सोमः पुनानो अर्षति ।
पतिर् विश्वस्य भूमनो व्य् अख्यद् रोदसी उभे ॥ २ ॥

९.९९.१ ...धनुस्तन्वन्ति *
शुक्रां वयन्त्य् * निर्णिजं ...
आ हर्यताय धृष्णवे धनुष् टन्वन्ति पौंस्यम् ।
शुक्रा वि यन्त्य् असुराय निर्णिजे विपाम् अग्रे महीयुवः ॥ ३ ॥

| | |
|---|---|
| ९.९८.७ | परि त्यं हर्यतं हरिं बभ्रुं पुनन्ति वारेण । |
| | यो देवान् विश्वं इत् परि मदेन सह गच्छति ॥ ४ ॥ |
| ९.१०१.४ | सुतासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मन्दिनः । |
| कौ * अक्षरं... | पवित्रवन्तो अक्षरन् देवान् गच्छन्तु वो मदाः ॥ ५ ॥ |
| ऋ ९.१०१.१० | सोमाः पवन्त इन्दवो ऽस्मभ्यं गातुवित्तमाः । |
| * सुवाना ... | मित्राः स्वाना अरेपसः स्वाध्यः स्वर्विदः ॥ ६ ॥ |
| ९.९८.१ अभि ...पुरुस्पृहम् | अभी नो वाजसातमं रयिम् अर्ष शतस्पृहम् । |
| ...विभ्वासहम् | इन्दो सहस्रभर्णसं तुविद्युम्नं विभासहम् ॥ ७ ॥ |
| ९.१००.१ | अभी नवन्ते अद्रुहः प्रियम् इन्द्रस्य काम्यम् । |
| | वत्सं न पूर्व आयुनि जातं रिहन्ति मातरः ॥ ८ ॥ |
| ९.१०१.१३ * सुन्वानस्यान्धसो * } | प्र सुन्वानायान्धसो मर्तो न वष्ट तद् वचः । |
| * वृत ... } | अप श्वानम् अराधसं हता मखं न भृगवः ॥ ९ ॥ ॥८॥ |

## १.५७

| | |
|---|---|
| ऋ ९.७५.१ | अभि प्रियाणि पवते चनोहितो नामानि यह्वो अधि येषु वर्धते । |
| | आ सूर्यस्य बृहतो बृहन्न् अधि रथं विष्वञ्चम् अरुहद् विचक्षणः ॥ १ ॥ |
| ९.७९.१ .. सुवानासो * दिवेषु | अचोदसो नो धन्वन्त्व् इन्दवः प्र स्वानासो बृहद् देवेषु हरयः । |
| * च नशन्त इषो * * नशन्त सनिषन्त | वि चिद् अश्नाना इषयो अरातयो ऽर्यो नः सन्तु सनिषन्तु नो धियः ॥ २ ॥ |
| ९.७७.१ | एष प्र कोशे मधुमं अचिक्रदद् इन्द्रस्य वज्रो वपुषो वपुष्टमः । |
| वपुष्टरः | |
| ...पयसेव धेनवः। कौ अभ्यृ३तस्य... { | अभीम् ऋतस्य सुदुघा घृतश्चुतो वाश्रा अर्षन्ति पयसा च धेनवः ॥ ३ ॥ |
| ९.८६.१६ | प्रो अयासीद् इन्दुर् इन्द्रस्य निष्कृतं सखा सख्युर् न प्र मिनाति संगिरम् । |
| ...शतयाम्ना | मर्य इव युवतिभिः सम् अर्षति सोमः कलशे शतयामना पथा ॥ ४ ॥ |
| ९.७६.१ * * * कृत्व्यो (एवं कौ) ... | धर्ता दिवः पवते कृत्वियो रसो दक्षो देवानाम् अनुमाद्यो नृभिः । |
| कृणुते * * | हरिः सृजानो अत्यो न सत्वभिर् वृथा पाजांसि कृणुषे नदीष्व् आ ॥ ५ ॥ |
| ९.८६.१९ ...अह्नः प्रतरीतोषसो * { | वृषा मतीनां पवते विचक्षणः सोमो अह्नां प्रतरीतोषसां दिवः । |

| | |
|---|---|
| क्राणा * * अवीवशद्... | प्राणा सिन्धूनां कलशां अचिक्रदद् इन्द्रस्य हार्द्य् आविशन् मनीषिभिः ॥ ६ ॥ |
| ९.८२.१ | असावि सोमो अरुषो वृषा हरी राजेव दस्मो अभि गा अचिक्रदत् । |
| * * पर्य् एत्य्... <br> * आसदम् | पुनानो वारम् अत्य् एष्य् अव्ययं श्येनो न योनिं घृतवन्तम् आसदत् ॥ ७ ॥ |
| ९.६८.१ | प्र देवम् अच्छा मधुमन्त इन्दवो ऽसिष्यदन्त गाव आ न धेनवः । |
| | बर्हिषदो वचनावन्त ऊधभिः परिस्रुतम् उस्रिया निर्णिजं धिरे ॥ ८ ॥ |
| ९.७०.१ ...दुदुहे * * <br> पूर्व्ये * | त्रिर् अस्मै सप्त धेनवो दुदुह्रिरे सत्याम् आशिरं परमे व्योमनि । |
| | चत्वार्य् अन्या भुवनानि निर्णिजे चारूणि चक्रे यद् ऋतैर् अवर्धत ॥ ९ ॥ |
| ९.८५.१ ...स्रवापामीवा (एवं कौ) * * | इन्द्राय सोम सुषुतः परि स्रवा अपामीवा भवतु रक्षसा सह । |
| | मा ते रसस्य मत्सत द्वयाविनो द्रविणस्वन्त इह सन्त्व् इन्दवः ॥ १० ॥ |
| ९.८६.४३ ...मधुनाभ्य् * | अञ्जते व्य् अञ्जते सम् अञ्जते क्रतुं रिहन्ति मध्वाभ्य् अञ्जते । |
| | सिन्धोर् उच्छ्वासे पतयन्तम् उक्षणं हिरण्यपावाः पशुम् |
| आसु * | अप्सु गृभ्णते ॥ ११ ॥ |
| ९.८३.१ | पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस् पते प्रभुर् गात्राणि पर्य् एषि विश्वतः । |
| | अतप्ततनूर् न तद् आमो अश्नुते शृतास इद् वहन्तः |
| तत्समाशत | सं तद् आशत ॥ १२ ॥ ॥९॥ |

१.५८

| | |
|---|---|
| ऋ ९.१०६.१ | इन्द्रम् अच्छ सुता इमे वृषणं यन्तु हरयः । |
| श्रुष्टी... | श्रुष्टे जातास इन्दवः स्वर्विदः ॥ १ ॥ |
| ९.१०६.४ | प्र धन्वा सोम जागृविर् इन्द्रायेन्दो परि स्रव । |
| ...भरा * | द्युमन्तं शुष्मम् आ भर स्वर्विदम् ॥ २ ॥ |
| ९.१०४.१ | सखाय आ नि षीदत पुनानाय प्र गायत । |
| | शिशुं न यज्ञैः परि भूषत श्रिये ॥ ३ ॥ |
| ९.१०५.१ | तं वः सखायो मदाय पुनानम् अभि गायत । |
| * * यज्ञैः... | शिशुं न हव्यैः स्वदयन्त गूर्तिभिः ॥ ४ ॥ |
| ९.१०२.१ क्राणा... | प्राणा शिशुर् महीनां हिन्वन्न् ऋतस्य दीधितिम् । |

| | |
|---|---|
| ...ह्विता (एवं कौ) | विश्वा परि प्रिया भुवद् अध ह्विताानि ॥ ५ ॥ |
| ९.१०६.७ | पवस्व देववीतय इन्दो धाराभिर् ओजसा । |
| | आ कलशं मधुमान् सोम नः सदः ॥ ६ ॥ |
| ९.१०६.१० * * ऊर्मिणाव्यो... | सोमः पुनान ऊर्मिणाव्यं वारं वि धावति । |
| | अग्रे वाचः पवमानः कनिक्रदत् ॥ ७ ॥ |
| ९.१०३.१ ...उद्यतम् | प्र पुनानाय वेधसे सोमाय वच उच्यते । |
| | भृतिं न भरा मतिभिर् जुजोषते ॥ ८ ॥ |
| ९.१०५.४ ...धन्व (कौ धनिव) | गोमन् न इन्दो अश्ववत् सुतः सुदक्ष धनिवः । |
| * ते ...दीधरम् | शुचिं च वर्णम् अधि गोषु धारय ॥ ९ ॥ |
| ९.१०४.४ | अस्मभ्यं त्वा वसुविदम् अभि वाणीर् अनूषत । |
| | गोभिष् टे वर्णम् अभि वासयामसि ॥ १० ॥ |
| ९.१०६.१३ | पवते हर्यतो हरिर् अति ह्वरांसि रंह्या । |
| * अर्षन्... | अभ्य् अर्ष स्तोतृभ्यो वीरवद् यशः ॥ ११ ॥ |
| ९.१०३.३ * * * अव्यये वारे * | परि कोशं मधुश्चुतं सोमः पुनानो अर्षति । |
| ...सप्त * | अभि वाणीर् ऋषीणां सप्ता नूषत ॥ १२ ॥ ॥१०॥ |
| | १.५९ |
| ऋ ९.१०८.१ | पवस्व मधुमत्तम इन्द्राय सोम क्रतुवित्तमो मदः । |
| | महि द्युक्षतमो मदः ॥ १ ॥ |
| ९ ...देवयुः | अभि द्युम्नं बृहद् यश इषस् पते दिदीहि देव देवयुम् । |
| | वि कोशं मध्यमं युव ॥ २ ॥ |
| ७ | आ सोता परि षिञ्चताश्वं न स्तोमम् अप्तुरं रजस्तुरम् । |
| वनऋक्षम् * | वनप्रक्षम् उदप्रुतम् ॥ ३ ॥ |
| ११ ...दिवो दुहुः | एतम् उ त्यं मदच्युतं सहस्रधारं वृषभं दिवोदुहम् । |
| | विश्वा वसूनि बिभ्रतम् ॥ ४ ॥ |
| १३ | स सुन्वे यो वसूनां यो रायाम् आनेता य इडानाम् । |
| | सोमो यः सुक्षितीनाम् ॥ ५ ॥ |
| ३ * * * दैव्या... | त्वं ह्य् अङ्ग दैव्य पवमान जनिमानि द्युमत्तमः । |
| * घोषयः (कौ घोषयन्) | अमृतत्वाय घोषयत् ॥ ६ ॥ |
| ५ * * * * ऽव्यो... | एष स्य धारया सुतो ऽव्या वारेभिः पवते मदिंतमः । |
| ...इव (एवं कौ) | क्रीळन्न् ऊर्मिर् अपाम् इवा ॥ ७ ॥ |
| ६ * * अप्या अन्तरश्मनो... | य उस्रिया अपि या अन्तर् अश्मनि निर् गा अकृन्तद् ओजसा । |
| | अभि व्रजं तत्निषे गव्यम् अश्व्यं वर्मीव धृष्णव् आ रुज ॥ ८ ॥ ॥ ११ ॥ |

## २.१

| | |
|---|---|
| ऋ ७.२७.३ ...क्षमि विषुरूपं * अस्ति | इन्द्रो राजा जगतश् चर्षणीनाम् अधि क्षमा विश्वरूपं यद् अस्य । |
| ...उपस्तुतश् * | ततो ददाति दाशुषे वसूनि चोदद् राध उपस्तुतं चिद् अर्वाक् ॥ १ ॥ |
| १.९१.१८ | सं ते पयांसि सम् उ यन्तु वाजाः सं वृष्णियान्य् अभिमातिषाहः । |
| | आप्यायमानो अमृताय सोम दिवि श्रवांस्य् उत्तमानि धिष्व ॥ २ ॥ |
| १.९१.२२ | त्वम् इमा ओषधीः सोम विश्वास् त्वम् अपो अजनयस् त्वं गाः । |
| * आ ततन्थ ... ववर्थ (एवं कौ) | त्वम् आतनोर् उर्व् अन्तरिक्षं त्वं ज्योतिषा वि तमो ववर्था ॥ ३ ॥ |
| आ * * * यशो ... | मयि वर्चो अथो भगम् अथो यज्ञस्य यत् पयः । |
| | परमेष्ठी प्रजापतिर् दिवि द्याम् इव दृंहतु ॥ ४ ॥ |
| | इदं छन्दो जमदग्ने ऋतावृधो येन देवासो अमृतत्वम् आयन् । |
| | तत्र द्यावापृथिवी धत्तम् अस्मान् यत्र देवानां गुह्यं निधाम ॥ ५ ॥ |
| ऋ २.३५.३ | सम् अन्या यन्त्य् उप यन्त्य् अन्याः समानम् ऊर्वं नद्यः पृणन्ति । |
| तमू शुचिं (एवं कौ) * * * परि तस्थुर् | तमोषुचं शुचयो दीदिवांसम् अपां नपातम् उप यन्त्य् आपः ॥ ६ ॥ |
| ४.१.१६ * * * * धेनोस् * * मातुः परमाणि विन्दन् | ते मन्वत प्रथमं नाम गोनां त्रिः सप्त परमं नाम जानन् । |
| तज् * * * व्रा * भुवद् * * गोः | ता जानतीर् अभ्य् अनूषत क्षा आविर् भुवन्न् अरुणीर् यशसा गावः ॥ ७ ॥ |
| | सहर्षभाः सहवत्सा उद् एत विश्वा रूपाणि बिभ्रतीर् द्व्यूध्नीः । |
| | उरुः पृथुर् अयं वो अस्तु लोक इमा आपस् सुप्रपाणा इह स्त ॥ ८ ॥ |
| | आरत् सुपर्णः पततुम् आश्वानम् आशितं करत् । |

| | |
|---|---|
| | तीर्थानि सुप्रपाणानि सुगं गोषदनं करत् ॥ ९ ॥ |
| ऋ १.१.१ | अग्निम् ईळे पुरोहितं यज्ञस्य देवम् ऋत्विजम् । होतारं रत्नधातमम् ॥ १० ॥ ॥१॥ |
| | **२.२** |
| आ * * * सुभोजसौ ... | मन्ये वां द्यावापृथिवी सुभोजसा ये अप्रथेथाम् अमितम् अभि योजनम् । द्यावापृथिवी भवतं स्योने ते नो मुञ्चतम् अंहसः ॥ १ ॥ |
| आ यशो * * यशो मेन्द्रबृहस्पती | यशसा मा द्यावापृथिवी भगेनेन्द्रबृहस्पती । यशो भगस्य विन्दतु यशो मा प्रति मुच्यताम् । |
| आरण्यसंहितायां अहं भूयासम् उत्तमः इति न विद्यते | यशस्व्य् अस्याः संसदो ऽहं प्रवदिता स्याम् अहं भूयासम् उत्तमः ॥ २ ॥ |
| आ ...नो वचो * | प्रक्षस्य वृष्णो अरुषस्य नू महः प्र नु वोचो विदथा जातवेदसे । वैश्वानराय मतिर् नव्यसे शुचिः सोम इव पवते चारुर् अग्नये ॥ ३ ॥ |
| ऋ ६.५२.१४ * * * * यज्ञिया... | विश्वे देवा मम शृण्वन्तु यज्ञम् उभे रोदसी अपां नपाच् च मन्म । मा वो वचांसि परिचक्ष्याणि वोचं सुम्नेष्व् इद् वो अन्तम् आ वदेम ॥ ४ ॥ |
| ऋ ८.९२.२८ | एवा ह्य् असि वीरयुर् एवा शूर उत स्थिरः । एवा ते राध्यं मनः ॥ ५ ॥ |
| आ ...ईर्त्संति | आ प्रागाद् भद्रा युवतिर् अह्नः केतून् सम् ईर्त्सति । |
| आ * * * * * रात्री (उग्रं * * इति नास्ति) | अभूद् भद्रा निवेशनी विश्वस्य जगतो रात्रिर् उग्रं वाजिन्य् अक्रमीत् ॥ ६ ॥ |
| ऋ ३.२६.७ | अग्निर् अस्मि जन्मना जातवेदा घृतं मे चक्षुर् अमृतं म आसन् । |
| अर्कस्त्रिधातु * * ऽजस्रो घर्मो * * नाम | त्रिधातुर् अर्को रजसो विमानो अजस्रं ज्योतिर् हविर् अस्मि सर्वम् ॥ ७ ॥ |
| ऋ ३.५.५ पाति प्रियं रिपो... | पात्य् अग्निर् विपो अग्रं पदं वेः पाति यह्वश् चरणं सूर्यस्य । पाति नाभा सप्तशीर्षाणम् अग्निः पाति देवानाम् उपमादम् ऋष्वः ॥ ८ ॥ |
| | भ्राजन्त्य् अग्ने समिधान दीदिवो जिह्वा चरत्य् अन्तर् आसनि । स त्वं नो अग्ने पयसा वसुविद् रयिं वर्चो दृशे दाः ॥ ९ ॥ ॥२॥ |

| | |
|---|---|
| | २.३ |
| ऋ १.३२.१ | इन्द्रस्य नु वीर्याणि प्र वोचं यानि चकार प्रथमानि वज्री। |
| | अहन्न् अहिम् अन्व् अपस् ततर्द प्र वक्षणा अभिनत् |
| | पर्वतानाम् ॥ १ ॥ |
| १०.१७०.१ | विभ्राड् बृहत् पिबतु सोम्यं मध्व् आयुर् दधद् यज्ञपताव् |
| | अविहुतम् । |
| * * * * * पुपोष पुरुधा | वातजूतो यो अभिरक्षति त्मना प्रजाः पिपर्ति बहुधा |
| | वि राजति ॥ २ ॥ |
| ऋग्वेदे नास्ति | वसन्त इन् नु रन्त्यो ग्रीष्म इन् नु रन्त्यः । |
| | वर्षाण्य् अनु शरदो हेमन्तः शिशिर इन् नु रन्त्यः ॥ ३ ॥ |
| १.१८७.५ | तव त्ये पितो ददतस् तव स्वादिष्ठ ते पितो । |
| * स्वाद्मानो ... | प्र स्वाद्मानो रसानां तुविग्रीवा इवेरते ॥ ४ ॥ |
| ८.६१.१५ | इन्द्रः स्फड् उत वृत्रहा परस्पा नो वरेण्यः। |
| | स नो रक्षिषच् चरमं स मध्यमं स पश्चात् पातु |
| | नः पुरः ॥ ५ ॥ |
| १०.९०.१ | सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् । |
| * * विश्वतो ... | स भूमिं सर्वतो वृत्वात्य् अतिष्ठद् दशाङ्गुलम् ॥ ६ ॥ |
| ४ | त्रिपाद् ऊर्ध्व उद् ऐत् पुरुषः पादो ऽस्येहाभवत् पुनः। |
| ततः ... साशनानशने * | तथा विष्वङ् व्य् अक्रामद् अशनानशने अभि ॥ ७ ॥ |
| २[१.२] * * * यद् भूतं * * भव्यं | पुरुष एवेदं सर्वं भव्यं यच् च भाव्यम् । |
| ३[३.४] * * विश्वा ... | पादो ऽस्य सर्वा भूतानि त्रिपाद् अस्यामृतं दिवि ॥ ८ ॥ |
| ३[१.२] एतावान् * * अतो ... | तावान् अस्य महिमा ततो ज्यायांश् च पूरुषः । |
| २[३.४] | उतामृतत्वस्येशानो यद् अन्नेनातिरोहति ॥ ९ ॥ |
| ५ तस्माद् ... | ततो विराड् अजायत विराजो अधि पूरुषः । |
| | स जातो अत्य् अरिच्यत पश्चाद् भूमिम् अथो पुरः |
| | ॥ १० ॥ ॥ ३ ॥ |
| | २.४ |
| ऋ १०.९०.६ | यत् पुरुषेण हविषा देवा यज्ञम् अतन्वत । |
| * अस्यासीद् ... | वसन्त एषाम् आसीद् आज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद् धविः |
| | ॥ १ ॥ |
| १०.९०.१५ | सप्तास्यासन् परिधयस् त्रिः सप्त समिधः कृताः। |
| ... पशुम् | देवा यद् यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं हविः ॥ २ ॥ |
| आ ... हरितौ * | हरी त इन्द्र श्मश्रूण्य् उतो ते हरिता हरी । |
| * * * कवयः ... | तं त्वा स्तुवन्ति कारवः पुरुषासो वनर्गवः ॥ ३ ॥ |
| | ऋष्यास इन्द्र भुङ् इति मघवन्न् इन्द्र भुङ् इति। |
| | इन्द्रस् त्रसरपूतः ॥ ४ ॥ |

यद् वर्चो हिरण्यस्य यद् वा वर्चो गवाम् उत ।
सत्यस्य ब्रह्मणो वर्चस् तेन मा सं सृजामसि ॥ ५॥
ऋ १.११५.१ — चित्रं देवानाम् उद् अगाद् अनीकं चक्षुर् मित्रस्य वरुणस्याग्नेः ।
आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस् तस्थुषश् च ॥ ६ ॥
यद् इतस् तन्वो मम दोषा रसस्य भेजिरे ।
नराशंसेन सोमेनाहं तत् पुनर् आ ददे ।
युष्मद् अप्सरसस् परि ॥ ७ ॥
यस्येदम् आ रजो युजस् तुजे जने वनं स्वः ।
इन्द्रस्य रन्त्यं बृहत् ॥ ८ ॥
सहस् तन् न इन्द्र दध्य् ओज ईशे ह्य् अस्य महतो विरप्शिन् ।
क्रतुं न नृम्णं स्थविरं च वाजं वृत्रेषु शत्रून् सुहना कृधी नः ॥ ९ ॥
ऋ ६.४६.५ — इन्द्र ज्येष्ठं न आ भर ओजिष्ठं पपुरि श्रवः ।
येनेमे चित्र * * ओभे * प्राः — यद् दिधृक्षेम वज्रहस्त रोदसी उभे सुशिप्र आ प्राः ॥ १० ॥
॥ ४ ॥

२.५

ऋ १.२४.१५ — उद् उत्तमं वरुण पाशम् अस्मद् अवाधमं वि मध्यमं श्रथाय ।
अथा वयमादित्य व्रते * * * — अथादित्य व्रते वयं तवानागसो अदितये स्याम ॥ १ ॥
९.९७.५८ — त्वया वयं पवमानेन सोम भरे कृतं वि चिनुयाम शश्वत् ।
तन् नो मित्रो वरुणो मामहन्ताम् अदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥ २ ॥
इमं वृषणं कृणुतैकम् इन् माम् ॥ ३ ॥
९.६१.१२ — स न इन्द्राय यज्यवे वरुणाय मरुद्भ्यः ।
वरिवोवित् परि स्रव ॥ ४ ॥
९.६१.११ — एना विश्वान्य् अर्य आ द्युम्नानि मानुषाणाम् ।
सिषासन्तो वनामहे ॥ ५ ॥
८.९३.१३ — त्वम् एतद् अधारयः कृष्णासु रोहिणीषु च ।
परुष्णीषु रुशत् पयः ॥ ६ ॥
१०.१८१.१ — प्रथश् च यस्य सप्रथश् च नामानुष्टुभस्य हविषो हविर् यत् ।
धातुर् द्युतानात् सवितुश् च विष्णो रथन्तरम् आ जभारा वसिष्ठः ॥ ७ ॥

| | |
|---|---|
| १.७.२ | इन्द्र इद् धर्योः सचा संमिश्ल आ वचोयुजा । |
| | इन्द्रो वज्री हिरण्ययः ॥ ८ ॥ |
| १.७.४ | इन्द्र वाजेषु नो ऽव सहस्रप्रधनेषु च । |
| | उग्र उग्राभिर् ऊतिभिः ॥ ९ ॥ |
| ९.८३.३ ...बिभर्ति भुवनानि * | अरूरुचद् उषसः पृश्निर् अग्रिय उक्षा मिमेति भुवनेषु वाजयुः । |
| | मायाविनो ममिरे अस्य मायया नृचक्षसः पितरो गर्भम् आ दधुः ॥ १० ॥ ॥५॥ |

२.६

| | |
|---|---|
| * ८.८९.५ ...वृत्रहत्याय (एवम् आ) | यज् जायथा अपूर्व्य मघवन् वृत्रहथाय । |
| ...खाम् (आ उतो दिवम्) | तत् पृथिवीम् अप्रथयस् तद् अस्तभ्ना उत दिवम् ॥ १ ॥ |
| ९.६६.१९ | अग्न आयूंषि पवस आ सुवोर्जम् इषं च नः । |
| | आरे बाधस्व दुच्छुनाम् ॥ २ ॥ |
| १०.१८९.१ | आयं गौः पृश्निर् अक्रमीद् असदन् मातरं पुनः । |
| | पितरं च प्रयन् स्वः ॥ ३ ॥ |
| २ | अन्तश् चरति रोचनास्य प्राणाद् अपानती । |
| | व्य् अख्यन् महिषो दिवम् ॥ ४ ॥ |
| ३ | त्रिंशद् धाम वि राजति वाक् पतङ्गाय धीयते । |
| | प्रति वस्तोर् अह द्युभिः ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ |

२.७

विदा मघवन् विदा गातुम् अनु शंसिषो दिशः ।
शिक्षा शचीनां पते पूर्वीणां पुरोवसो ॥
आभिष् ट्वम् अभिष्टिभिः । प्रचेतन प्रचेतया । इन्द्र द्युम्नाय
न इषे । एवा हि शक्रः । राये वाजाय वज्रिवः । शविष्ठ
वज्रिन्न् ऋञ्जसे । मंहिष्ठ वज्रिन्न् ऋञ्जसे । आ याहि
पिब मत्स्व ॥ १ ॥
विदा राये सुवीर्यं भुवो वाजानां पतिर् वशं अनु ।
मंहिष्ठ वज्रिन्न् ऋञ्जसे यः शविष्ठः शूराणाम् ।
यो मंहिष्ठो मघोनां चिकित्वो अभि नो नय ।
इन्द्रो विदे तम् उ स्तुहि ॥
ईशे हि शक्रस् तम् ऊतये हवामहे जेतारम् अपराजितम् ।
स नः पर्षद् अति द्विषः क्रतुश् छन्द ऋतं बृहत् ॥ २ ॥
इन्द्रं धनस्य सातये हवामहे जेतारम् अपराजितम् ।
स नः पर्षद् अति द्विषः स नः पर्षद् अति द्विषः ॥

पूर्वस्य यत् ते अद्रिवः ॥
सुम्न आ धेहि नो वसो पूर्तिः शविष्ठ शस्यते ।
वशी हि शक्रो नूनं तन् नव्यं सन्यसे ॥
प्रभुर् जनस्य वृत्रहन् सम् अर्येषु स्तवामहे ।
शूरो यो गोषु गच्छति सखा सुशेवो अद्वयुः ॥ ३ ॥
एवा ह्य् एवा । एवा ह्य् अग्ने । एवा हीन्द्रा ।
एवा हि पूषन् । एवा हि देवाः ॥ ४ ॥ ॥७॥

३.१

नमः पितृभ्यः पूर्वसद्भ्यो नमः साकंनिषद्भ्यः ।
युञ्जे वाचं शतपदीं गये सहस्रवर्तनि ॥ १ ॥
गायत्रं त्रैष्टुभं जगद् विश्वा रूपाणि संभृतम् ।
देवा ओकांसि चक्रिरे ॥ २ ॥
ऋ ९.११.१ उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे ।
अभि देवं इयक्षते ॥ ३ ॥
२ अभि ते मधुना पयो ऽथर्वाणो अशिश्रयुः ।
* * देवयु (एवं कौ) देवं देवाय देवयुम् ॥ ४ ॥
३ स नः पवस्व शं गवे शं जनाय शम् अर्वते ।
शं राजन्न् ओषधीभ्यः ॥ ५ ॥
९.६४.२८ दविद्युतत्या रुचा परिष्टोभन्त्या कृपा ।
सोमाः शुक्रा गवाशिरः ॥ ६ ॥
२९ हिन्वानो हेतृभिर् हित आ वाजं वाज्य् अक्रमीत् ।
सीदन्तो वनुषो यथा ॥ ७ ॥
३० ... दिवः कविः ऋधक् सोम स्वस्तये संजग्मानो दिवा कवे ।
पवस्व सूर्यो दृशे ॥ ८ ॥
९.६६.१० पवमानस्य ते कवे वाजिन् सर्गा असृक्षत ।
अर्वन्तो न श्रवस्यवः ॥ ९ ॥
११ अच्छा कोशं मधुश्चुतम् असृग्रं वारे अव्यये ।
* धीतयः (एवं कौ) अवावशन्त धीतये ॥ १० ॥
१२ अच्छा समुद्रम् इन्दवो ऽस्तं गावो न धेनवः ।
अग्मन्न् ऋतस्य योनिम् आ ॥ ११ ॥ ॥१॥

३.२

ऋ ६.१६.१० अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये ।
नि होता सत्सि बर्हिषि ॥ १ ॥
११ तं त्वा समिद्भिर् अङ्गिरो घृतेन वर्धयामसि ।
बृहच् छोचा यविष्ठ्य ॥ २ ॥
१२ स नः पृथु श्रवाय्यम् अच्छा देव विवाससि ।
बृहद् अग्ने सुवीर्यम् ॥ ३ ॥
३.६२.१६ आ नो मित्रावरुणा घृतैर् गव्यूतिम् उक्षतम् ।
मध्वा रजांसि सुक्रतू ॥ ४ ॥

| | |
|---|---|
| ३.६२.१७ | उरुशंसा नमोवृधा मह्ना दक्षस्य राजथः ।<br>द्राघिष्ठाभिः शुचिव्रता ॥ ५ ॥ |
| १८ | गृणाना जमदग्निना योनाव् ऋतस्य सीदतम् ।<br>पातं सोमम् ऋतावृधा ॥ ६ ॥ |
| ८.१७.१ | आ याहि सुषुमा हि त इन्द्र सोमं पिबा इमम् ।<br>एदं बर्हिः सदो मम ॥ ७ ॥ |
| २ | आ त्वा ब्रह्मयुजा हरी वहताम् इन्द्र केशिना ।<br>उप ब्रह्माणि नः शृणु ॥ ८ ॥ |
| ३ * त्वा वयं युजा ... | ब्रह्माणस् त्वा युजा वयं सोमपाम् इन्द्र सोमिनः ।<br>सुतावन्तो हवामहे ॥ ९ ॥ |
| ३.१२.१ | इन्द्राग्नी आ गतं सुतं गीर्भिर् नभो वरेण्यम् ।<br>अस्य पातं धियेषिता ॥ १० ॥ |
| २ | इन्द्राग्नी जरितुः सचा यज्ञो जिगाति चेतनः ।<br>अया पातम् इमं सुतम् ॥ ११ ॥ |
| ३ | इन्द्रम् अग्निं कविच्छदा यज्ञस्य जूत्या वृणे ।<br>ता सोमस्येह तृम्पताम् ॥ १२ ॥ ॥२॥ |
| | ३.३ |
| * ९.६१.१० * * * अन्धसो (एवं कौ)<br>[* * भूमिर् * * | उच्चा ते जातम् अन्धसा दिवि सद् भूम्य् आ ददे ।<br>उग्रं शर्म महि श्रवः ॥ १ ॥ |
| १२<br>* * स्रव (एवं कौ) | स न इन्द्राय यज्यवे वरुणाय मरुद्भ्यः ।<br>वरिवोवित् परि स्रवा ॥ २ ॥ |
| ११ * विश्वान्य् (एवं कौ) ... | एना विश्वन्य् अर्य आ द्युम्नानि मानुषाणाम् ।<br>सिषासन्तो वनामहे ॥ ३ ॥ |
| ९.१०७.४<br>...देव | पुनानः सोम धारयापो वसानो अर्षसि ।<br>आ रत्नधा योनिम् ऋतस्य सीदस्य् उत्सो देवो हिरण्ययः ॥ ४ ॥ |
| ५<br>...अर्षति * धूतो * | दुहान ऊधर् दिव्यं मधु प्रियं प्रत्नं सधस्थम् आसदत् ।<br>आ पृच्छ्यं धरुणं वाज्य् अर्षसि नृभिर् धौतो विचक्षणः ॥ ५ ॥ |
| ९.८७.१ | प्र तु द्रव परि कोशं नि षीद नृभिः पुनानो अभि वाजम् अर्ष ।<br>अश्वं न त्वा वाजिनं मर्जयन्तो ऽच्छा बर्ही रशनाभिर् नयन्ति ॥ ६ ॥ |
| २ ...वृजनं * | स्वायुधः पवते देव इन्दुर् अशस्तिहा वृजना रक्षमाणः ।<br>पिता देवानां जनिता सुदक्षो विष्टम्भो दिवो धरुणः पृथिव्याः ॥ ७ ॥ |

३ ऋषिर् विप्रः पुरएता जनानाम् ऋभुर् धीर उशना काव्येन ।
स चिद् विवेद निहितं यद् आसाम् अपीच्यं गुह्यं नाम
गोनाम् ॥ ८ ॥ ॥ ३ ॥

३.४

ऋ ७.३२.२२ अभि त्वा शूर नोनुमो ऽदुग्धा इव धेनवः ।
ईशानम् अस्य जगतः स्वर्दृशम् ईशानम् इन्द्र त-
स्थुषः ॥ १ ॥

२३ न त्वावं अन्यो दिव्यो न पार्थिवो न जातो न जनिष्यते ।
अश्वायन्तो मघवन्न् इन्द्र वाजिनो गव्यन्तस् त्वा हवा-
महे ॥ २ ॥

४.३१.१ कया नश् चित्र आ भुवद् ऊती सदावृधः सखा ।
कया शचिष्ठया वृता ॥ ३ ॥

२ कस् त्वा सत्यो मदानां मंहिष्ठो मत्सद् अन्धसः ।
दृढा चिद् आरुजे वसु ॥ ४ ॥

३ अभी षु णः सखीनाम् अविता जरितॄणाम् ।
* * ऊतिभिः शतं भवास्य् ऊतये ॥ ५ ॥

८.८८.१ तं वो दस्मम् ऋतीषहं वसोर् मन्दानम् अन्धसः ।
अभि वत्सं न स्वसरेषु धेनव इन्द्रं गीर्भिर् नवामहे ॥ ६ ॥

२ द्युक्षं सुदानुं तविषीभिर् आवृतं गिरिं न पुरुभोजसम् ।
क्षुमन्तं वाजं शतिनं सहस्रिणं मक्षू गोमन्तम् ईमहे ॥ ७ ॥

८.६६.१ तरोभिर् वो विदद्वसुम् इन्द्रं सबाध ऊतये ।
बृहद् गायन्तः सुतसोमे अध्वरे हुवे भरं न कारिणम् ॥ ८ ॥

२ ...मदे सुशिप्रम् * न यं दुध्रा वरन्ते न स्थिरा मुरो मदेषु शिप्रम् अन्धसः ।
य आदृत्या शशमानाय सुन्वते दाता जरित्र उक्थ्यम्
॥ ९ ॥ ॥ ४ ॥

३.५

ऋ ९.१.१ स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया ।
इन्द्राय पातवे सुतः ॥ १ ॥

२ ...अयोहतम् रक्षोहा विश्वचर्षणिर् अभि योनिम् अयोहते ।
द्रुणा * * द्रोणे सधस्थम् आसदत् ॥ २ ॥

३ * भव... वरिवोधातमो भुवो मंहिष्ठो वृत्रहन्तमः ।
पर्षि राधो मघोनाम् ॥ ३ ॥

९.१०६.१४ (द्वितीयतृतीयपादयोर् विपर्यासः) अया पवस्व देवयू रेभन् पवित्रं पर्य् एषि विश्वतः ।
मधोर् धारा असृक्षत ॥ ४ ॥

१३ पवते हर्यतो हरिर् अति ह्वरांसि रंह्या ।

अभ्यर्षन् स्तोतृभ्यो वीरवद् यशः ॥ ५ ॥
९.१०१.१ पुरोजिती वो अन्धसः सुताय मादयित्नवे ।
अप श्वानं श्नथिष्टन सखायो दीर्घजिह्व्यम् ॥ ६ ॥
२ यो धारया पावकया परिप्रस्यन्दते सुतः ।
इन्दुर् अश्वो न कृत्वियः ॥ ७ ॥
३ तं दुरोषम् अभी नरः सोमं विश्वाच्या धिया ।
यज्ञं हिन्वन्त्यद्रिभिः यज्ञाय सन्त्व् अद्रयः ॥ ८ ॥
९.७५.१ अभि प्रियाणि पवते चनोहितो नामानि यह्वो अधि येषु वर्धते ।
आ सूर्यस्य बृहतो बृहन्न् अधि रथं विष्वञ्चम् अरुहद् विचक्षणः ॥ ९ ॥
२ ऋतस्य जिह्वा पवते मधु प्रियं वक्ता पतिर् धियो अस्या अदाभ्यः ।
...रोचने दधाति पुत्रः पित्रोर् अपीच्यं नाम तृतीयम् अधि रोचनं दिवः ॥ १० ॥
३ ...येमानः * अव द्युतानः कलशां अचिक्रदन् नृभिर् यमाणः कोश आ हिरण्यये ।
अभीम्... अभी ऋतस्य दोहना अनूषताधि त्रिपृष्ठ उषसो वि
राजति राजसि ॥ ११ ॥
६.४८.१ यज्ञायज्ञा वो अग्नये गिरागिरा च दक्षसे ।
...शंसिषम् (एवं कौ) प्रप्र वयम् अमृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न शंसिषः ॥ १२ ॥
२ ऊर्जो नपातं स हिनायम् अस्मयुर् दाशेम हव्यदातये ।
भुवद् वाजेष्व् अविता भुवद् वृध उत त्राता तनूनाम् ॥ १३ ॥ ॥५॥

३.६

क ९.१६.१६ एह्य् ऊ षु ब्रवाणि ते अग्न इत्थतरा गिरः ।
एभिर् वर्धास इन्दुभिः ॥ १ ॥
१७ यत्र क्व च ते मनो दक्षं दधस उत्तरम् ।
तत्रासदः * तत्र योनिं कृणवसे ॥ २ ॥
१८...वसो नहि ते पूर्तम् अक्षिपद् भुवन् नेमानां पते ।
अथा दुवो वनवसे ॥ ३ ॥
८.२१.१ वयम् उ त्वाम् अपूर्व्य स्थूरं न कच्चि चिद् भरन्तो ऽवस्यवः ।
वाजे * * वज्रिं चित्रं हवामहे ॥ ४ ॥
उप त्वा कर्मन्न् ऊतये स नो युवोग्रश् चक्राम यो धृषत् ।
त्वाम् इद् ध्य् अवितारं ववृमहे सखाय इन्द्र

| | |
|---|---|
| | सानसिम् ॥ ५ ॥ |
| ८.९८.७ अधा (एवं कौ)...कामान् | अथा हीन्द्र गिर्वण उप त्वा काम ईमहे ससृग्महे । |
| * * यन्त * [महः ससृज्महे | उद् एव ग्मन्त उदभिः ॥ ६ ॥ |
| ८ | वार् ण त्वा यव्याभिर् वर्धन्ति शूर ब्रह्माणि । |
| | वावृध्वांसं चिद् अद्रिवो दिवेदिवे ॥ ७ ॥ |
| ९ ...उरुयुगे (वचोयुजा इति नास्ति) । | युञ्जन्ति हरी इषिरस्य गाथयोरौ रथ उरुयुगे वचोयुजा । |
| इन्द्रवाहा वचोयुजा ॥ | इन्द्रवाहा स्वर्विदा ॥ ८ ॥ |
| | इन्द्र जुषस्व प्र वहा याहि शूर हरिह । |
| | पिबा सुतस्य मतिर् न मधोश् चकानश् चारुर् मदाय ॥ ९ ॥ |
| ऋग्वेदे न सन्ति | इन्द्र जठरं नव्यं न पृणस्व मधोर् दिवो न । |
| | अस्य सुतस्य स्वर् णोप त्वा मदाः सुवाचो अस्थुः ॥ १० ॥ |
| | इन्द्रस् तुराषाण् मित्रो न जघान वृत्रं यतिर् न । |
| | बिभेद वलं भृगुर् न ससाहे शत्रून् मदे सोमस्य ॥ ११ ॥ |
| | ॥ ६ ॥ |

३.७

| | |
|---|---|
| ऋ ८.९२.१ | पान्तम् आ वो अन्धस इन्द्रम् अभि प्र गायत । |
| | विश्वासाहं शतक्रतुं मंहिष्ठं चर्षणीनाम् ॥ १ ॥ |
| २ | पुरुहूतं पुरुष्टुतं गाथान्या सनश्रुतम् । |
| | इन्द्र इति ब्रवीतन ॥ २ ॥ |
| ३ * * * महानां... | इन्द्र इन् नो महानां दाता वाजानां नृतुः । |
| महाँ अभिज्ञ्व् आ (एवं कौ) * | महं अभिज्ञुवा यमत् ॥ ३ ॥ |
| ७.३१.१ | प्र व इन्द्राय मादनं हर्यश्वाय गायत । |
| | सखायः सोमपाव्ने ॥ ४ ॥ |
| २ | शंसेद् उक्थं सुदानव उत द्युक्षं यथा नरः । |
| | चकृमा सत्यराधसे ॥ ५ ॥ |
| ३ | त्वं न इन्द्र वाजयुस् त्वं गव्युः शतक्रतो । |
| | त्वं हिरण्ययुर् वसो ॥ ६ ॥ |
| ८.२.१६ | वयम् उ त्वा तदिदर्था इन्द्र त्वायन्तः सखायः । |
| | कण्वा उक्थेभिर् जरन्ते ॥ ७ ॥ |
| १७ | न घेम् अन्यद् आ पपन वज्रिन्न् अपसो नविष्टौ । |
| ...स्तोमं * | तवेद् उ स्तोमैश् चिकेत ॥ ८ ॥ |
| १८ | इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं न स्वप्नाय स्पृहयन्ति । |
| | यन्ति प्रमादम् अतन्द्राः ॥ ९ ॥ |
| ८.९२.१९ | इन्द्राय मद्वने सुतं परि ष्टोभन्तु नो गिरः । |
| | अर्कम् अर्चन्तु कारवः ॥ १० ॥ |

२० यस्मिन् विश्वा अधि श्रियो रणन्ति सप्त संसदः ।
इन्द्रं सुते हवामहे ॥ ११ ॥
२१ त्रिकद्रुकेषु चेतनं देवासो यज्ञम् अत्नत ।
तम् इद् वर्धन्तु नो गिरः ॥ १२ ॥ ॥७॥

३.८

ऋ ८.१७.११ अयं त इन्द्र सोमो निपूतो अधि बर्हिषि ।
...पिब (एवं कौ) एहीम् अस्य द्रवा पिबा ॥ १ ॥
१२ शाचिगो शाचिपूजनायं रणाय ते सुतः ।
आखण्डल प्र हूयसे ॥ २ ॥
१३ * * * नपात्... यस् ते शृङ्गवृषो णपात् प्रणपात् कुण्डपाय्यः ।
न्य् अस्मिन् दध्र आ मनः ॥ ३ ॥
८.८१.१ आ तू न इन्द्र क्षुमन्तं चित्रं ग्राभं सं गृभाय ।
महाहस्ती दक्षिणेन ॥ ४ ॥
२ विद्मा हि त्वा तुविकूर्मिं तुविदेष्णं तुवीमघम् ।
तुविमात्रम् अवोभिः ॥ ५ ॥
३ नहि त्वा शूर देवा न मर्तासो दित्सन्तम् ।
भीमं न गां वारयन्ते ॥ ६ ॥
८.४५.२२ अभि त्वा वृषभा सुते सुतं सृजामि पीतये ।
तृम्पा व्य् अश्नुही मदम् ॥ ७ ॥
२३ मा त्वा मूरा अविष्यवो मोपहस्वान आ दभन् ।
* ब्रह्मद्विषो * माकीं ब्रह्मद्विषं वनः ॥ ८ ॥
२४ * * गोपरीणसा... इह त्वा गोपरीणसं महे मन्दन्तु राधसे ।
सरो गौरो यथा पिब ॥ ९ ॥
८.२.१ इदं वसो सुतम् अन्धः पिबा सुपूर्णम् उदरम् ।
अनाभयिन् ररिमा ते ॥ १० ॥
२ * भूतः * * अव्यो... नृभिर् धौतः सुतो अश्नैर् अव्या वारैः परिपूतः ।
अश्वो न निक्तो नदीषु ॥ ११ ॥
३ तं ते यवं यथा गोभिः स्वादुम् अकर्म श्रीणन्तः ।
इन्द्र त्वास्मिन् सधमादे ॥ १२ ॥ ॥८॥

३.९

ऋ ३.५१.१० इदं ह्य् अन्व् ओजसा सुतं राधानां पते ।
पिबा त्व् अस्य गिर्वणः ॥ १ ॥
१२ प्र ते अश्नोतु कुक्ष्योः प्रेन्द्र ब्रह्मणा शिरः ।
...राधसे प्र बाहू शूर राधसा ॥ २ ॥
११ यस् ते अनु स्वधाम् असत् सुते नि यच्छ तन्वम् ।

| | |
|---|---|
| ...सोम्यम् | स त्वा ममत्तु सोम्य ॥ ३ ॥ |
| १.५.१ | आ त्व् एता नि षीदतेन्द्रम् अभि प्र गायत । |
| | सखायः स्तोमवाहसः ॥ ४ ॥ |
| २ | पुरूतमं पुरूणाम् ईशानं वार्याणाम् । |
| | इन्द्रं सोमे सचा सुते ॥ ५ ॥ |
| ३ ...पुरन्ध्याम् | स घा नो योग आ भुवत् स राये स पुरन्ध्या । |
| | गमद् वाजेभिर् आ स नः ॥ ६ ॥ |
| १.३०.७ | योगेयोगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे । |
| | सखाय इन्द्रम् ऊतये ॥ ७ ॥ |
| ८ | आ घा गमद् यदि श्रवत् सहस्रिणीभिर् ऊतिभिः । |
| | वाजेभिर् उप नो हवम् ॥ ८ ॥ |
| ९ | अनु प्रत्नस्यौकसो हुवे तुविप्रतिं नरम् । |
| | यं ते पूर्वं पिता हुवे ॥ ९ ॥ |
| ८.१३.१ इन्द्रः...पुनीत * | इन्द्र सुतेषु सोमेषु क्रतुं पुनीष उक्थ्यम् । |
| * * दक्षसो ... | विदे वृधस्य दक्षस्य महान् हि षः ॥ १० ॥ |
| २ | स प्रथमे व्योमनि देवानां सदने वृधः । |
| | सुपारः सुश्रवस्तमः सम् अप्सुजित् ॥ ११ ॥ |
| ३ * अह्वे ... | तम् उ हुवे वाजसातय इन्द्रं भराय शुष्मिणम् । |
| | भवा नः सुम्ने अन्तमः सखा वृधे ॥ १२ ॥ ॥९॥ |

३.१०

| | |
|---|---|
| ऋ ७.१६.१ | एना वो अग्निं नमसोर्जो नपातम् आ हुवे । |
| | प्रियं चेतिष्ठम् अरतिं स्वध्वरं विश्वस्य दूतम् अमृतम् ॥ १ ॥ |
| २ | स योजते अरुषा विश्वभोजसा स दुद्रवत् स्वाहुतः । |
| [कौ] * * | सुब्रह्मा यज्ञः सुशमी वसूनां देवं राधो जनानाम् ॥ २ ॥ |
| ७.८१.१ प्रत्यु अदर्श्यायत्युछन्ती (एवं | प्रति वो दृश्यायत्य् उच्छन्ती दुहिता दिवः । |
| अपो महि व्ययति चक्षसे * * * | अपो मही वृणुते चक्षुषा तमो ज्योतिष् कृणोति सूनरी ॥ ३ ॥ |
| २ | उद् उस्रियाः सृजते सूर्यः सचा उद्यन् नक्षत्रम् अर्चिवत् । |
| | तवेद् उषो व्युषि सूर्यस्य च सं भक्तेन गमेमहि ॥ ४ ॥ |
| ७.७४.१ | इमा उ वां दिविष्टय उस्रा हवन्ते अश्विना । |
| * * अह्वे ऽवसे (एवं कौ) * * * * | अयं वाम् अह्वयवसे शचीवसू विशंविशं हि गच्छथः ॥५॥ |
| २ | युवं चित्रं ददथुर् भोजनं नरा चोदेथां सूनृतावते । |
| | अर्वाग् रथं समनसा नि यच्छतं पिबतं सोम्यं मधु ॥ ६ ॥ ॥१०॥ |

३.११

| | |
|---|---|
| ऋ ९.५४.१ | अस्य प्रत्नाम् अनु द्युतं शुक्रं दुदुह्रे अह्रयः । |

| | |
|---|---|
| | पयः सहस्रसाम् ऋषिम् ॥ १ ॥ |
| २ | अयं सूर्य इवोपदृग् अयं सरांसि धावति । |
| | सप्त प्रवत आ दिवम् ॥ २ ॥ |
| ३ | अयं विश्वानि तिष्ठति पुनानो भुवनोपरि । |
| | सोमो देवो न सूर्यः ॥ ३ ॥ |
| ९.३.९ | एष प्रत्नेन जन्मना देवो देवेभ्यः सुतः । |
| | हरिः पवित्रे अर्षति ॥४॥ |
| ९.४२.२[१.२] | एष प्रत्नेन मन्मना देवो देवेभ्यस् परि । |
| ८.४४.१२[३] | कविर् विप्रेण वावृधे ॥ ५ ॥ |
| ९.४२.४ * प्रत्नमित् (एवं कौ)... | दुहानः प्रत्नवित् पयः पवित्रे परि षिच्यसे । |
| * * अजीजनत् | क्रन्दन् देवं अजीजनः ॥ ६ ॥ |
| ९.१९.६ ...शत्रुषु | उप शिक्षापतस्थुषो भियसम् आ धेहि शत्रवे । |
| | पवमान विदा रयिम् ॥ ७ ॥ |
| ९.६१.१३ | उपो षु जातम् अप्तुरं गोभिर् भङ्गं परिष्कृतम् । |
| | इन्दुं देवा अयासिषुः ॥ ८ ॥ |
| ९.११.१ | उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे । |
| | अभि देवं इयक्षते ॥ ९ ॥ ॥११॥ |
| | ३.१२ |
| ऋ ९.३३.१ * * * ऽपां न यन्त्य् * | प्र सोमासो विपश्चितो अपो नयन्त ऊर्मयः । |
| | वनानि महिषा इव ॥ १ ॥ |
| २ | अभि द्रोणानि बभ्रवः शुक्रा ऋतस्य धारया । |
| | वाजं गोमन्तम् अक्षरन् ॥ २ ॥ |
| ३ | सुता इन्द्राय वायवे वरुणाय मरुद्भ्यः । |
| * अर्षन्ति * | सोमा अर्षन्तु विष्णवे ॥ ३ ॥ |
| ९.१०७.१२ | प्र सोम देववीतये सिन्धुर् न पिप्ये अर्णसा । |
| | अंशोः पयसा मदिरो न जागृविर् अच्छा कोशं मधुश्चुतम् ॥ ४ ॥ |
| १३ * * अर्जुने ... | आ हर्यतो अर्जुनो अत्के अव्यत प्रियः सूनुर् न मर्ज्यः । |
| | तम् ईं हिन्वन्त्य् अपसो यथा रथं नदीष्व् आ गभस्त्योः ॥ ५ ॥ |
| ९.३२.१ ...मघोनः | प्र सोमासो मदच्युतः श्रवसे नो मघोनाम् । |
| | सुता विदथे अक्रमुः ॥ ६ ॥ |
| ९.१०६.१३ | पवते हर्यतो हरिर् अति ह्वरांसि रंह्या । |
| | अभ्यर्षन् स्तोतृभ्यो वीरवद् यशः ॥ ७ ॥ |
| ९.१०१.१३ * सुन्वानस्यान्धसो * * वृत * * | प्र सुन्वानायान्धसो मर्तो न वष्ट तद् वचः । |
| | अप श्वानम् अराधसं हता मखं न भृगवः ॥ ८ ॥ ॥१२॥ |

| | |
|---|---|
| | ३.१३ |
| ऋ ९.६२.२५ | पवस्व वाचो अग्रियः सोम चित्राभिर् ऊतिभिः । |
| | अभि विश्वानि काव्या ॥ १ ॥ |
| २६ | त्वं समुद्रिया अपो ऽग्रियो वाच ईरयन् । |
| * विश्वमेजय | पवस्व विश्वचर्षणे ॥ २ ॥ |
| २७ | तुभ्येमा भुवना कवे महिम्ने सोम तस्थिरे । |
| * अर्षन्ति सिन्धवः | तुभ्यं धावन्ति धेनवः ॥ ३ ॥ |
| ९.६१.२८ | पवस्वेन्दो वृषा सुतः कृधी नो यशसो जने । |
| | विश्वा अप द्विषो जहि ॥ ४ ॥ |
| २९ अस्य ... (द्वितीयतृतीयपादयोर् | यस्य ते सख्ये वयं सासह्याम पृतन्यतः । |
| विपर्यासः) | तवेन्दो द्युम्न उत्तमे ॥ ५ ॥ |
| ३० | या ते भीमान्य् आयुधा तिग्मानि सन्ति धूर्वणे । |
| | रक्षा समस्य नो निदः ॥ ६ ॥ |
| ९.६४.१ | वृषा सोम द्युमं असि वृषा देव वृषव्रतः । |
| * * दधिषे | वृषा धर्माणि दध्रिषे ॥ ७ ॥ |
| २ ... मदः | वृष्णस् ते वृष्ण्यं शवो वृषा वनं वृषा सुतः । |
| सत्यं * * * | स त्वं वृषन् वृषेद् असि ॥ ८ ॥ |
| ३ * * चक्रदो (एवं कौ)... | अश्वो न चक्रदद् वृषा सं गा इन्दो सम् अर्वतः । |
| | वि नो राये दुरो वृधि ॥ ९ ॥ |
| ९.६५.४[१.२] | वृषा ह्य् असि भानुना द्युमन्तं त्वा हवामहे । |
| ११[२] | पवमान स्वर्दृशम् ॥ १० ॥ |
| ६ * * * मृज्यमानो गभस्त्योः | यद् अद्भिः परिषिच्यसे मर्मृज्यमान आयुभिः । |
| द्रुणा ... | द्रोणे सधस्थम् अश्नुषे ॥ ११ ॥ |
| ५ | आ पवस्व सुवीर्यं मन्दमानः स्वायुध । |
| | इहो ष्व् इन्दव् आ गहि ॥ १२ ॥ |
| ९.६१.४ | पवमानस्य ते वयं पवित्रम् अभ्युन्दतः । |
| | सखित्वम् आ वृणीमहे ॥ १३ ॥ |
| ५ | ये ते पवित्रम् ऊर्मयो ऽभिक्षरन्ति धारया । |
| ...मृळय (कौ मृडय) | तेभिर् नः सोम मृडया ॥ १४ ॥ |
| ६ | स नः पुनान आ भर रयिं वीरवतीम् इषम् । |
| | ईशानः सोम विश्वतः ॥ १५ ॥ ॥१३॥ |
| | ३.१४ |
| ऋ १.१२.१ | अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम् । |
| | अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ॥ १ ॥ |
| २ | अग्निमग्निं हवीमभिः सदा हवन्त विश्पतिम् । |

| | |
|---|---|
| | हव्यवाहं पुरुप्रियम् ॥ २ ॥ |
| ३ | अग्ने देवं इहावह जज्ञानो वृक्तबर्हिषे । |
| | असि होता न ईड्यः ॥ ३ ॥ |
| १.२३.४ [जाता * | मित्रं वयं हवामहे वरुणं सोमपीतये । |
| जज्ञाना (या नास्ति) पूतदक्षसा । कौ * | या जज्ञाना पूतदक्षसा ॥ ४ ॥ |
| ५ | ऋतेन याव् ऋतावृधाव् ऋतस्य ज्योतिषस् पती । |
| | ता मित्रावरुणा हुवे ॥ ५ ॥ |
| ६ | वरुणः प्राविता भुवन् मित्रो विश्वाभिर् ऊतिभिः । |
| | करतां नः सुराधसः ॥ ६ ॥ |
| १.७.१ | इन्द्रम् इद् गाथिनो बृहद् इन्द्रम् अर्केभिर् अर्किणः । |
| | इन्द्रं वाणीर् अनूषत ॥ ७ ॥ |
| २ | इन्द्र इद् धर्योः सचा संमिश्ल आ वचोयुजा । |
| | इन्द्रो वज्री हिरण्ययः ॥ ८ ॥ |
| ४ * * नो ऽव (एवं कौ)... | इन्द्र वाजेषु णो अव सहस्रप्रधनेषु च । |
| | उग्र उग्राभिर् ऊतिभिः ॥ ९ ॥ |
| ७.९४.४ | इन्द्रे अग्ना नमो बृहत् सुवृक्तिम् एरयामहे । |
| | धिया धेना अवस्यवः ॥ १० ॥ |
| ५ | ता हि शश्वन्त ईडत इत्था विप्रास ऊतये । |
| | सबाधो वाजसातये ॥ ११ ॥ |
| ६ * * * विपन्यवः... | ता वां गीर्भिर् विपन्युवः प्रयस्वन्तो हवामहे । |
| | मेधसाता सनिष्यवः ॥ १२ ॥ ॥ १४ ॥ |

## ३.१५

| | |
|---|---|
| ऋ ९.६५.१० | वृषा पवस्व धारया मरुत्वते च मत्सरः । |
| | विश्वा दधान ओजसा ॥ १ ॥ |
| ११ | तं त्वा धर्तारम् ओण्योः पवमान स्वर्दृशम् । |
| | हिन्वे वाजेषु वाजिनम् ॥ २ ॥ |
| १२ | अया चित्तो विपानया हरिः पवस्व धारया । |
| * * चोदय (एवं कौ) | युजं वाजेषु चोदया ॥ ३ ॥ |
| ९.९७.१३ | वृषा शोणो अभिकनिक्रदद् गा नदयन्न् एषि पृथिवीम् उत द्याम् । |
| ...प्रचेतयन्नर्षति | इन्द्रस्येव वग्नुर् आ शृण्व आजौ प्रचोदयन्न् अर्षसि वाचम् एमाम् ॥ ४ ॥ |
| १४ | रसाय्यः पयसा पिन्वमान ईरयन्न् एषि मधुमन्तम् अंशुम् । |
| पवमानः... | पवमान संतनिम् एषि कृण्वन्न् इन्द्राय सोम परिषिच्यमानः ॥ ५ ॥ |

| | |
|---|---|
| १५ ...वधस्नैः | एवा पवस्व मदिरो मदायोदग्राभस्य नमयन् वधस्नुम् । |
| | परि वर्णं भरमाणो रुशन्तं गव्युर् नो अर्ष परि सोम सिक्तः ॥ ६ ॥ |
| ६.४६.१ ...साता * * | त्वाम् इद् धि हवामहे सातौ वाजस्य कारवः । |
| | त्वां वृत्रेष्व् इन्द्र सत्पतिं नरस् त्वां काष्ठास्व् अर्वतः ॥ ७ ॥ |
| २ | स त्वं नश् चित्र वज्रहस्त धृष्णुया महः स्तवानो अद्रिवः । |
| | गाम् अश्वं रथ्यम् इन्द्र सं किर सत्रा वाजं न जिग्युषे ॥ ८ ॥ |
| ८.४९.१ | अभि प्र वः सुराधसम् इन्द्रम् अर्च यथा विदे । |
| | यो जरितृभ्यो मघवा पुरूवसुः सहस्रेणेव शिक्षति ॥ ९ ॥ |
| २ | शतानीकेव प्र जिगाति धृष्णुया हन्ति वृत्राणि दाशुषे । |
| | गिरेर् इव प्र रसा अस्य पिन्विरे दत्राणि पुरुभोजसः ॥ १० ॥ |
| ८.९९.१ | त्वाम् इदा ह्यो नरो ऽपीप्यन् वज्रिन् भूर्णयः । |
| * * स्तोमवाहसाम्... | स इन्द्र स्तोमवाहस इह श्रुध्य् उप स्वसरम् आ गहि ॥११॥ |
| २ * सुशिप्र * तद्... | मत्स्वा सुशिप्रिन् हरिवस् तम् ईमहे त्वय् आ भूषन्ति वेधसः । |
| * * * उक्थ्या... | तव श्रवांस्य् उपमान्य् उक्थ्य सुतेष्व् इन्द्र गिर्वणः ॥ १२ ॥ ॥१५॥ |

### ३.१६

| | |
|---|---|
| ऋ ९.६१.१९ | यस् ते मदो वरेण्यस् तेना पवस्वान्धसा |
| | देवावीर् अघशंसहा ॥ १ ॥ |
| २० | जघ्निर् वृत्रम् अमित्रियं सस्निर् वाजं दिवेदिवे । |
| गोषा उ * * | गोषातिर् अश्वसा असि ॥ २ ॥ |
| २१ * * भव... | संमिश्लो अरुषो भुवः सूपस्थाभिर् न धेनुभिः । |
| | सीदन् श्येनो न योनिम् आ ॥ ३ ॥ |
| ९.१०८.१ | पवस्व मधुमत्तम इन्द्राय सोम क्रतुवित्तमो मदः । |
| | महि द्युक्षतमो मदः ॥ ४ ॥ |
| ९.१०६.१ | इन्द्रम् अच्छ सुता इमे वृषणं यन्तु हरयः । |
| श्रुष्टी... | श्रुष्टे जातास इन्दवः स्वर्विदः ॥ ५ ॥ |
| ९.१०१.७ | अयं पूषा रयिर् भगः सोमः पुनानो अर्षति । |
| | पतिर् विश्वस्य भूमनो व्य् अख्यद् रोदसी उभे ॥६॥ |
| ८ | सम् उ प्रिया अनूषत गावो मदाय घृष्वयः । |
| | सोमासः कृण्वते पथः पवमानास इन्दवः ॥ ७ ॥ |
| ९ | य ओजिष्ठस् तम् आ भर पवमान श्रवाय्यम् । |
| ...वनामहै | यः पञ्च चर्षणीर् अभि रयिं येन वनामहे ॥ ८ ॥ |
| ९.८६.१९ ...अह्नः * | वृषा मतीनां पवते विचक्षणः सोमो अह्नां प्रतरीतोषसां दिवः । |

| | |
|---|---|
| क्राणा * * भवीवशद्... | प्राणा सिन्धूनां कलशं अचिक्रदद् इन्द्रस्य हार्द्य् आविशन् मनीषिभिः ॥ ९ ॥ |
| २० | मनीषिभिः पवते पूर्व्यः कविर् नृभिर् यतः परि कोशं |
| अचिक्रदत् | असिष्यदत् । |
| ...क्षरद् * वायोः * | त्रितस्य नाम जनयन् मधु क्षरन्न् इन्द्रस्य वायुं सख्याय |
| कर्तवे | वर्धयन् ॥ १० ॥ |
| २१ * * * वि रोचयद्... | अयं पुनान उषसो अरोचयद् अयं सिन्धुभ्यो अभवद् उ लोककृत् । |
| | अयं त्रिः सप्त दुदुहान आशिरं सोमो हृदे पवते चारु मत्सरः ॥ ११ ॥ |
| ८.९२.२८ | एवा ह्य् असि वीरयुर् एवा शूर उत स्थिरः । |
| | एवा ते राध्यं मनः ॥ १२ ॥ |
| २९ | एवा रातिस् तुवीमघ विश्वेभिर् धायि धातृभिः । |
| * * * मे * | अधा चिद् इन्द्र नः सचा ॥ १३ ॥ |
| ३० | मो षु ब्रह्मेव तन्द्रयुर् भुवो वाजानां पते । |
| | मत्स्वा सुतस्य गोमतः ॥ १४ ॥ |
| १.११.१ | इन्द्रं विश्वा अवीवृधन् समुद्रव्यचसं गिरः । |
| | रथीतमं रथीनां वाजानां सत्पतिं पतिम् ॥ १५ ॥ |
| २ | सख्ये त इन्द्र वाजिनो मा भेम शवसस् पते । |
| * * * णोनुमो... | त्वाम् अभि प्र नोनुमो जेतारम् अपराजितम् ॥ १६ ॥ |
| ३ | पूर्वीर् इन्द्रस्य रातयो न वि दस्यन्त्य् ऊतयः । |
| यदी... | यदा वाजस्य गोमतः स्तोतृभ्यो मंहते मघम् ॥ १७ ॥ |
| | ॥१६॥ |

### ३.१७

| | |
|---|---|
| ऋ ९.६२.१ | एते असृग्रम् इन्दवस् तिरः पवित्रम् आशवः । |
| | विश्वान्य् अभि सौभगा ॥ १ ॥ |
| २ | विघ्नन्तो दुरिता पुरु सुगा तोकाय वाजिनः । |
| तना * अर्वते | त्मना कृण्वन्तो अर्वतः ॥ २ ॥ |
| | कृण्वन्तो वरिवो गवे ऽभ्य् अर्षन्ति सुष्टुतिम् । |
| | इडाम् अस्मभ्यं संयतम् ॥ ३ ॥ |
| ९.६५.१६ | राजा मेधाभिर् ईयते पवमानो मनाव् अधि । |
| | अन्तरिक्षेण यातवे ॥ ४ ॥ |
| १८ | आ नः सोम सहो जुवो रूपं न वर्चसे भर । |
| | सुष्वाणो देववीतये ॥ ५ ॥ |
| १७ * * * शतग्विनं... | आ न इन्दो शतग्विनं गवां पोषं स्वश्व्यम् । |
| | वहा भगत्तिम् ऊतये ॥ ६ ॥ |

| | |
|---|---|
| ९.४८.१ | तं त्वा नृम्णानि बिभ्रतं सधस्थेषु महो दिवः । |
| * सुकृत्ययेमहे (एवं कौ) | चारुं सुकृत्ययैमहि ॥ ७ ॥ |
| २ | संवृक्तधृष्णुम् उक्थ्यं महामहिव्रतं मदम् । |
| | शतं पुरो रुरुक्षणिम् ॥ ८ ॥ |
| ३ * * रयिमभि राजानं * * | अतस् त्वा रयिर् अभ्य् अयद् राजानं सुक्रतो दिवः । |
| * अव्यथिर् * | सुपर्णो अव्यथी भरत् ॥ ९ ॥ |
| ४ | विश्वस्मा इत् स्वर् दृशे साधारणं रजस्तुर॑ । |
| | गोपाम् ऋतस्य विर् भरत् ॥ १० ॥ |
| ५ | अधा हिन्वान इन्द्रियं ज्यायो महित्वम् आनशे । |
| | अभिष्टिकृद् विचर्षणिः ॥ ११ ॥ |
| ९.६४.१३ | इषे पवस्व धारया मृज्यमानो मनीषिभिः । |
| | इन्दो रुचाभि गा इहि ॥ १२ ॥ |
| १४ | पुनानो वरिवस् कृध्य् ऊर्जं जनाय गिर्वणः । |
| | हरे सृजान आशिरम् ॥ १३ ॥ |
| १५ | पुनानो देववीतय इन्द्रस्य याहि निष्कृतम् । |
| * * यतः | द्युतानो वाजिभिर् हितः ॥ १४ ॥ ॥ १७ ॥ |

३.१८

| | |
|---|---|
| ऋ १.१२.६ | अग्निनाग्निः सम् इध्यते कविर् गृहपतिर् युवा । |
| | हव्यवाड् जुह्वास्यः ॥ १ ॥ |
| ८ | यस् त्वाम् अग्ने हविष्पतिर् दूतं देव सपर्यति । |
| | तस्य स्म प्राविता भव ॥ २ ॥ |
| ९ | यो अग्निं देववीतये हविष्मं आविवासति । |
| * * मृळय (कौ मृडय) | तस्मै पावक मृडया ॥ ३ ॥ |
| १.२.७ | मित्रं हुवे पूतदक्षं वरुणं च रिशादसम् । |
| | धियं घृताचीं साधन्ता ॥ ४ ॥ |
| ८ | ऋतेन मित्रावरुणाव् ऋतावृधाव् ऋतस्पृशा । |
| * * आशाथे (एवं कौ) | क्रतुं बृहन्तम् आशथे ॥ ५ ॥ |
| ९ | कवी नो मित्रावरुणा तुविजाता उरुक्षया । |
| | दक्षं दधाते अपसम् ॥ ६ ॥ |
| १.६.७ | इन्द्रेण सं हि दृक्षसे संजग्मानो अबिभ्युषा । |
| | मन्दू समानवर्चसा ॥ ७ ॥ |
| ४ | आद् अह स्वधाम् अनु पुनर् गर्भत्वम् एरिरे । |
| | दधाना नाम यज्ञियम् ॥ ८ ॥ |
| ५ बीळु (कौ वीडु)... | वीडु चिद् आरुजत्नुभिर् गुहा चिद् इन्द्र वह्निभिः । |
| | अविन्द उस्रिया अनु ॥ ९ ॥ |

| | |
|---|---|
| ६.६०.४ | ता हुवे ययोर् इदं पप्ने विश्वं पुरा कृतम् । |
| | इन्द्राग्नी न मर्धतः ॥ १० ॥ |
| ५ | उग्रा विघनिना मृध इन्द्राग्नी हवामहे । |
| | ता नो मृडात ईदृशे ॥ ११ ॥ |
| ६ हतो * * हतो * * | हथो वृत्राण्य् आर्या हथो दासानि सत्पती । |
| हतो… | हथो विश्वा अप द्विषः ॥ १२ ॥ ॥१८॥ |
| | ३.१९ |
| ऋ ९.१०७.१४ | अभि सोमास आयवः पवन्ते मद्यं मदम् । |
| * विष्टपि * * स्वर्विदः | समुद्रस्याधि विष्टपे मनीषिणो मत्सरासो मदच्युतः ॥ १ ॥ |
| १५ | तरत् समुद्रं पवमान ऊर्मिणा राजा देव ऋतं बृहत् । |
| अर्षन्… | अर्षा मित्रस्य वरुणस्य धर्मणा प्र हिन्वान ऋतं बृहत् ॥२॥ |
| १६ * येमानो… | नृभिर् येमाणो हर्यतो विचक्षणो राजा देवः समुद्र्यः ॥ ३ ॥ |
| ९.९७.३४ | तिस्रो वाच ईरयति प्र वह्निर् ऋतस्य धीतिं ब्रह्मणो मनीषाम् । |
| | गावो यन्ति गोपतिं पृच्छमानाः सोमं यन्ति मतयो वावशानाः ॥ ४ ॥ |
| ३५ | सोमं गावो धेनवो वावशानाः सोमं विप्रा मतिभिः पृच्छमानाः । |
| * * पूयते अज्यमानः… | सोमः सुत ऋच्यते पूयमानः सोमे अर्कास् त्रिष्टुभः सं नवन्ते ॥ ५ ॥ |
| ३६ | एवा नः सोम परिषिच्यमान आ पवस्व पूयमानः स्वस्ति । |
| * * * * रवेण… | इन्द्रम् आ विश बृहता मदेन वर्धया वाचं जनया पुरंधिम् ॥ ६ ॥ |
| ८.७०.५ | यद् द्याव इन्द्र ते शतं शतं भूमीर् उत स्युः । |
| | न त्वा वज्रिन् सहस्रं सूर्या अनु न जातम् अष्ट रोदसी ॥ ७ ॥ |
| ६ | आ पप्राथ महिना वृष्ण्या वृषन् विश्वा शविष्ठ शवसा । |
| | अस्मं अव मघवन् गोमति व्रजे वज्रिन् चित्राभिर् ऊतिभिः ॥ ८ ॥ |
| ८.३३.१ | वयं घ त्वा सुतावन्तः आपो न वृक्तबर्हिषः । |
| | पवित्रस्य प्रस्रवणेषु वृत्रहन् परि स्तोतार आसते ॥ ९ ॥ |
| २ | स्वरन्ति त्वा सुते नरो वसो निरेक उक्थिनः । |
| …गमः * * | कदा सुतं तृषाण ओक आ गमद् इन्द्र स्वब्दीव वंसगः ॥ १० ॥ |

| | |
|---|---|
| ३ | कण्वाभिर् धृष्णव् आ धृषद् वाजं दर्षि सहस्रिणम् । |
| | पिशङ्गरूपं मघवन् विचर्षणे मक्षू गोमन्तम् ईमहे ॥ ११ ॥ |
| ७.३२.२० | तरणिर् इत् सिषासति वाजं पुरंध्या युजा । |
| | आ व इन्द्रं पुरुहूतं नमे गिरा नेमिं तष्टेव सुद्रुवम् ॥ १२ ॥ |
| २१ * दुष्टुती मर्त्यो विन्दते वसु * * * * | न दुष्टुतिर् द्रविणोदेषु शस्यते न स्रेधन्तं रयिर् नशत् । |
| | सुशक्तिर् इन् मघवन् तुभ्यं मावते देष्णं यत् पार्ये दिवि ॥ १३ ॥ ॥१९॥ |
| | ३.२० |
| ऋ ९.३३.४ | तिस्रो वाच उद् ईरते गावो मिमन्ति धेनवः । |
| | हरिर् एति कनिक्रदत् ॥ १ ॥ |
| ५ | अभि ब्रह्मीर् अनूषत यह्वीर् ऋतस्य मातरः । |
| मर्मृज्यन्ते * * | मर्जयन्तीर् दिवः शिशुम् ॥ २ ॥ |
| ६ रायः (एवं कौ)… | राये समुद्रांश् चतुरो ऽस्मभ्यं सोम विश्वतः । |
| …सहस्रिणः (एवं कौ) | आ पवस्व सहस्रिणम् ॥ ३ ॥ |
| ९.१०८.७ | आ सोता परि षिञ्चताश्वं न स्तोमम् अप्तुरं रजस्तुरम् । |
| वनक्रक्षम् * | वनप्रक्षम् उदप्रुतम् ॥ ४ ॥ |
| ९.१०४.१ | सखाय आ नि षीदत पुनानाय प्र गायत । |
| | शिशुं न यज्ञैः परि भूषत श्रिये ॥ ५ ॥ |
| ९.१०१.४ | सुतासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मन्दिनः । |
| | पवित्रवन्तो अक्षरन् देवान् गच्छन्तु वो मदाः ॥ ६ ॥ |
| ५ | इन्दुर् इन्द्राय पवत इति देवासो अब्रुवन् । |
| * * मखस्यते (एवं कौ) … । कौ … ओजसः | वाचस् पतिर् मखस्यते विश्वस्येशान ओजसा ॥ ७ ॥ |
| ६ | सहस्रधारः पवते समुद्रो वाचमीङ्खयः । |
| | सोमस् पती रयीणां सखेन्द्रस्य दिवेदिवे ॥ ८ ॥ |
| ९.८३.१ | पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस् पते प्रभुर् गात्राणि पर्य् एषि विश्वतः । |
| | अतप्ततनूर् न तद् आमो अश्नुते शृतास इद् वहन्तः |
| तत् सम् (विपर्यासेन) * | सं तद् आशत ॥ ९ ॥ |
| २ कौ * * * * अर्चन्तो… | तपोष् पवित्रं विततं दिवस् पदे शोचन्तो अस्य तन्तवो व्य् अस्थिरन् । |
| * * पवीतारम्… | अवन्त्य् अस्य पवितारम् आशवो दिवः पृष्ठम् अधि |
| * चेतसा । कौ रोहन्ति * | तिष्ठन्ति तेजसा ॥ १० ॥ |
| ३ * * * * * बिभर्ति भुवनानि । कौ … मिमेति * | अरूरुचद् उषसः पृश्निर् अग्रिय उक्षा मिमाति भुवनेषु वाजयुः । |
| | मायाविनो ममिरे अस्य मायया नृचक्षसः पितरो गर्भम् आ दधुः ॥ ११ ॥ |

| | |
|---|---|
| ८.१०३.८ | प्र मंहिष्ठाय गायत ऋताव्ने बृहते शुक्रशोचिषे । उपस्तुतासो अग्नये ॥ १२ ॥ |
| ९ …द्युम्न्य् (एवं कौ) * …नवीयस्य् * * | आ वंसते मघवा वीरवद् यशः समिद्धो द्युम्न आहुतः । कुविन् नो अस्य सुमतिर् भवीयस्य् अच्छा वाजेभिर् आगमत् ॥ १३ ॥ |
| ८.१५.४ …पृत्सु * | तं ते मदं गृणीमसि वृषणं पृक्षु सासहिम् । उ लोककृत्नुम् अद्रिवो हरिश्रियम् ॥ १४ ॥ |
| ५ | येन ज्योतींष्य् आयवे मनवे च विवेदिथ । मन्दानो अस्य बर्हिषो वि राजसि ॥ १५ ॥ |
| ६ | तद् अद्या चित् त उक्थिनो अनु ष्टुवन्ति पूर्वथा । वृषपत्नीर् अपो जया दिवेदिवे ॥ १६ ॥ |
| ८.९५.४ | श्रुधी हवं तिरश्च्या इन्द्र यस् त्वा सपर्यति । सुवीर्यस्य गोमतो रायस् पूर्धि महं असि ॥ १७ ॥ |
| ५ इन्द्र यस्ते (विपर्यासेन)… | यस् त इन्द्र नवीयसीं गिरं मन्द्राम् अजीजनत् । चिकित्विन्मनसं धियं प्रत्नाम् ऋतस्य पिप्युषीम् ॥ १८ ॥ |
| ६ | तम् उ ष्टवाम यं गिर इन्द्रम् उक्थानि वावृधुः । पुरूण्य् अस्य पौंस्या सिषासन्तो वनामहे ॥ १९ ॥ ॥२०॥ |

३.२१

| | |
|---|---|
| ऋ ९.८६.४ * * * * धीजुवो… | प्र त आश्विनीः पवमान धेनवो दिव्या असृग्रन् पयसा धरीमणि । |
| प्रान्तर्ऋषयः स्थाविरीरसृक्षत * * * ऋषिषाण * | प्रान्तरिक्षात् स्थाविरीस् ते असृक्षत ये त्वा मृजन्त्य् उषिषाण वेधसः ॥ १ ॥ |
| ६ | उभयतः पवमानस्य रश्मयो ध्रुवस्य सतः परि यन्ति केतवः । |
| …योना * | यदी पवित्रे अधि मृज्यते हरिः सत्ता नि योनौ कलशेषु सीदति ॥ २ ॥ |
| ५ …प्रभोस्ते * * | विश्वा धामानि विश्वचक्ष ऋभ्वसः प्रभोष् टे सतः परि यन्ति केतवः । |
| व्यानशिः * * धर्मभिः… | व्यानशी पवसे सोम धर्मणा पतिर् विश्वस्य भुवनस्य राजसि ॥ ३ ॥ |
| ९.६१.१६ | पवमानो अजीजनद् दिवश् चित्रं न तन्यतुम् । ज्योतिर् वैश्वानरं बृहत् ॥ ४ ॥ |
| १७ कौ प्रथमपादयोर् विपर्यासः | पवमानस्य ते रसो मदो राजन् अदुच्छुनः । वि वारम् अव्यम् अर्षति ॥ ५ ॥ |
| १८ | पवमान रसस् तव दक्षो वि राजति द्युमान् । ज्योतिर् विश्वं स्वर् दृशे ॥ ६ ॥ |

| | |
|---|---|
| ९.४१.१ * ये... | प्र यद् गावो न भूर्णयस् त्वेषा अयासो अक्रमुः । |
| | घ्नन्तः कृष्णाम् अप त्वचम् ॥ ७ ॥ |
| २ * मनामहे * * दुराव्यम् | सुवितस्य वनामहे अति सेतुं दुराय्यम् । |
| साह्वांसो ... | साह्याम दस्युम् अव्रतम् ॥ ८ ॥ |
| ३ | शृण्वे वृष्टेर् इव स्वनः पवमानस्य शुष्मिणः । |
| | चरन्ति विद्युतो दिवि ॥ ९ ॥ |
| ४ | आ पवस्व महीम् इषं गोमद् इन्दो हिरण्यवत् । |
| * वाजवत् सुतः | अश्ववत् सोम वीरवत् ॥ १० ॥ |
| ५ स पवस्व विचर्षण * * * पृण (एवं कौ) | पवस्व विश्वचर्षण आ मही रोदसी पृणा । |
| | उषाः सूर्यो न रश्मिभिः ॥ ११ ॥ |
| ६ कौ * नः... | परि णः शर्मयन्त्या धारया सोम विश्वतः । |
| | सरा रसेव विष्टपम् ॥ १२ ॥ |
| ९.३९.१ | आशुर् अर्ष बृहन्मते परि प्रियेण धाम्ना । |
| | यत्र देवा इति ब्रुवन् ॥ १३ ॥ |
| २ | परिष्कृण्वन्न् अनिष्कृतं जनाय यातयन्न् इषः । |
| | वृष्टिं दिवः परि स्रव ॥ १४ ॥ |
| ४ | अयं स यो दिवस् परि रघुयामा पवित्र आ । |
| | सिन्धोर् ऊर्मा व्य् अक्षरत् ॥ १५ ॥ |
| ३ | सुत एति पवित्र आ त्विषिं दधान ओजसा । |
| | विचक्षाणो विरोचयन् ॥ १६ ॥ |
| ५ | आविवासन् परावतो अथो अर्वावतः सुतः । |
| | इन्द्राय सिच्यते मधु ॥ १७ ॥ |
| ६ | समीचीना अनूषत हरिं हिन्वन्त्य् अद्रिभिः । |
| योनावृतस्य सीदत | इन्दुम् इन्द्राय पीतये ॥ १८ ॥ |
| ९.६५.१ | हिन्वन्ति सूरम् उस्रयः स्वसारो जामयस् पतिम् । |
| | महाम् इन्दुं महीयुवः ॥ १९ ॥ |
| २ * रुचारुचा देवो देवेभ्यस्परि | पवमान रुधारुचा देव देवेभ्यः सुतः । |
| ...विश (एवं कौ) | विश्वा वसून्य् आ विशा ॥ २० ॥ |
| ३ | आ पवमान सुष्टुतिं वृष्टिं देवेभ्यो दुवः । |
| | इषे पवस्व संयतम् ॥ २१ ॥ ॥२१॥ |

### ३.२२

| | |
|---|---|
| ऋ ६.१६.३४ | अग्निर् वृत्राणि जङ्घनद् द्रविणस्युर् विपन्यया । |
| | समिद्धः शुक्र आहुतः ॥ १ ॥ |
| ३५ | गर्भे मातुः पितुष् पिता विदिद्युतानो अक्षरे । |
| | सीदन्न् ऋतस्य योनिम् आ ॥ २ ॥ |
| ३६ | ब्रह्म प्रजावद् आ भर जातवेदो विचर्षणे । |

अग्ने यद् दीदयद् दिवि ॥ ३ ॥
५.११.१ जनस्य गोपा अजनिष्ट जागृविर् अग्निः सुदक्षः सुविताय नव्यसे ।
घृतप्रतीको बृहता दिविस्पृशा द्युमद् वि भाति भरतेभ्यः शुचिः ॥ ४ ॥
६ त्वाम् अग्ने अङ्गिरसो गुहा हितम् अन्व् अविन्दन् शिश्रियाणं वनेवने ।
स जायसे मथ्यमानः सहो महत् त्वाम् आहुः सहसस् पुत्रम् अङ्गिरः ॥ ५ ॥
२ यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरोहितम् अग्निं नरस् त्रिषध-
* * ईधिरे स्थे सम् इन्धते ।
इन्द्रेण देवैः सरथं स बर्हिषि सीदन् नि होता यजथाय सुक्रतुः ॥ ६ ॥
२.४१.४ अयं वां मित्रावरुणा सुतः सोम ऋतावृधा ।
ममेद् इह श्रुतं हवम् ॥ ७ ॥
५ राजानाव् अनभिद्रुहा ध्रुवे सदस्य् उत्तमे ।
* आसाते सहस्रस्थूण आशाते ॥ ८ ॥
६ ता सम्राजा घृतासुती आदित्या दानुनस् पती ।
सचेते अनवह्वरम् ॥ ९ ॥
१.८४.१३ इन्द्रो दधीचो अस्थभिर् वृत्राण्य् अप्रतिष्कुतः ।
जघान नवतीर् नव ॥ १० ॥
१४ इच्छन्न् अश्वस्य यच् छिरः पर्वतेष्व् अपश्रितम् ।
तद् विदच् छर्यणावति ॥ ११ ॥
१५ अत्राह गोर् अमन्वत नाम त्वष्टुर् अपीच्यम् ।
इत्था चन्द्रमसो गृहे ॥ १२ ॥
७.९४.१ इयं वाम् अस्य मन्मन इन्द्राग्नी पूर्व्यस्तुतिः ।
अभ्राद् वृष्टिर् इवाजनि ॥ १३ ॥
२ शृणुतं जरितुर् हवम् इन्द्राग्नी वनतं गिरः ।
ईशाना पिप्यतं धियः ॥ १४ ॥
३ मा पापत्वाय नो नरेन्द्राग्नी माभिशस्तये ।
मा नो रीरधतं निदे ॥ १५ ॥ ॥२२॥

३.२३

ऋ ९.२५.१ पवस्व दक्षसाधनो देवेभ्यः पीतये हरे ।
मरुद्भ्यो वायवे मदः ॥ १ ॥
३ सं देवैः शोभते वृषा कविर् योनाव् अधि प्रियः ।

| | |
|---|---|
| वृत्रहा देववीतमः | पवमानो अदाभ्यः ॥ २ ॥ |
| २ | पवमान धिया हितो ऽभि योनिं कनिक्रदत् । |
| ...विश । कौ * * आरुहः | धर्मणा वायुम् आ रुह ॥ ३ ॥ |
| ९.१०७.१९ | तवाहं सोम रारण सख्य इन्दो दिवेदिवे । |
| | पुरूणि बभ्रो नि चरन्ति माम् अव परिधींर् अति तं इहि ॥४॥ |
| २० उताहं * * * * * सख्याय * * | तवाहं नक्तम् उत सोम ते दिवा दुहानो बभ्र ऊधनि । |
| ...पप्तिम (एवं कौ) | घृणा तपन्तम् अति सूर्यं परः शकुना इव पप्तिमा ॥ ५ ॥ |
| ९.४०.१ | पुनानो अक्रमीद् अभि विश्वा मृधो विचर्षणिः । |
| | शुम्भन्ति विप्रं धीतिभिः ॥ ६ ॥ |
| २ ...इन्द्रं * सुतः | आ योनिम् अरुणो रुहद् गमद् इन्द्रो वृषा सुतम् । |
| ...सीदति | ध्रुवे सदसि सीदतु ॥ ७ ॥ |
| ३ | नू नो रयिं महाम् इन्दो ऽस्मभ्यं सोम विश्वतः । |
| | आ पवस्व सहस्रिणम् ॥ ८ ॥ |
| ७.२२.१ | पिबा सोमम् इन्द्र मन्दतु त्वा यं ते सुषाव हर्यश्वाद्रिः । |
| | सोतुर् बाहुभ्यां सुयतो नार्वा ॥ ९ ॥ |
| ३ | बोधा सु मे मघवन् वाचम् एमां यां ते वसिष्ठो अर्चति प्रशस्तिम् । |
| ...जुषस्व (एवं कौ) | इमा ब्रह्म सधमादे जुषस्वा ॥ १० ॥ |
| २ | यस् ते मदो युज्यश् चारुर् अस्ति येन वृत्राणि हर्यश्व हंसि । |
| | स त्वाम् इन्द्र प्रभूवसो ममत्तु ॥ ११ ॥ |
| ८.९७.१० | विश्वा पृतना अभिभूतरं नरः सजूस् ततक्षुर् इन्द्रं जजनुश् च राजसे । |
| क्रत्वा वरिष्ठं वर आमुरिम् * * तवसं * | क्रत्वे वरे स्थेमन्य् आमुरीम् उतोग्रम् ओजिष्ठं तरसं तरस्विनम् ॥ १२ ॥ |
| १२ ...अभिस्वरा | नेमिं नमन्ति चक्षसा मेषं विप्रा अभिस्वरे । |
| | सुदीतयो वो अद्रुहो ऽपि कर्णे तरस्विनः सम् ऋक्वभिः ॥ १३ ॥ |
| ११ * ई... | सम् उ रेभासो अस्वरन्न् इन्द्रं सोमस्य पीतये । |
| स्वर्पतिं यदीं... | स्वःपतिर् यदी वृधे धृतव्रतो ह्य् ओजसा सम् ऊतिभि : ॥१४॥ |
| ८.७०.१ | यो राजा चर्षणीनां याता रथेभिर् अध्रिगुः । |
| * * * ज्येष्ठः... | विश्वासां तरुता पृतनानां ज्येष्ठं यो वृत्रहा गृणे ॥ १५ ॥ |
| २ | इन्द्रं तं शुम्भ पुरुहन्मन्न् अवसे यस्य द्विता विधर्तरि । |
| हस्ताय ...महो दिवे * * | हस्तेन वज्रः प्रति धायि दर्शतो महान् देवो नं सूर्यः ॥ १६ ॥ ॥२३॥ |
| | ३.२४ |
| ऋ ९.९.१ | परि प्रिया दिवः कविर् वयांसि नप्त्योर् हितः । |

| | |
|---|---|
| सुवानो... | स्वानैर् याति कविक्रतुः ॥ १ ॥ |
| २ ...अद्रुहे | प्रप्र क्षयाय पन्यसे जनाय जुष्टो अद्रुहः । |
| * * चनिष्ठया | वीत्य् अर्ष पनिष्टये ॥ २ ॥ |
| ३ | स सूनुर् मातरा शुचिर् जातो जाते अरोचयत् । |
| | महान् मही ऋतावृधा ॥ ३ ॥ |
| ९.१०८.३ * * * दैव्या... | त्वं ह्य् अङ्ग दैव्य पवमान जनिमानि द्युमत्तमः । |
| * घोषयः | अमृतत्वाय घोषयन् ॥ ४ ॥ |
| ४ * नवग्वो... | येना नवग्वा दध्यङ्ङ् अपोर्णुते येन विप्रास आपिरे । |
| ...आनशुः | देवानां सुम्ने अमृतस्य चारुणो येन श्रवांस्य् आशत ॥ ५ ॥ |
| ९.१०६.१० * * ऊर्मिणाव्यो (कौ | सोमः पुनान ऊर्मिणा अव्यं वारं वि धावति । |
| [ऊर्मिणाव्यं) * * * | अग्रे वाचः पवमानः कनिक्रदत् ॥ ६ ॥ |
| ११ * हिन्वन्ति... | धीभिर् मृजन्ति वाजिनं वने क्रीडन्तम् अत्यविम् । |
| | अभि त्रिपृष्ठं मतयः सम् अस्वरन् ॥ ७ ॥ |
| १२ * * * मीळ्हे... | असर्जि कलशां अभि मीढ्वान् सप्तिर् न वाजयुः । |
| | पुनानो वाचं जनयन्न् असिष्यदत् ॥ ८ ॥ |
| ९.९६.५ | सोमः पवते जनिता मतीनां जनिता दिवो जनिता पृथिव्याः । |
| | जनिताग्नेर् जनिता सूर्यस्य जनितेन्द्रस्य जनितोत विष्णोः ॥ ९ ॥ |
| ६ | ब्रह्मा देवानां पदवीः कवीनाम् ऋषिर् विप्राणां महिषो मृगाणाम् । |
| | श्येनो गृध्राणां स्वधितिर् वनानां सोमः पवित्रम् अत्य् एति रेभन् ॥ १० ॥ |
| ७ ...सोमः * | प्रावीविपद् वाच ऊर्मिं न सिन्धुर् गिरः स्तोमान् पवमानो मनीषाः । |
| | अन्तः पश्यन् वृजनेमावराण्य् आ तिष्ठति वृषभो गोषु जानन् ॥ ११ ॥ |
| ८.१०२.७ | अग्निं वो वृधन्तम् अध्वराणां पुरूतमम् । |
| | अच्छा नप्त्रे सहस्वते ॥ १२ ॥ |
| ८ | अयं यथा न आभुवत् त्वष्टा रूपेव तक्ष्या । |
| | अस्य क्रत्वा यशस्वतः ॥ १३ ॥ |
| ९ | अयं विश्वा अभि श्रियो अग्निर् देवेषु पत्यते । |
| | आ वाजैर् उप नो गमत् ॥ १४ ॥ |
| १.८४.४ | इमम् इन्द्र सुतं पिब ज्येष्ठम् अमर्त्यं मदम् । |
| | शुक्रस्य त्वाभ्य् अक्षरन् धारा ऋतस्य सादने ॥ १५ ॥ |
| ६ | नकिष् ट्वद् रथीतरो हरी यद् इन्द्र यच्छसे । |

नकिष् ट्वानु मज्मना नकिः स्वश्व आनशे ॥ १६ ॥
५ इन्द्राय नूनम् अर्चतोक्थानि च ब्रवीतन ।
सुता अमत्सुर् इन्दवो ज्येष्ठं नमस्यता सहः ॥ १७ ॥ ॥२४॥

३.२५

ऋ ९.८६.३९ गोवित् पवस्व वसुविद् धिरण्यविद् रेतोधा इन्दो भुवनेष्व् अर्पितः ।
कौ ...नर * * त्वं सुवीरो असि सोम विश्ववित् तं त्वा विप्रा उप गिरेम आसते ॥ १ ॥
३८ त्वं नृचक्षा असि सोम विश्वतः पवमान वृषभ ता वि धावसि ।
स नः पवस्व वसुमद् धिरण्यवद् वयं स्याम भुवनेषु जीवसे ॥ २ ॥
३७ कौ * * * ईयसे... ईशान इमा भुवनानि वीयसे युजान इन्दो हरितः सुपर्ण्यः ।
तास् ते क्षरन्तु मधुमद् घृतं पयस् तव व्रते सोम तिष्ठन्तु कृष्टयः ॥ ३ ॥
९.६४.७ पवमानस्य विश्ववित् प्र ते सर्गा असृक्षत ।
सूर्यस्येव न रश्मयः ॥ ४ ॥
८ केतुं कृण्वन् दिवस् परि विश्वा रूपाभ्य् अर्षसि ।
समुद्रः सोम पिन्वसे ॥ ५ ॥
९ हिन्वानो... जज्ञानो वाचम् इष्यसि पवमान विधर्मणि ।
अक्रान् * * * क्रन्दं देवो न सूर्यः ॥ ६ ॥
९.२४.१ प्र सोमासो अधन्विषुः पवमानास इन्दवः ।
* * मृजत श्रीणाना अप्सु वृञ्जते ॥ ७ ॥
२ अभि गावो अधन्विषुर् आपो न प्रवता यतीः ।
पुनाना इन्द्रम् आशत ॥ ८ ॥
३ * * * * पातवे प्र पवमान धन्वसि सोमेन्द्राय मादनः ।
नृभिर् यतो वि नीयसे ॥ ९ ॥
५ ...परिधावसि इन्दो यद् अद्रिभिः सुतः पवित्रं परिदीयसे ।
अरम् इन्द्रस्य धाम्ने ॥ १० ॥ ॥ २५ ॥

३.२६

ऋ ९.२४.४ ...चर्षणीसहे त्वं सोम नृमादनः पवस्व चर्षणीधृतिः ।
सस्निर् यो अनुमाद्यः ॥ १ ॥
६ * वृत्रहन्तमोक्थेभिर् * पवस्व वृत्रहन्तम उक्थेभिर् अनुमाद्यः ।
शुचिः पावको अद्भुतः ॥ २ ॥
७ * * * * सुतस्य मध्वः शुचिः पावक उच्यते सोमः सुतः स मधुमान् ।

| | |
|---|---|
| | देवावीर् अघशंसहा ॥ ३ ॥ |
| ९.२०.१ * * * ऽव्यो * अर्षति | प्र कविर् देववीतये अव्या वारेभिर् अव्यत । |
| | साह्वान् विश्वा अभि स्पृधः ॥ ४ ॥ |
| २ | स हि ष्मा जरितृभ्य आ वाजं गोमन्तम् इन्वति । |
| * सहस्त्रिणम् (एवं कौ) | पवमानः सषासति ॥ ५ ॥ |
| ३ * * * मृशसे... | परि विश्वानि चेतसा मृज्यसे पवसे मती । |
| | स नः सोम श्रवो विदः ॥ ६ ॥ |
| ४ | अभ्य् अर्ष बृहद् यशो मघवद्भ्यो ध्रुवं रयिम् । |
| | इषं स्तोतृभ्य आ भर ॥ ७ ॥ |
| ५ | त्वं राजेव सुव्रतो गिरः सोमा विवेशिथ । |
| | पुनानो वह्ने अद्भुत ॥ ८ ॥ |
| ६ | स वह्निर् अप्सु दुष्टरो मृज्यमानो गभस्त्योः । |
| | सोमश् चमूषु सीदति ॥ ९ ॥ |
| ७ क्रीळर्मघो ... । कौ क्रीदुर् ... | क्रीड़ुर् मघो न मंहयुः पवित्रं सोम गच्छसि । |
| | दधत् स्तोत्रे सुवीर्यम् ॥ १० ॥ ॥ २६ ॥ |
| | ३.२७ |
| ऋ ९.५५.१ | यवंयवं नो अन्धसा पुष्टंपुष्टं परि स्रव । |
| सोस विश्वा च * | विश्वा च सोम सौभगा ॥ १ ॥ |
| २ | इन्दो यथा तव स्तवो यथा ते जातम् अन्धसः । |
| | नि बर्हिषि प्रिये सदः ॥ २ ॥ |
| ३ | उत नो गोविद् अश्ववित् पवस्व सोमान्धसा । |
| | मक्षूतमेभिर् अहभिः ॥ ३ ॥ |
| ४ | यो जिनाति न जीयते हन्ति शत्रुम् अभीत्य । |
| | स पवस्व सहस्रजित् ॥ ४ ॥ |
| ९.६२.७ | यास् ते धारा मधुश्चुतो असृग्रम् इन्द ऊतये । |
| | ताभिः पवित्रम् आसदः ॥ ५ ॥ |
| ८ ... रोमाण्य् * | सो अर्षेन्द्राय पीतये तिरो वाराण्य् अव्यया । |
| सीदन्योना वनेष्वा | सीदन्न् ऋतस्य योनिम् आ ॥ ६ ॥ |
| ९ * इन्दो ... | त्वं सोम परि स्रव स्वादिष्ठो अङ्गिरोभ्यः । |
| | वरिवोविद् घृतं पयः ॥ ७ ॥ ॥ २७ ॥ |
| | ३.२८ |
| ऋ ५.१३.२ * * मनामहे (एवं कौ)... | अग्नेः स्तोमं वनामहे सिध्रम् अद्य दिविस्पृशः । |
| | देवस्य द्रविणस्यवः ॥ १ ॥ |
| ३ | अग्निर् जुषत नो गिरो होता यो मानुषेष्व् आ । |
| | स यक्षद् दैव्यं जनम् ॥ २ ॥ |
| ४ | त्वम् अग्ने सप्रथा असि जुष्टो होता वरेण्यः । |

| | |
|---|---|
| | त्वया यज्ञं वि तन्वते ॥ ३ ॥ |
| १०.९१.५ ...चित्राश् * * । कौ * * * * अग्नेश्चिकित्र * | तव श्रियो वर्ष्यस्येव विद्युतो अग्ने चिकित्व उषसाम् |
| न केतवः | इवेतयः । |
| | यद् ओषधीर् अभिसृष्टो वनानि च परि स्वयं चिनुषे |
| * आस्ये | अन्नम् आसनि ॥ ४ ॥ |
| ७ वातोपधूत ... | वातोपजूत इषितो वशां अनु तृषु यद् अन्ना वेविषद् |
| | वितिष्ठसे । |
| ...अजराणि | आ ते यतन्ते रथ्यो यथा पृथक् शर्धांस्य् अग्ने अजरस्य |
| | धक्षतः ॥ ५ ॥ |
| ८ कौ ..परिभूतरं | मेधाकारं विदथस्य प्रसाधनम् अग्निं होतारं परिभूतमं |
| | मतिम् । |
| तमिदर्भे हविष्या * * तमिन्महे * | त्वाम् अर्भस्य हविषः समानम् इत् त्वां महो वृणते |
| | नान्यं त्वत् ॥ ६ ॥ |
| ५.७०.१ | पुरूरुणा चिद् ध्य् अस्त्य् अवो नूनं वां वरुण । |
| | मित्र वंसि वां सुमतिम् ॥ ७ ॥ |
| २ * * * * * धायसे | ता वां सम्यग् अद्रुह्वाणेषम् अश्याम धाम च । |
| * ते रुद्रा * | वयं वां मित्रा स्याम ॥ ८ ॥ |
| ३ * * रुद्रा ... | पातं नो मित्रा पायुभिर् उत त्रायेथां सुत्रात्रा । |
| तुर्याम * * । कौ * दस्यूं * | साह्याम दस्यून् तनूभिः ॥ ९ ॥ |
| ८.७६.१० * * * पीत्वी ... | उत्तिष्ठन्न् ओजसा सह पीत्वा शिप्रे अवेपयः । |
| | सोमम् इन्द्र चमू सुतम् ॥ १० ॥ |
| ११ * * * * ऋक्षमाणमकृपेताम्। कौ ... अद्ददेताम् | अनु त्वा रोदसी उभे स्पर्धमानम् अददाताम् । |
| * * °भवः (एवं कौ) | इन्द्र यद् दस्युहाभुवः ॥ ११ ॥ |
| १२ ...ऋतस्पृशम् | वाचम् अष्टापदीम् अहं नवस्रक्तिम् ऋतावृधम् । |
| | इन्द्रात् परि तन्वं ममे ॥ १२ ॥ |
| ६.६०.७ | इन्द्राग्नी युवाम् इमे ऽभि स्तोमा अनूषत । |
| | पिबतं शंभुवा सुतम् ॥ १३ ॥ |
| ८ | या वां सन्ति पुरुस्पृहो नियुतो दाशुषे नरा । |
| | इन्द्राग्नी ताभिर् आ गतम् ॥ १४ ॥ |
| ९ | ताभिर् आ गच्छतं नरोपेदं सवनं सुतम् । |
| | इन्द्राग्नी सोमपीतये ॥ १५ ॥ ॥२८॥ |

३.२९

| | |
|---|---|
| ऋ ९.६५.१९ | अर्षा सोम द्युमत्तमो ऽभि द्रोणानि रोरुवत् । |
| * श्येनो न योनिमा | सीदन् योनौ वनेष्व् आ ॥ १ ॥ |
| २० | अप्सा इन्द्राय वायवे वरुणाय मरुद्भ्यः । |

| | |
|---|---|
| सोमो अर्षति * | सोमा अर्षन्तु विष्णवे ॥ २ ॥ |
| २१ | इषं तोकाय नो दधद् अस्मभ्यं सोम विश्वतः । |
| | आ पवस्व सहस्रिणम् ॥ ३ ॥ |
| ९.१०७.८ * * षुवाणः… | सोम उ ष्वाणः सोतृभिर् अधि ष्णुभिर् अवीनाम् । |
| | अश्वयेव हरिता याति धारया मन्द्रया याति धारया ॥ ४ ॥ |
| ९ | अनूपे गोमान् गोभिर् अक्षाः सोमो दुग्धाभिर् अक्षाः । |
| | समुद्रं न संवरणान्य् अग्मन् मन्दी मदाय तोशते ॥ ५ ॥ |
| ९.१९.१ | यत् सोम चित्रम् उक्थ्यं दिव्यं पार्थिवं वसु । |
| | तन् नः पुनान आ भर ॥ ६ ॥ |
| ३ * * आयुषु… | वृषा पुनान आयूंषि स्तनयन्न् अधि बर्हिषि । |
| …आसदत् | हरिः सन् योनिम् आसदः ॥ ७ ॥ |
| २ * * * स्वर्पती… | युवं हि स्थः स्वःपती इन्द्रश् च सोम गोपती । |
| | ईशाना पिप्यतं धियः ॥ ८ ॥ |
| १.८१.१ | इन्द्रो मदाय वावृधे शवसे वृत्रहा नृभिः । |
| * * * आजिषूतेम्… | तम् इन् महत्स्व् आजिषूतिम् अर्भे हवामहे स वाजेषु प्र नो ऽविषत् ॥ ९ ॥ |
| २ | असि हि वीर सन्यो ऽसि भूरि परादतिः । |
| | असि दभ्रस्य चिद् वृधो यजमानाय शिक्षसि सुन्वते भूरि ते वसु ॥ १० ॥ |
| ३ …धना | यद् उदीरत आजयो धृष्णवे धीयते धनम् । |
| युक्ष्वा… | युङ्क्ष्वा मदच्युता हरी कं हनः कं वसौ दधो ऽस्मं इन्द्र वसौ दधः ॥ ११ ॥ |
| १.८४.१० * * * मध्वः… | स्वादोर् इत्था विषूवतो मधोः पिबन्ति गौर्यः । |
| …शोभसे * | या इन्द्रेण सयावरीर् वृष्णा मदन्ति शोभथा वस्वीर् अनु स्वराज्यम् ॥ १२ ॥ |
| ११ | ता अस्य पृशनायुवः सोमं श्रीणन्ति पृश्नयः । |
| | प्रिया इन्द्रस्य धेनवो वज्रं हिन्वन्ति सायकं वस्वीर् अनु स्वराज्यम् ॥ १३ ॥ |
| १२ | ता अस्य नमसा सहः सपर्यन्ति प्रचेतसः । |
| | व्रतान्य् अस्य सश्चिरे पुरूणि पूर्वचित्तये वस्वीर् अनु स्वराज्यम् ॥ १४ ॥ ॥ २९ ॥ |

३.३०

| | |
|---|---|
| ऋ ९.६२.४ | असाव्य् अंशुर् मदायाप्सु दक्षो गिरिष्ठाः । |
| | श्येनो न योनिम् आसदत् ॥ १ ॥ |
| ५ …धूतो * सुतः | शुभ्रम् अन्धो देववातम् अप्सु धौतं नृभिः सुतम् । |
| | स्वदन्ति गावः पयोभिः ॥ २ ॥ |

| | |
|---|---|
| ६ * ईम् (एवं कौ) * * हेतारो... | आद् ईद् अश्वं न हेतारम् अशूशुभन्न् अमृताय । |
| मध्वो... | मधो रसं सधमादे ॥ ३ ॥ |
| ९.१०८.९ ... दिदीहि (एवं कौ) * देवयुः | अभि द्युम्नं बृहद् यश इषस् पते दीदिहि देव देवयुम् । |
| | वि कोशं मध्यमं युवा ॥ ४ ॥ |
| १० | आ वच्यस्व सुदक्ष चम्वोः सुतो विशां वह्निर् न विश्पतिः । |
| ... अपां जिन्व * | वृष्टिं दिवः पवस्व रीतिम् अपो जिन्वन् गविष्टये धियः ॥ ५ ॥ |
| ९.१०२.१ क्राणा... | प्राणा शिशुर् महीनां हिन्वन्न् ऋतस्य दीधितिम् । |
| | विश्वा परि प्रिया भुवद् अध द्विता ॥ ६ ॥ |
| ३ ...एरय * | त्रीणि त्रितस्य धारया पृष्ठेष्व् ऐरयद् रयिम् । |
| | मिमीते अस्य योजना वि सुक्रतुः ॥ ७ ॥ |
| २ | उप त्रितस्य पाष्योर् अभक्त यद् गुहा पदम् । |
| | यज्ञस्य सप्त धामभिर् अध प्रियम् ॥ ८ ॥ |
| ९.१००.६ * वाजासातमः... | पवस्व वाजसातये पवित्रे धारया सुतः । |
| कौ... मधुमत्तरः | इन्द्राय सोम विष्णवे देवेभ्यो मधुमत्तमः ॥ ९ ॥ |
| ७ * * मातरो... | त्वां रिहन्ति धीतयो हरिं पवित्रे अद्रुहः । |
| * * * धेनवः पवमान * | वत्सं जातं न मातरः पवमाना विधर्मणि ॥ १० ॥ |
| ९ | त्वं द्यां च महिव्रत पृथिवीं चाति जभ्रिषे । |
| | प्रति द्रापिम् अमुञ्चथाः पवमान महित्वना ॥ ११ ॥ |
| ९.९७.१० | इन्दुर् वाजी पवते गोन्योघा इन्द्रे सोमः सह इन्वन् मदाय । |
| * * * * अरातीर्... | हन्ति रक्षो बाधते पर्य् अरातिं वरिवः कृण्वन् वृजनस्य राजा ॥ १२ ॥ |
| ११ | अध धारया मध्वा पृचानस् तिरो रोम पवते अद्रिदुग्धः । |
| | इन्दुर् इन्द्रस्य सख्यं जुषाणो देवो देवस्य मत्सरो मदाय ॥ १३ ॥ |
| १२ * प्रियाणि... | अभि व्रतानि पवते पुनानो देवो देवान् स्वेन रसेन पृञ्चन् । |
| | इन्दुर् धर्माण्य् ऋतुथा वसानो दश क्षिपो ऽव्यत सानो अव्ये ॥ १४ ॥ |
| ५.६.४ | आ ते अग्न इधीमहि द्युमन्तं देवाजरम् । |
| | यद् ध स्या ते पनीयसी समिद् दीदयति द्यवीषं स्तोतृभ्य आ भर ॥ १५ ॥ |
| ५ ...शोचिषस् * | आ ते अग्न ऋचा हविः शुक्रस्य ज्योतिषस् पते । |
| | सुश्चन्द्र दस्म विश्पते हव्यवाट् तुभ्यं हूयत इषं स्तोतृभ्य आ भर ॥ १६ ॥ |

| | |
|---|---|
| ९ उभे * सर्पिषो ... | ओभे सुश्चन्द्र विश्पते दर्वी श्रीणीष आसनि । |
| | उतो न उत् पुपूर्या उक्थेषु शवसस् पत इषं स्तोतृभ्य आ भर ॥ १७ ॥ |
| ८.९८.१ | इन्द्राय साम गायत विप्राय बृहते बृहत् । |
| धर्मकृते ... | ब्रह्मकृते विपश्चिते पनस्यवे ॥ १८ ॥ |
| २ | त्वम् इन्द्राभिभूर् असि त्वं सूर्यम् अरोचयः । |
| | विश्वकर्मा विश्वदेवो महं असि ॥ १९ ॥ |
| ३ विभ्राजन् ... | विभ्राजं ज्योतिषा स्वर् अगच्छो रोचनं दिवः । |
| | देवास् त इन्द्र सख्याय येमिरे ॥ २० ॥ |
| १.८४.१ | असावि सोम इन्द्र ते शविष्ठ धृष्णव् आ गहि । |
| | आ त्वा पृणक्त्व् इन्द्रियं रजः सूर्यो न रश्मिभिः ॥ २१ ॥ |
| ३ | आ तिष्ठ वृत्रहन् रथं युक्ता ते ब्रह्मणा हरी । |
| | अर्वाचीनं सु ते मनो ग्रावा कृणोतु वग्नुना ॥ २२ ॥ |
| २ | इन्द्रम् इद् धरी वहतो ऽप्रतिधृष्टशवसम् । |
| ऋषीणां च सुष्टुतीर् * * * * | ऋषीणां सुष्टुतीर् उप यज्ञं च मानुषाणाम् ॥ २३ ॥ ॥३०॥ |
| | ३.३१ |
| क ९.८६.१० | ज्योतिर् यज्ञस्य पवते मधु प्रियं पिता देवानां जनिता विभूवसुः । |
| | दधाति रत्नं स्वधयोर् अपीच्यं मदिंतमो मत्सर इन्द्रियो रसः ॥ १ ॥ |
| ११ | अभिक्रन्दन् कलशं वाज्य् अर्षति पतिर् दिवः शतधारो विचक्षणः । |
| | हरिर् मित्रस्य सदनेषु सीदति मर्मृजानो ऽविभिः सिन्धुभिर् वृषा ॥ २ ॥ |
| १२ * * * अर्षस्य् ... | अग्रे सिन्धूनां पवमानो अर्षस्य् अग्रे वाचो अग्रियो गोषु गच्छसि । |
| * * भजते महाधनं * * पूयते वृषा | अग्रे वाजस्य भजसे महद् धनं स्वायुधः सोतृभिः सोम सूयसे ॥ ३ ॥ |
| ९.६४.४ | असृक्षत प्र वाजिनो गव्या सोमासो अश्वया । |
| | शुक्रासो वीरयाशवः ॥ ४ ॥ |
| ५ | शुम्भमाना ऋतायुभिर् मृज्यमाना गभस्त्योः । |
| | पवन्ते वारे अव्यये ॥ ५ ॥ |
| ६ | ते विश्वा दाशुषे वसु सोमा दिव्यानि पार्थिवा । |
| | पवन्ताम् आन्तरिक्ष्या ॥ ६ ॥ |
| ९.२.१ | पवस्व देववीर् अति पवित्रं सोम रंह्या । |
| | इन्द्रम् इन्दो वृषा विश ॥ ७ ॥ |

| | |
|---|---|
| २ | आ वच्यस्व महि प्सरो वृषेन्दो द्युम्नवत्तमः । |
| | आ योनिं धर्णसिः सदः ॥ ८ ॥ |
| ३ | अधुक्षत प्रियं मधु धारा सुतस्य वेधसः । |
| | अपो वसिष्ट सुक्रतुः ॥ ९ ॥ |
| ४ | महान्तं त्वा महीर् अन्व् आपो अर्षन्ति सिन्धवः । |
| | यद् गोभिर् वासयिष्यसे ॥ १० ॥ |
| ५ | समुद्रो अप्सु मामृजे विष्टम्भो धरुणो दिवः । |
| | सोमः पवित्रे अस्मयुः ॥ ११ ॥ |
| ६ | अचिक्रदद् वृषा हरिर् महान् मित्रो न दर्शतः । |
| * * रोचते | सं सूर्येण दिद्युते ॥ १२ ॥ |
| ७ | गिरस् त इन्द्र ओजसा मर्मृज्यन्ते अपस्युवः । |
| | याभिर् मदाय शुम्भसे ॥ १३ ॥ |
| ८ | तं त्वा मदाय घृष्वय उ लोककृत्नुम् ईमहे । |
| * प्रशस्तयो महीः | तव प्रशस्तये महे ॥ १४ ॥ |
| १० | गोषा इन्दो नृषा अस्य् अश्वसा वाजसा उत । |
| | आत्मा यज्ञस्य पूर्व्यः ॥ १५ ॥ |
| ९ * * इन्द्रयुर् मधवः * * | अस्मभ्यम् इन्दव् इन्द्रियं मधोः पवस्व धारया । |
| | पर्जन्यो वृष्टिमं इव ॥ १६ ॥ |
| ९.४.१ | सना च सोम जेषि च पवमान महि श्रवः । |
| | अथा नो वस्यसस् कृधि ॥ १७ ॥ |
| २ | सना ज्योतिः सना स्वर् विश्वा च सोम सौभगा । |
| | अथा नो वस्यसस् कृधि ॥ १८ ॥ |
| ३ | सना दक्षम् उत क्रतुम् अप सोम मृधो जहि । |
| | अथा नो वस्यसस् कृधि ॥ १९ ॥ |
| ४ | पवीतारः पुनीतन सोमम् इन्द्राय पातवे । |
| | अथा नो वस्यसस् कृधि ॥ २० ॥ |
| ५ * * न (एवं कौ)... | त्वं सूर्ये ण आ भज तव क्रत्वा तवोतिभिः । |
| | अथा नो वस्यसस् कृधि ॥ २१ ॥ |
| ६ | तव क्रत्वा तवोतिभिर् ज्योक् पश्येम सूर्यम् । |
| | अथा नो वस्यसस् कृधि ॥ २२ ॥ |
| ७ | अभ्य् अर्ष स्वायुध सोम द्विबर्हसं रयिम् । |
| | अथा नो वस्यसस् कृधि ॥ २३ ॥ |
| ८ * * रयिं * * | अभ्य् अर्षानपच्युतो वाजिन् समत्सु सासहिः । |
| | अथा नो वस्यसस् कृधि ॥ २४ ॥ |
| ९ | त्वां यज्ञैर् अवीवृधन् पवमान विधर्मणि । |
| | अथा नो वस्यसस् कृधि ॥ २५ ॥ |

१० रयिं नश् चित्रम् अश्विनम् इन्दो विश्वायुम् आ भर।
अथा नो वस्यसस् कृधि ॥ २६ ॥
९.५८.१ तरत् स मन्दी धावति धारा सुतस्यान्धसः ।
तरत् स मन्दी धावति ॥ २७ ॥
२ उस्रा वेद वसूनां मर्तस्य देव्य् अवसः ।
तरत् स मन्दी धावति ॥ २८ ॥
३ ध्वस्रयोः पुरुषन्त्योर् आ सहस्राणि दद्महे ।
तरत् स मन्दी धावति ॥ २९ ॥
४ आ ययोस् त्रिंशतं तना सहस्राणि च दद्महे ।
तरत् स मन्दी धावति ॥ ३० ॥
९.६२.२२ एते सोमा असृक्षत गृणानाः शवसे महे ।
मदिंतमस्य धारया ॥ ३१ ॥
२३ अभि गव्यानि वीतये नृम्णा पुनानो अर्षसि ।
सनद्वाजः परि स्रव ॥ ३२ ॥
२४ उत नो गोमतीर् इषो विश्वा अर्ष परिष्टुभः ।
गृणानो जमदग्निना ॥ ३३ ॥ ॥३१॥

३.३२

ऋ १०.१८७.१ प्राग्नये वाचम् ईरय वृषभाय क्षितीनाम् ।
स नः पर्षद् अति द्विषः ॥ १ ॥
२ यः परस्याः परावतस् तिरो धन्वातिरोचते ।
स नः पर्षद् अति द्विषः ॥ २ ॥
४ यो विश्वाभि विपश्यति भुवना सं च पश्यति ।
स नः पर्षद् अति द्विषः ॥ ३ ॥
१.९४.१ इमं स्तोमम् अर्हते जातवेदसे रथम् इव सं महेमा मनीषया ।
भद्रा हि नः प्रमतिर् अस्य संसद्य् अग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥ ४ ॥
४ भरामेध्मं कृणवामा हवींषि ते चितयन्तः पर्वणापर्वणा वयम् ।
* प्रतरं... जीवातवे प्रतरां साधया धियो ऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥ ५ ॥
३ शकेम त्वा समिधं साधया धियस् त्वे देवा हविर् अदन्त्य् आहुतम् ।
त्वम् आदित्यं आ वह तान् ह्य् उश्मस्य् अग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥ ६ ॥
७.६६.७ प्रति वां सूर उदिते मित्रं गृणीषे वरुणम् ।

अर्यमणं रिशादसम् ॥ ७ ॥
८ राया हिरण्यया मतिर् इयम् अवृकाय शवसे ।
इयं विप्रा मेधसातये ॥ ८ ॥
९ ते स्याम देव वरुण ते मित्र सूरिभिः सह ।
इषं स्वश् च धीमहि ॥ ९ ॥
८.४५.४० भिन्धि विश्वा अप द्विषः परि बाधो जही मृधः ।
वसु स्पार्हं तद् आ भर ॥ १० ॥
४२ * * विश्वमानुषो * * * यस्य ते विश्वम् आनुषग् भूरेर् दत्तस्य वेदति ।
वसु स्पार्हं तद् आ भर ॥ ११ ॥
४१ यद् वीडाव् इन्द्र यत् स्थिरे यत् पर्शाने पराभृतम् ।
वसु स्पार्हं तद् आ भर ॥ १२ ॥
८.३८.१ यज्ञस्य हि स्थ ऋत्विजा सस्नी वाजेषु कर्मसु ।
इन्द्राग्नी तस्य बोधतम् ॥ १३ ॥
२ इदं वां मदिरं मध्व् अधुक्षन्न् अद्रिभिर् नरः ।
इन्द्राग्नी तस्य बोधतम् ॥ १४ ॥
३ तोशासा रथयावाना वृत्रहणापराजिता ।
इन्द्राग्नी तस्य बोधतम् ॥ १५ ॥ ॥३२॥

३.३३

ऋ ९.६४.२२ इन्द्रायेन्दो मरुत्वते पवस्व मधुमत्तमः ।
ऋतस्य... अर्कस्य योनिम् आसदम् ॥ १ ॥
२३ ...वेधसः तं त्वा विप्रा वचोविदः परिष् कृण्वन्ति धर्णसिम् ।
सं त्वा मृजन्त्य् आयवः ॥ २ ॥
२४ * * * * पिबन्ति... रसं ते मित्रो अर्यमा पिबन्तु वरुणः कवे ।
पवमानस्य मरुतः ॥ ३ ॥
९.१०७.२१ * सुहस्त्य... मृज्यमानः सुहस्त्या समुद्रे वाचम् इन्वसि ।
रयिं पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहं पवमानाभ्य् अर्षसि ॥ ४ ॥
२२ मृजानो * * * वृषाव चक्रदो * पुनानो वारे पवमानो अव्यये वृषो अचिक्रदद् वने ।
देवानां सोम पवमान निष्कृतं गोभिर् अञ्जानो अर्षसि ॥ ५ ॥
९.६१.७ एतम् उ त्यं दश क्षिपो मृजन्ति सिन्धुमातरम् ।
सम् आदित्येभिर् अख्यत ॥ ६ ॥
८ सम् इन्द्रेणोत वायुना सुत एति पवित्र आ ।
* सूर्यस्य (एवं कौ) * सं सूर्येण रश्मिभिः ॥ ७ ॥
९ स नो भगाय वायवे पूष्णे पवस्व मधुमान् ।
चारुर् मित्रे वरुणे च ॥ ८ ॥
१.३०.१३ * नः (एवं कौ)... रेवतीर् णः सधमाद इन्द्रे सन्तु तुविवाजाः ।

| | |
|---|---|
| | क्षुमन्तो याभिर् मदेम ॥ ९ ॥ |
| १४ * * * त्मनाप्तः * * इयानः | आ घ त्वावान् त्मना युक्तः स्तोतृभ्यो धृष्णव् ईयानः । |
| | ऋणोर् अक्षं न चक्रयोः ॥ १० ॥ |
| १५ | आ यद् दुवः शतक्रतव् आ कामं जरितॄणाम् । |
| | ऋणोर् अक्षं न शचीभिः ॥ ११ ॥ |
| १.४.१ | सुरूपकृत्नुम् ऊतये सुदुघाम् इव गोदुहे । |
| | जुहूमसि द्यविद्यवि ॥ १२ ॥ |
| ३ | अथा ते अन्तमानां विद्याम सुमतीनाम् । |
| | मा नो अति ख्य आ गहि ॥ १३ ॥ |
| २ | उप नः सवना गहि सोमस्य सोमपाः पिब । |
| | गोदा इद् रेवतो मदः ॥ १४ ॥ |
| १०.१३४.१ | उभे यद् इन्द्र रोदसी आपप्राथोषा इव । |
| | महान्तं त्वा महीनां सम्राजं चर्षणीनाम् । |
| | देवी जनित्र्य् अजीजनद् भद्रा जनित्र्य् अजीजनत् ॥ १५ ॥ |
| ६ | दीर्घं ह्य् अङ्कुशं यथा शक्तिं बिभर्षि मन्तुमः । |
| * * पदाजो वयां * * | पूर्वेण मघवन् पदा वयाम् अजो यथा यमः । |
| | देवी जनित्र्य् अजीजनद् भद्रा जनित्र्य् अजीजनत् ॥ १६ ॥ |
| ३ | अव त्या बृहतीर् इषो विश्वश्चन्द्रा अमित्रहन् । |
| * * धूनुहीन्द्र * * | शचीभिः शक्र धूनुष इन्द्र विश्वाभिर् ऊतिभिः । |
| | देवी जनित्र्य् अजीजनद् भद्रा जनित्र्य् अजीजनत् ॥ १७॥ |
| | ॥३३॥ |

## ३.३४

| | |
|---|---|
| ऋ ९.१८.१ * सुवानो…अक्षाः | परि स्वानो गिरिष्ठाः पवित्रे सोमो अक्षरत् । |
| | मदेषु सर्वधा असि ॥ १ ॥ |
| २ | त्वं विप्रस् त्वं कविर् मधु प्र जातम् अन्धसः । |
| | मदेषु सर्वधा असि ॥ २ ॥ |
| ३ तव… | त्वे विश्वे सजोषसो देवासः पीतिम् आशत । |
| | मदेषु सर्वधा असि ॥ ३ ॥ |
| ९.१०८.१३ | स सुन्वे यो वसूनां यो रायाम् आनेता य इडानाम् । |
| | सोमो यः सुक्षितीनाम् ॥ ४ ॥ |
| १४ * न…वार्यमणा (एवं कौ) * | यस्य त इन्द्रः पिबाद् यस्य मरुतो यस्य वार्यम्णा भगः । |
| | आ येन मित्रावरुणा करामह एन्द्रम् अवसे महे ॥ ५ ॥ |
| ९.१०५.१ | तं वः सखायो मदाय पुनानम् अभि गायत । |
| * * यज्ञैः * * | शिशुं न हव्यैः स्वदयन्त गूर्तिभिः ॥ ६ ॥ |
| २ | सं वत्स इव मातृभिर् इन्दुर् हिन्वानो अज्यते । |
| | देवावीर् मदो मतिभिः परिष्कृतः ॥ ७ ॥ |

| | |
|---|---|
| ३ | अयं दक्षाय साधनो ऽयं शर्धाय वीतये । |
| कौ * * मधुमत्तरः * | अयं देवेभ्यो मधुमत्तमः सुतः ॥ ८ ॥ |
| ९.१०१.१० | सोमाः पवन्त इन्दवो ऽस्मभ्यं गातुवित्तमाः । |
| * सुवाना ... | मित्राः स्वाना अरेपसः स्वाध्यः स्वर्विदः ॥ ९ ॥ |
| ११ एते पूताः ... | त पूतासो विपश्चितः सोमासो दध्याशिरः । |
| सूर्यासो... | सूरासो न दर्शतासो जिगत्नवो ध्रुवा घृते ॥ १० ॥ |
| १२ | सुष्वाणासो व्य् अद्रिभिश् चिताना गोर् अधि त्वचि । |
| | इषम् अस्मभ्यम् अभितः सम् अस्वरन् वसुविदः ॥ ११ ॥ |
| ९.९७.५२ | अया पवा पवस्वैना वसूनि मांश्चत्व इन्दो सरसि प्र धन्व । |
| * * अत्र * * जूतः पुरुमेधश् * * | ब्रध्नश् चिद् यस्य वातो न जूतिं पुरुमेधाश् चित् तकवे |
| * दात् | नरं धात् ॥ १२ ॥ |
| ५३ | उत न एना पवया पवस्वाधि श्रुते श्रवाय्यस्य तीर्थे । |
| | षष्टिं सहस्रा नैगुतो वसूनि वृक्षं न पक्वं धूनवद् रणाय ॥ १३ ॥ |
| ५४ | महीमे अस्य वृषनाम शूषे मांश्चत्वे वा पृशने वा वधत्रे । |
| | अस्वापयन् निगुतः स्नेहयच् चापामित्रं अपाचितो |
| | अचेतः ॥ १४ ॥ |
| ५.२४.१ ... भवा * | अग्ने त्वं नो अन्तम उत त्राता शिवो भुवो वरूथ्यः ॥ १५ ॥ |
| २ ... द्युमत्तमं * * | वसुर् अग्निर् वसुश्रवा अच्छा नक्षि द्युमत्तमो रयिं दाः |
| | ॥ १६ ॥ |
| ४ | तं त्वा शोचिष्ठ दीदिवः सुम्नाय नूनम् ईमहे सखिभ्यः |
| | ॥ १७ ॥ |
| १०.१५७.१ ...सीषधामेन्द्रश्... | इमा नु कं भुवना सीषधेमेन्द्रश् च विश्वे च देवाः ॥ १८ ॥ |
| २ ...चीक्लृपाति } | यज्ञं च नस् तन्वं च प्रजां चादित्यैर् इन्द्रः सह सीष- |
| | धातु ॥ १९ ॥ |
| ३ * * * * अस्माकं भूत्वविता [तनूनाम् | आदित्यैर् इन्द्रः सगणो मरुद्भिर् अस्मभ्यं भेषजा करत् |
| | ॥ २० ॥ |
| | प्र व इन्द्राय वृत्रहन्तमाय विप्राय गाथं गायत यं जुजो- |
| | षते ॥ २१ ॥ |
| ऋग्वेदे न सन्ति | अर्चन्त्य् अर्कं मरुतः स्वर्का आ स्तोभति श्रुतो युवा स |
| | इन्द्रः ॥ २२ ॥ |
| | उप प्रक्षे मधुमति क्षियन्तः पुष्येम रयिं धीमहे त इन्द्र |
| | ॥ २३ ॥ ॥३४॥ |

३.३५

| | |
|---|---|
| ऋ ९.९७.७ | प्र काव्यम् उशनेव ब्रुवाणो देवो देवानां जनिमा विवक्ति । |
| | महिव्रतः शुचिबन्धुः पावकः पदा वराहो अभ्य् एति |
| | रेभन् ॥ १ ॥ |

| | |
|---|---|
| ८ * * तृपलं मन्युम् * * * | प्र हंसासस् तृपला वग्नुम् अच्छामाद् अस्तं वृषगणा अयासुः । |
| आङ्गूष्यं * * * साकं * * वाणम् | अङ्गोषिणं पवमानं सखायो दुर्मर्षं वाणं प्र वदन्ति साकम् ॥ २ ॥ |
| ९ * रंहत ... | स योजत उरुगायस्य जूतिं वृथा क्रीडन्तं मिमते न गावः । |
| | परीणसं कृणुते तिग्मशृङ्गो हरिर् ददृशे नक्तम् ऋज्रः ॥ ३ ॥ |
| ९.१०.१ | प्र स्वानासो रथा इवार्वन्तो न श्रवस्यवः । |
| | सोमासो राये अक्रमुः ॥ ४ ॥ |
| २ | हिन्वानासो रथा इव दधन्विरे गभस्त्योः । |
| | भरासः कारिणाम् इव ॥ ५ ॥ |
| ३ | राजानो न प्रशस्तिभिः सोमासो गोभिर् अञ्जते । |
| | यज्ञो न सप्त धातृभिः ॥ ६ ॥ |
| ४ * सुवानास ... | परि स्वानास इन्दवो मदाय बर्हणा गिरा । |
| सुता ... | मधो अर्षन्ति धारया ॥ ७ ॥ |
| ५ * * जनन्त ... | आपानासो विवस्वतो जिन्वन्त उषसो भगम् । |
| | सूरा अण्वं वि तन्वते ॥ ८ ॥ |
| ६ | अप द्वारा मतीनां प्रत्ना ऋण्वन्ति कारवः । |
| | वृष्णो हरस आयवः ॥ ९ ॥ |
| ८ * * * * * चक्षुश्चिन्सूर्ये सचा | नाभा नाभिं न आ ददे चक्षुषा सूर्यं दृशे । |
| | कवेर् अपत्यम् आ दुहे ॥ १० ॥ ॥३५॥ |

३.३६

| | |
|---|---|
| क ९.१०.७ * आसते ... । कौ ... सप्त-[जानयः | समीचीनास आशत होतारः सप्तजामयः । |
| | पदम् एकस्य पिप्रतः ॥ १ ॥ |
| ९ * प्रिया ... | अभि प्रियं दिवस् पदम् अध्वर्युभिर् गुहा हितम् । |
| | सूरः पश्यति चक्षसा ॥ २ ॥ |
| ९.७.१ | असृग्रम् इन्दवः पथा धर्मन्न् ऋतस्य सुश्रियः । |
| * * योजनम् | विदाना अस्य योजना ॥ ३ ॥ |
| २ * * मध्वो ... | प्र धारा मधो अग्रियो महीर् अपो वि गाहते । |
| | हविर् हविःषु वन्द्यः ॥ ४ ॥ |
| ३ * युजो * * वृषाव चक्रदद् * | प्र युजा वाचो अग्रियो वृषो अचिक्रदद् वने । |
| | सद्माभि सत्यो अध्वरः ॥ ५ ॥ |
| ४ ...वसानो * | परि यत् काव्या कविर् नृम्णा पुनानो अर्षति । |
| | स्वर् वाजी सिषासति ॥ ६ ॥ |
| ५ | पवमानो अभि स्पृधो विशो राजेव सीदति । |
| | यद् ईम् ऋण्वन्ति वेधसः ॥ ७ ॥ |

| | |
|---|---|
| ६ अव्यो... | अव्या वारं परि प्रियो हरिर् वनेषु सीदति । |
| ...मती (एवं कौ) | रेभो वनुष्यते मती ॥ ८ ॥ |
| ७ | स वायुम् इन्द्रम् अश्विना साकं मदेन गच्छति । |
| ...धर्मभिः | रणा यो अस्य धर्मणा ॥ ९ ॥ |
| ८ * मित्रावरुणा भगं मध्वः * * | आ मित्रे वरुणे भगे मधोः पवन्त ऊर्मयः । |
| | विदाना अस्य शक्मभिः ॥ १० ॥ ॥३६॥ |
| | ३.३७ |
| * ९.७.९ | अस्मभ्यं रोदसी रयिं मध्वो वाजस्य सातये । |
| | श्रवो वसूनि सं जितम् ॥ १ ॥ |
| ९.६५.२८ | आ ते दक्षं मयोभुवं वह्निम् अद्या वृणीमहे । |
| | पान्तम् आ पुरुस्पृहम् ॥ २ ॥ |
| २९ | आ मन्द्रम् आ वरेण्यम् आ विप्रम् आ मनीषिणम् । |
| | पान्तम् आ पुरुस्पृहम् ॥ ३ ॥ |
| ३० | आ रयिम् आ सुचेतनम् आ सुक्रतो तनूष्व् आ । |
| | पान्तम् आ पुरुस्पृहम् ॥ ४ ॥ ॥३७॥ |
| | ३.३८ |
| अन्यत्र संहितासु न सन्ति | वैश्वानरो अजीजनद् अग्निर् नो नव्यसीं मतिम् । |
| | क्ष्मया वृधा न ओजसा ॥ १ ॥ |
| | दिवि पृष्टो अरोचताग्निर् वैश्वानरो बृहत् । |
| | ज्योतिषा बाधते तमः ॥ २ ॥ |
| | स नः पावक दीदिह्य् अग्ने वैश्वानर द्युमान् । |
| | जमदग्निर् भराहुतः ॥ ३ ॥ |
| * ६.७.१ | मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरम् ऋत आ जातम् अग्निम् । |
| * * * * आसन्ना... | कविं सम्राजम् अतिथिं जनानाम् आसन्नः पात्रं जनयन्त देवाः ॥ ४ ॥ |
| ४ | त्वां विश्वे अमृत जायमानं शिशुं न देवा अभि सं नवन्ते । |
| | तव क्रतुभिर् अमृतत्वम् आयन् वैश्वानर यत् पित्रोर् अदीदेः ॥ ५ ॥ |
| २ | नाभिं यज्ञानां सदनं रयीणां महाम् आहावम् अभि सं नवन्त । |
| | वैश्वानरं रथ्यम् अध्वराणां यज्ञस्य केतुं जनयन्त देवाः ॥ ६ ॥ |
| ५.६८.१ | प्र वो मित्राय गायत वरुणाय विपा गिरा । |

| | |
|---|---|
| | महिक्षत्राव् ऋतं बृहत् ॥ ७ ॥ |
| २ | सम्राजा या घृतयोनी मित्रश् चोभा वरुणश् च । |
| | देवा देवेषु प्रशस्ता ॥ ८ ॥ |
| ३ | ता नः शक्तं पार्थिवस्य महो रायो दिव्यस्य । |
| | महि वां क्षत्रं देवेषु ॥ ९ ॥ |
| १.३.४ | इन्द्रा याहि चित्रभानो सुता इमे त्वायवः । |
| | अण्वीभिस् तना पूतासः ॥ १० ॥ |
| ५ | इन्द्रा याहि धियेषितो विप्रजूतः सुतावतः । |
| | उप ब्रह्माणि वाघतः ॥ ११ ॥ |
| ६ | इन्द्रा याहि तूतुजान उप ब्रह्माणि हरिवः । |
| | सुत दधिष्व नश् चनः ॥ १२ ॥ ॥३८॥ |

३.३९

| | |
|---|---|
| ऋ ९.८६.१६ | प्रो अयासीद् इन्दुर् इन्द्रस्य निष्कृतं सखा सख्युर् न प्र मिनाति संगिरम् । |
| ...शतयाम्ना | मर्य इव युवतिभिः सम् अर्षति सोमः कलशे शतयामना पथा ॥ १ ॥ |
| १७ ...संवसनेषु | प्र वो धियो मन्द्रयुवो विपन्युवः पनस्युवः संवरणेष्व् अक्रमुः । |
| सोमं मनीषा * * * * * पयसेम् | हरिं क्रीडन्तम् अभ्य् अनूषत स्तुभो ऽभि धेनवः पयसेद् अशिश्रयुः ॥ २ ॥ |
| १८ | आ नः सोम संयतं पिप्युषीम् इषम् इन्दो पवस्व पवमान ऊर्मिणा । |
| अस्त्रिधम् | या नो दोहते त्रिर् अहन्न् असश्चुषी क्षुमद् वाजवन् मधुमत् सुवीर्यम् ॥ ३ ॥ |
| ८.७०.३ | नकिष् टं कर्मणा नशद् यश् चकार सदावृधम् । |
| ...धृष्णवोजसम् | इन्द्रं न यज्ञैर् विश्वगूर्तम् ऋभ्वसम् अधृष्टं धृष्णुम् ओजसा ॥ ४ ॥ |
| ४ | अषाढम् उग्रं पृतनासु सासहिं यस्मिन् महीर् उरुज्रयः । |
| * * * * द्यावः क्षामो (कौ द्यावः क्षामीर्) * | सं धेनवो जायमाने अनोनवुर् प्राव क्षामैर् अनोनवुः ॥ ५ ॥ ॥३९॥ |

३.४०

| | |
|---|---|
| ऋ ९.१०८.५ * * * * ऽव्यो... | एष स्य धारया सुतो ऽव्या वारेभिः पवते मदिन्तमः । |
| | क्रीडन्न् ऊर्मिर् अपाम् इव ॥ १ ॥ |
| ६ * * अप्या अन्तरश्मनो * * * | य उस्रिया अपिया अन्तर् अश्मनि निर् गा अकृन्तद् ओजसा । |

| | |
|---|---|
| | अभि व्रजं तत्निषे गव्यम् अश्व्यं वर्मीव धृष्णव् आ |
| रुज (एवं कौ) | रुजा ॥ २ ॥ |
| ९.१०४.१ | सखाय आ नि षीदत पुनानाय प्र गायत । |
| | शिशुं न यज्ञैः परि भूषत श्रिये ॥ ३ ॥ |
| २ ...गयसाधनम् (एवं कौ) | सम् ई वत्सं न मातृभिः सृजता गायसाधनम् । |
| | देवाव्यं मदम् अभि द्विशवसम् ॥ ४ ॥ |
| ३ | पुनाता दक्षसाधनं यथा शर्धाय वीतये । |
| ...शंतमः | यथा मित्राय वरुणाय शंतमम् ॥ ५ ॥ |
| ९.१०९.१६ * सुवानो... | प्र वाज्य् अक्षाः सहस्रधारस् तिरः पवित्रं वि वारम् |
| | अव्यम् ॥ ६ ॥ |
| १७ | स वाज्य् अक्षाः सहस्ररेता अद्भिर् मृजानो गोभिः |
| | श्रीणानः ॥ ७ ॥ |
| १८ ...येमानो * | प्र सोम याहीन्द्रस्य कुक्षा नृभिर् येमाणो अद्रिभिः |
| | सुतः ॥ ८ ॥ |
| ९.६५.२२ | ये सोमासः परावति ये अर्वावति सुन्विरे । |
| | ये वादः शर्यणावति ॥ ९ ॥ |
| २३ | य आर्जीकेषु कृत्वसु ये मध्ये पस्त्यानाम् । |
| | ये वा जनेषु पञ्चसु ॥ १० ॥ |
| २४ | ते नो वृष्टिं दिवस् परि पवन्ताम् आ सुवीर्यम् । |
| सुवाना... | स्वाना देवास इन्दवः ॥ ११ ॥ |
| ८.११.७ | आ ते वत्सो मनो यमत् परमाच् चित् सधस्थात् । |
| * त्वांकामया * | अग्ने त्वां कामये गिरा ॥ १२ ॥ |
| ८ * * * * विशो... | पुरुत्रा हि सदृङ्ङ् असि दिशो विश्वा अनु प्रभुः । |
| | समत्सु त्वा हवामहे ॥ १३ ॥ |
| ९ | समत्स्व् अग्निम् अवसे वाजयन्तो हवामहे । |
| | वाजेषु चित्रराधसम् ॥ १४ ॥ |
| ८.९८.१० | त्वं न इन्द्रा भर ओजो नृम्णं शतक्रतो विचर्षणे । |
| * * पृतनाषहम् | आ वीरं पृतनासहम् ॥ १५ ॥ |
| ११ | त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ । |
| अधा... | अथा ते सुम्नम् ईमहे ॥ १६ ॥ |
| १२ ...शतक्रतो | त्वां शुष्मिन् पुरुहूत वाजयन्तम् उप ब्रुवे सहस्कृत । |
| | स नो रास्व सुवीर्यम् ॥ १७ ॥ |
| ५.३९.१ * * * मेहनास्ति * * | यद् इन्द्र चित्र म इह नास्ति त्वादातम् अद्रिवः । |
| | राधस् तन् नो विदद्वस उभयाहस्त्य् आ भर ॥ १८ ॥ |
| ३ * * दित्सु... | यत् ते दित्सु प्राध्यं मनो अस्ति श्रुतं बृहत् । |
| | तेन दृढा चिद् अद्रिव आ वाजं दर्षि सातये ॥ १९ ॥ |

| | |
|---|---|
| २ | यन् मन्यसे वरेण्यम् इन्द्र द्युक्षं तद् आ भर । |
| कौ ...दावनः | विद्याम तस्य ते वयम् अकूपारस्य दावने ॥ २० ॥ ॥४०॥ |
| | ३.४१ |
| ऋ ९.९६.१७ ...वह्निं * * | शिशुं जज्ञानं हर्यतं मृजन्ति शुम्भन्ति विप्रं मरुतो गणेन । कविर् गीर्भिः काव्येन कविः सन् सोमः पवित्रम् अत्य् एति रेभन् ॥ १ ॥ |
| १८ ...सहस्रणीथः * * | ऋषिमना य ऋषिकृत् स्वर्षाः सहस्रनीथः पदवीः कवीनाम् । तृतीयं धाम महिषः सिषासन् सोमो विराजम् अनु राजति ष्टुप् ॥ २ ॥ |
| १९ | चमूषच् छ्येनः शकुनो विभृत्वा गोविन्दुर् द्रप्स आयुधानि बिभ्रत् । अपाम् ऊर्मिं सचमानः समुद्रं तुरीयं धाम महिषो विवक्ति ॥ ३ ॥ |
| ९.८.१ | एते सोमा अभि प्रियम् इन्द्रस्य कामम् अक्षरन् । वर्धन्तो अस्य वीर्यम् ॥ ४ ॥ |
| २ | पुनानासश् चमूषदो गच्छन्तो वायुम् अश्विना । |
| * * धान्तु * | ते नो धत्त सुवीर्यम् ॥ ५ ॥ |
| ३ | इन्द्रस्य सोम राधसे पुनानो हार्दि चोदय । |
| ऋतस्य * * | देवानां योनिम् आसदम् ॥ ६ ॥ |
| ४ | मृजन्ति त्वा दश क्षिपो हिन्वन्ति सप्त धीतयः । अनु विप्रा अमादिषुः ॥ ७ ॥ |
| ५ | देवेभ्यस् त्वा मदाय कं सृजानम् अति मेष्यः । सं गोभिर् वासयामसि ॥ ८ ॥ |
| ६ | पुनानः कलशेष्व् आ वस्त्राण्य् अरुषो हरिः । परि गव्यान्य् अव्यत ॥ ९ ॥ |
| ७ | मघोन आ पवस्व नो जहि विश्वा अप द्विषः । इन्दो सखायम् आ विश ॥ १० ॥ ॥४१॥ |
| | ३.४२ |
| ऋ ९.८.९ | नृचक्षसं त्वा वयम् इन्द्रपीतं स्वर्विदम् । भक्षीमहि प्रजाम् इषम् ॥ १ ॥ |
| ८ | वृष्टिं दिवः परि स्रव द्युम्नं पृथिव्या अधि । सहो नः सोम पृत्सु धाः ॥ २ ॥ |
| ९.१३.१ | सोमः पुनानो अर्षति सहस्रधारो अत्यविः । वायोर् इन्द्रस्य निष्कृतम् ॥ ३ ॥ |
| २ | पवमानम् अवस्यवो विप्रम् अभि प्र गायत । |

सुष्वाणं देववीतये ॥ ४ ॥
३ पवन्त वाजसातये सोमाः सहस्रपाजसः ।
गृणाना देववीतये ॥ ५ ॥
४ उत नो वाजसातये पवस्व बृहतीर् इषः ।
द्युमद् इन्दो सुवीर्यम ॥ ६ ॥
५ ते नः सहस्रिणं रयिं पवन्ताम् आ सुवीर्यम् ।
सुवाना * * स्वाना देवास इन्दवः ॥ ७ ॥
६ अत्या हियाना न हेतृभिर् असृग्रं वाजसातये ।
वि वारम अव्यम् आशवः ॥ ८ ॥
७ ...धेनवः वाश्रा अर्षन्तीन्दवो ऽभि वत्सं न मातरः ।
दधन्विरे गभस्त्योः ॥ ९ ॥
८ जुष्ट इन्द्राय मत्सरः पवमानः कनिक्रदत् ।
विश्वा अप द्विषो जहि ॥ १० ॥ ॥४२॥

३.४३

ऋ ९.१३.९ अपघ्नन्तो अराव्णः पवमानाः स्वर्दृशः ।
योनाव् ऋतस्य सीदत ॥ १ ॥
९.१२.१ ...सादने सोमा असृग्रम् इन्दवः सुता ऋतस्य धारया ।
इन्द्राय मधुमत्तमाः ॥ २ ॥
२ ...मातरः अभि विप्रा अनूषत गावो वत्सं न धेनवः ।
इन्द्रं सोमस्य पीतये ॥ ३ ॥
३ मदच्युत् क्षेति सादने सिन्धोर् ऊर्मा विपश्चित् ।
सोमो गौरी अधि श्रितः ॥ ४ ॥
४ * * * ऽव्यो... दिवो नाभा विचक्षणो अव्या वारे महीयते ।
सोमो यः सुक्रतुः कविः ॥ ५ ॥
५ यः सोमः कलशेष्व् आ अन्तः पवित्र आहितः ।
तम् इन्दुः परि षस्वजे ॥ ६ ॥
६ प्र वाचम इन्दुर् इष्यति समुद्रस्याधि विष्टपि ।
जिन्वन् कोशं मधुश्चुतम् ॥ ७ ॥
७ * * धीनाम् * सबर्दुघः नित्यस्तोत्रो वनस्पतिर् धेनाम् अन्तः सबर्दुघाम् ।
...युगा हिन्वानो मानुषा युजा ॥ ८ ॥
९ आ पवमान धारय रयिं सहस्रवर्चसम् ।
अस्मे इन्दो स्वाभुवम् ॥ ९ ॥
८ अभि प्रिया दिवस्पदा सोमो हिन्वानो अर्षति । विप्रस्य धारया कविः ॥ कौ द्वितीयस्मिन् पादे विप्रः स * * अभि प्रिया दिवः कविर् विप्रस्य धारया सुतः ।
सोमो हिन्वे परावति ॥ १० ॥ ॥४३॥

३.४४

ऋ ९.५०.१ उत् ते शुष्मास ईरते सिन्धोर् ऊर्मेर् इव स्वनः ।

वाणस्य चोदया पविम् ॥ १ ॥
२ प्रसवे त उद् ईरते तिस्रो वाचो मखस्युवः ।
यद् अव्य एषि सानवि ॥ २ ॥
३ अव्यो वारे... अव्या वारैः परि प्रियं हरिं हिन्वन्त्य् अद्रिभिः ।
पवमानं मधुश्चुतम् ॥ ३ ॥
४ आ पवस्व मदिन्तम पवित्रं धारया कवे ।
अर्कस्य योनिम् आसदम् ॥ ४ ॥
५ स पवस्व मदिन्तम गोभिर् अञ्जानो अक्तुभिः ।
इन्दविन्द्राय पीतये एन्द्रस्य जठरं विश ॥ ५ ॥
९.६१.२२ स पवस्व य आविथेन्द्रं वृत्राय हन्तवे ।
वव्रिवांसं महीर् अपः ॥ ६ ॥
२४ ...आसुरः त्वोतासस् तवावसा स्याम वन्वन्तः किकरः ।
सोम व्रतेषु जागृहि ॥ ७ ॥
२३ सुवीरासो वयं धना जयेम सोम मीढ्वः ।
पुनानो वर्ध नो गिरः ॥ ८ ॥
२५ अपघ्नन् पवते मृधो ऽप सोमो अराव्णः ।
गच्छन्न् इन्द्रस्य निष्कृतम् ॥ ९ ॥
२७ न त्वा शतं चन ह्रुतो राधो दित्सन्तम् आ मिनन् ।
यत् पुनानो मखस्यसे ॥ १० ॥ ॥४४॥

३.४५

ऋ ९.६१.२६ महो नो राय आ भर पवमान जही मृधः ।
रास्वेन्दो वीरवद् यशः ॥ १ ॥
१ अया वीती परि स्रव यस् त इन्दो मदेष्व् आ ।
अवाहन् नवतीर् नव ॥ २ ॥
२ पुरः सद्य इत्थाधिये दिवोदासाय शंबरम् ।
अध त्यं तुर्वशं यदुम् ॥ ३ ॥
३ * णो .. परि नो अश्वम् अश्वविद् गोमद् इन्दो हिरण्यवत् ।
क्षरा सहस्रिणीर् इषः ॥ ४ ॥ ॥४५॥

३.४६

ऋ ८.४३.१४ त्वं ह्य् अग्ने अग्निना विप्रो विप्रेण सन् सता ।
सखा सख्या समिध्यसे ॥ १ ॥
१५ स त्वं विप्राय दाशुषे * * * त्वं सुन्वते यजमानाय रयिं देहि सहस्रिणः ।
अग्ने वीरवतीम् इषम् ॥ २ ॥
१६ अग्ने भ्रातः सहस्कृत रोहिदश्व शुचिव्रत ।
...मे इमं स्तोमं जुषस्व नः ॥ ३ ॥

| | |
|---|---|
| ७.३.१ | अग्निं वो देवम् अग्निभिः सजोषा यजिष्ठं दूतम् अध्वरे कृणुध्वम् ।<br>यो मर्त्येषु निध्रुविर् ऋतावा तपुर्मूर्धा घृतान्नः पावकः ॥ ४ ॥ |
| २ | प्रोथद् अश्वो न यवसे ऽविष्यन् यदा महः संवरणाद् व्य् अस्थात् ।<br>आद् अस्य वातो अनु वाति शोचिर् अध स्म ते व्रजनं कृष्णम् अस्ति ॥ ५ ॥ |
| ३<br>* * * * पृति... | उद् यस्य ते नवजातस्य वृष्णो ऽग्ने चरन्त्य् अजरा इधानाः ।<br>अच्छा द्याम् अरुषो धूम एषि सं दूतो अग्न ईयसे हि देवान् ॥ ६ ॥ |
| ७.६६.४ | यद् अद्य सूर उदिते अनागा मित्रो अर्यमा ।<br>सुवाति सविता भगः ॥ ७ ॥ |
| ५ | सुप्रावीर् अस्तु स क्षयः प्र नु यामन् सुदानवः ।<br>यो नो अंहो ऽतिपिप्रति ॥ ८ ॥ |
| ६ | उत स्वराजो अदितिर् अदब्धस्य व्रतस्य ये ।<br>महो राजान ईशते ॥ ९ ॥ |
| ८.९३.७ | तम् इन्द्रं वाजयामसि महे वृत्राय हन्तवे ।<br>स वृषा वृषभो भुवत् ॥ १० ॥ |
| ८...मदे * | इन्द्रः स दामने कृत ओजिष्ठः स बले हितः ।<br>द्युम्नी श्लोकी स सोम्यः ॥ ११ ॥ |
| ९<br>* ऋष्वो * | गिरा वज्रो न संभृतः सबलो अनपच्युतः ।<br>ववक्ष उग्रो अस्तृतः ॥ १२ ॥ ॥४३॥ |
| | ३.४७ |
| ऋ ९.५१.१ ...सृज पुनीहीन्द्राय * | अध्वर्यो अद्रिभिः सुतं सोमं पवित्र आ नय ।<br>पुनाहीन्द्राय पातवे ॥ १ ॥ |
| ३ ...अश्नते | तव त्य इन्दो अन्धसो देवा मधोर् व्य् आशत ।<br>पवमानस्य मरुतः ॥ २ ॥ |
| २ | दिवः पीयूषम् उत्तमं सोमम् इन्द्राय वज्रिणे ।<br>सुनोता मधुमत्तमम् ॥ ३ ॥ |
| ९.७६.१<br>...कृणुते | धर्ता दिवः पवते कृत्व्यो रसो दक्षो देवानाम् अनुमाद्यो नृभिः ।<br>हरिः सृजानो अत्यो न सत्वभिर् वृथा पाजांसि कृणुषे नदीष्व् आ ॥ ४ ॥ |
| २ | शूरो न धत्त आयुधा गभस्त्योः स्वः सिषासन् रथिरो गविष्टिषु । |

| | |
|---|---|
| | इन्द्रस्य शुष्मम् ईरयन्न् अपस्युभिर् इन्दुर् हिन्वानो अज्यते मनीषिभिः ॥ ५ ॥ |
| ३ | इन्द्रस्य सोम पवमान ऊर्मिणा तविष्यमाणो जठरेष्व् आ विश । |
| कौ * नः...न * * कौ माहि * | प्र णः पिन्व विद्युद् अभ्रेव रोदसी धिया नो वाजं उप मासि शश्वतः ॥ ६ ॥ |
| ८.४.१ | यद् इन्द्र प्राग् अपाग् उदङ् न्यग् वा हूयसे नृभिः । सिमा पुरू नृषूतो अस्य् आनवे ऽसि प्रशर्ध तुर्वशे ॥ ७ ॥ |
| २ * * ब्रह्मभिः स्तोमवाहस... | यद् वा रुमे रुशमे श्यावके कृप इन्द्र मादयसे सचा । कण्वासस् त्वा स्तोमेभिर् ब्रह्मवाहस इन्द्रा यच्छन्त्य् आ गहि ॥ ८ ॥ |
| ८.६१.१ * मघवा... | उभयं शृणवच् च न इन्द्रो अर्वाग् इदं वचः । सत्राच्या मघवान् सोमपीतये धिया शविष्ठ आ गमत् ॥ ९ ॥ |
| २ ...ओजसे * * | तं हि स्वराजं वृषभं तम् ओजसा धिषणे निष्टतक्षतुः । उतोपमानां प्रथमो नि षीदसि सोमकामं हि ते मनः ॥ १० ॥ ॥४७॥ |

३.४८

| | |
|---|---|
| ऋ ९.६३.२२ * देवायुषग्... | पवस्व देव आयुषग् इन्द्रं गच्छतु ते मदः । वायुम् आ रोह धर्मणा ॥ १ ॥ |
| २३ प्रियः... | पवमान नि तोशसे रयिं सोम श्रवाय्यम् । इन्दो समुद्रम् आ विश ॥ २ ॥ |
| २४ | अपघ्नन् पवसे मृधः क्रतुवित् सोम मत्सरः । नुदस्वादेवयुं जनम् ॥ ३ ॥ |
| ९.९८.१ अभि...पुरुस्पृहम् ...विभ्वासहम् | अभी नो वाजसातमं रयिम् अर्ष शतस्पृहम् । इन्दो सहस्रभर्णसं तुविद्युम्नं विभासहम् ॥ ४ ॥ |
| ३ * ष्य सुवानो अक्षा... * * * * * नैति * | परि स्य स्वानो अक्षरद् इन्दुर् अव्ये मदच्युतः । धारा य ऊर्ध्वो अध्वरे भ्राजा न याति गव्ययुः ॥ ५ ॥ |
| ५ * * * वृत्रहन्वसो वस्वः * * * * * सुम्नस्याध्रिगो | वयं ते अस्य राधसो वसोर् वसो पुरुस्पृहः । नि नेदिष्ठतमा इषः स्याम सुम्ने ते अध्रिगो ॥ ६ ॥ |
| ९.१०९.४ | पवस्व सोम महान् समुद्रः पिता देवानां विश्वाभि धाम ॥ ७ ॥ |
| ५ ...प्रजायै | शुक्रः पवस्व देवेभ्यः सोम दिवे पृथिव्यै शं च प्रजाभ्यः ॥ ८ ॥ |
| ६ | दिवो धर्तासि शुक्रः पीयूषः सत्ये विधर्मन् वाजी पवस्व ॥ ९ ॥ |

| | |
|---|---|
| ८.८४.१ | प्रेष्ठं वो अतिथिं स्तुषे मित्रम् इव प्रियम् । |
| अग्निं... | अग्ने रथं न वेद्यम् ॥ १० ॥ |
| २ * * प्रचेतसं * * अध * | कविम् इव प्रशंस्यं यं देवास इति द्विता । |
| | नि मर्त्येष्व् आदधुः ॥ ११ ॥ |
| ३ ...श्रुणुधी * | त्वं यविष्ठ दाशुषो नॄंः पाहि श्रुणुही गिरः । |
| | रक्षा तोकम् उत त्मना ॥ १२ ॥ |
| ८.९८.४ ...प्रियः * अगोह्यः | एन्द्र नो गधि प्रिय सत्राजिद् अगोह्य । |
| * * विश्वतस्... | गिरिर् न विश्वतः पृथुः पतिर् दिवः ॥ १३ ॥ |
| ५ | अभि हि सत्य सोमपा उभे बभूथ रोदसी । |
| | इन्द्रासि सुन्वतो वृधः पतिर् दिवः ॥ १४ ॥ |
| ६ ...दर्ता * * | त्वं हि शश्वतीनाम् इन्द्र धर्ता पुराम् असि । |
| | हन्ता दस्योर् मनोर् वृधः पतिर् दिवः ॥ १५ ॥ |
| १.११.४ | पुरां भिन्दुर् युवा कविर् अमितौजा अजायत । |
| | इन्द्रो विश्वस्य कर्मणो धर्ता वज्री पुरुष्टुतः ॥ १६ ॥ |
| ५ | त्वं वलस्य गोमतो ऽपावर् अद्रिवो बिलम् । |
| * देवा (एवं कौ)... | त्वां देवासो अभिभ्युषस् तुज्यमानास आविषुः ॥ १७ ॥ |
| ६ | तवाहं शूर रातिभिः प्रत्य् आयं सिन्धुम् आवदन् । |
| | उपातिष्ठन्त गिर्वणो विदुष् टे तस्य कारवः ॥ १८ ॥ ॥४८॥ |

३.४९

| | |
|---|---|
| ऋ ९.९७.४० | अक्रान् समुद्रः प्रथमे विधर्मन् जनयन् प्रजा भुवनस्य गोपाः । |
| राजा<br>...सुवान | वृषा पवित्रे अधि सानो अव्ये बृहत् सोमो वावृधे स्वानो |
| इन्दुः | अद्रिः ॥ १ ॥ |
| ४१ | महत् तत् सोमो महिषश् चकारापां यद् गर्भो ऽवृणीत देवान् । |
| | अदधाद् इन्द्रे पवमान ओजो ऽजनयत् सूर्ये ज्योतिर् इन्दुः ॥ २ ॥ |
| ४२ * * * * च * * * | मत्सि वायुम् इष्टये राधसे नो मत्सि मित्रावरुणा पूयमानः । |
| | मत्सि शर्धो मारुतं मत्सि देवान् मत्सि द्यावापृथिवी देव सोम ॥ ३ ॥ |
| ९.३.१ ...दीयति | एष देवो अमर्त्यः पर्णवीर् इव दीयते । |
| | अभि द्रोणान्य् आसदम् ॥ ४ ॥ |
| २ | एष देवो विपा कृतो अति ह्वरांसि धावति । |
| | पवमानो अदाभ्यः ॥ ५ ॥ |
| ३ | एष देवो विपन्युभिः पवमान ऋतायुभिः । |
| | हरिर् वाजाय मृज्यते ॥ ६ ॥ |

| | |
|---|---|
| ४ | एष विश्वानि वार्या शूरो यन्न् इव सत्वभिः । |
| | पवमानः सिषासति ॥ ७ ॥ |
| ५ ...दशस्यति | एष देवो रथर्यति पवमानो दिशस्यति । |
| | आविष् कृणोति वग्वनुम् ॥ ८ ॥ |
| ६ | एष विप्रैर् अभिष्टुतो ऽपो देवो वि गाहते । |
| | दधद् रत्नानि दाशुषे ॥ ९ ॥ |
| ७ | एष दिवं वि धावति तिरो रजांसि धारया । |
| | पवमानः कनिक्रदत् ॥ १० ॥ ॥४९॥ |

३.५०

| | |
|---|---|
| ऋ ९.३.८ | एष दिवं व्यू आसरत् तिरो रजांस्य् अस्तृतः । |
| | पवमानः स्वध्वरः ॥ १ ॥ |
| ९ | एष प्रत्नेन जन्मना देवो देवेभ्यः सुतः । |
| | हरिः पवित्रे अर्षति ॥ २ ॥ |
| १० | एष उ स्य पुरुव्रतो जज्ञानो जनयन्न् इषः । |
| | धारया पवते सुतः ॥ ३ ॥ |
| ९.१५.१ | एष धिया यात्य् अण्व्या शूरो रथेभिर् आशुभिः । |
| | गच्छन्न् इन्द्रस्य निष्कृतम् ॥ ४ ॥ |
| २ | एष पुरू धियायते बृहते देवतातये । |
| * आसते | यत्रामृतास आशत ॥ ५ ॥ |
| ३ ...शुभ्रावता * | एष हितो वि नीयते ऽन्तः शुन्ध्यावता पथा । |
| | यदी तुञ्जन्ति भूर्णयः ॥ ६ ॥ |
| ५ | एष रुक्मिभिर् ईयते वाजी शुभ्रेभिर् अंशुभिः । |
| | पतिः सिन्धूनां भवन् ॥ ७ ॥ |
| ४ | एष शृङ्गाणि दोधुवच् छिशीते यूथ्यो वृषा । |
| | नृम्णा दधान ओजसा ॥ ८ ॥ |
| ६ * * पिब्दना ... | एष वसूनि पिब्दनः परुषा ययिवं अति । |
| | अव शादेषु गच्छति ॥ ९ ॥ |
| ७ | एतं मृजन्ति मर्ज्यम् उप द्रोणेष्व् आयवः । |
| | प्रचक्राणं महीर् इषः ॥ १० ॥ ॥५०॥ |

३.५१

| | |
|---|---|
| ऋ ९.१५.८ * * * * * मृजन्ति सप्त [धीतयः | एतम् उ त्यं दश क्षिपो हरिं हिन्वन्ति यातवे । |
| | स्वायुधं मदिन्तमम् ॥ १ ॥ |
| ९.२७.१ | एष कविर् अभिष्टुतः पवित्रे अधि तोशते । |
| ...स्रिधः | पुनानो घ्नन्न् अप द्विषः ॥ २ ॥ |
| २ | एष इन्द्राय वायवे स्वर्जित् परि षिच्यते । |

पवित्रे दक्षसाधनः ॥ ३ ॥
३ एष नृभिर् वि नीयते दिवो मूर्धा वृषा सुतः ।
सोमो वनेषु विश्ववित् ॥ ४ ॥
४ एष गव्युर् अचिक्रदत् पवमानो हिरण्ययुः ।
इन्दुः सत्राजिद् अस्तृतः ॥ ५ ॥
९.२८.६ * * * सोमः पुनानो [अर्षति (एवं कौ) एष शुष्म्य् अदाभ्यः सोमो वाजम् इवासरत् ।
देवावीर् अघशंसहा ॥ ६ ॥
९.२७.६ एष शुष्म्य् असिष्यदद् अन्तरिक्षे वृषा हरिः ।
पुनान इन्दुर् इन्द्रम् आ ॥ ७ ॥
९.२८.१ ...विश्वविन् (एवं कौ) * * एष वाजी हितो नृभिर् विश्वाविन् मनसस् पतिः ।
अव्यो ... अव्यं वारं वि धावति ॥ ८ ॥
२ एष पवित्रे अक्षरत् सोमो देवेभ्यः सुतः ।
* धामान्य् (एवं कौ) * विश्वा वसून्य् आविशन् ॥ ९ ॥
३ एष देवः शुभायते ऽधि योनाव् अमर्त्यः ।
वृत्रहा देववीतमः ॥ १० ॥ ॥५१॥

३.५२

* ९.२८.४ एष वृषा कनिक्रदद् दशभिर् जामिभिर् यतः ।
अभि द्रोणानि धावति ॥ १ ॥
९.२७.५ कौ एष सूर्यमरोचयत् * * * एष सूर्येण हासते पवमानो अधि द्यवि ।
पवित्रे मत्सरो मदः ॥ २ ॥
९.२८.५ एष सूर्यम् अरोचयत् पवमानो विचर्षणिः ।
* धामानि * विश्वा वसूनि विश्ववित् ॥ ३ ॥
९.३८.१ ...ऽव्यो * * एष उ स्य वृषा रथो ऽव्या वारेभिर् अर्षति ।
गच्छन् वाजं सहस्रिणम् ॥ ४ ॥
२ एतं त्रितस्य योषणो हरिं हिन्वन्त्य् अद्रिभिः ।
इन्दुम् इन्द्राय पीतये ॥ ५ ॥
३ एतं त्यं हरितो दश मर्मृज्यन्ते अपस्युवः ।
याभिर् मदाय शुम्भते ॥ ६ ॥
४ एष स्य मानुषीष्व् आ श्येनो न विक्षु सीदति ।
गच्छन् जारो न योषितम् ॥ ७ ॥
६ एष स्य पीतये सुतो हरिर् अर्षति धर्णसिः ।
क्रन्दन् योनिम् अभि प्रियम् ॥ ८ ॥
५ एष स्य मद्यो रसो ऽव चष्टे दिवः शिशुः ।
य इन्दुर् वारम् आविशत् ॥ ९ ॥
९.३७.१ स सुतः पीतये वृषा सोमः पवित्रे अर्षति ।
विघ्नन् रक्षांसि देवयुः ॥ १० ॥ ॥५२॥

३.५३

ऋ ९.३७.२ स पवित्रे विचक्षणो हरिर् अर्षति धर्णसिः ।
अभि योनिं कनिक्रदत् ॥ १ ॥
३ * * रोचना... स वाजी रोचनं दिवः पवमानो वि धावति ।
रक्षोहा वारम् अव्ययम् ॥ २ ॥
४ स त्रितस्याधि सानवि पवमानो अरोचयत् ।
जामिभिः सूर्यं सह ॥ ३ ॥
५ स वृत्रहा वृषा सुतो वरिवोविद् अदाभ्यः ।
सोमो वाजम् इवासरत् ॥ ४ ॥
६ स देवः कविनेषितो ऽभि द्रोणानि धावति ।
* * मंहना इन्दुर् इन्द्राय मंहयन् ॥ ५ ॥
९.६६.१० पवमानस्य ते कवे वाजिन् सर्गा असृक्षत ।
अर्वन्तो न श्रवस्यवः ॥ ६ ॥
११ अच्छा कोशं मधुश्चुतम् असृग्रं वारे अव्यये ।
अवावशन्त धीतयः ॥ ७ ॥
१२ अच्छा समुद्रम् इन्दवो ऽस्तं गावो न धेनवः ।
अग्मन्न् ऋतस्य योनिम् आ ॥ ८ ॥ ॥५३॥

३.५४

ऋ ६.१६.३७ उप त्वा रण्वसंदृशं प्रयस्वन्तः सहस्कृत ।
अग्ने ससृज्महे गिरः ॥ १ ॥
३८ उप छायाम् इव घृणेर् अगन्म शर्म ते वयम् ।
अग्ने हिरण्यसंदृशः ॥ २ ॥
३९ य उग्र इव शर्यहा तिग्मशृङ्गो न वंसगः ।
अग्ने पुरो रुरोजिथ ॥ ३ ॥
७.१२.१ अगन्म महा नमसा यविष्ठं यो दीदाय समिद्धः स्वे दुरोणे ।
चित्रभानुं रोदसी अन्तर् उर्वी स्वाहुतं विश्वतः प्रत्यञ्चम् ॥ ४ ॥
२ स मह्ना विश्वा दुरितानि साह्वान् अग्निः ष्टवे दम आ जातवेदाः ।
स नो रक्षिषद् दुरिताद् अवद्याद् अस्मान् गृणत उत नो मघोनः ॥ ५ ॥
३ त्वं वरुण उत मित्रो अग्ने त्वां वर्धन्ति मतिभिर् वसिष्ठाः ।
त्वे वसु सुषणनानि सन्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ६ ॥
७.६६.१ प्र मित्रयोर् वरुणयोः स्तोमो न एतु शूष्यः ।

| | |
|---|---|
| | नमस्वान् तुविजातयोः ॥ ७ ॥ |
| २ | या धारयन्त देवाः सुदक्षा दक्षपितरा । |
| | असुर्याय प्रमहसा ॥ ८ ॥ |
| ३ | ता नः स्तिपा तनूपा वरुणा जरितॄणाम् । |
| | मित्र साधयतं धियः ॥ ९ ॥ |
| ८.६.१ | महं इन्द्रो य ओजसा पर्जन्यो वृष्टिमं इव । |
| | स्तोमैर् वत्सस्य वावृधे ॥ १० ॥ |
| ३ | कण्वा इन्द्रं यद् अक्रत स्तोमैर् यज्ञस्य साधनम् । |
| * * आयुधम् | जामि ब्रुवत आयुधा ॥ ११ ॥ |
| २ | प्रजाम् ऋतस्य पिप्रतः प्र यद् भरन्त वह्नयः । |
| | विप्रा ऋतस्य वाहसा ॥ १२ ॥ ॥५४॥ |
| | ३.५५ |
| ऋ ९.६६.२५ * जंघ्नतो... | पवमानस्य जिघ्नतो हरेश् चन्द्रा असृक्षत । |
| | जीरा अजिरशोचिषः ॥ १ ॥ |
| २६ | पवमानो रथीतमः शुभ्रेभिः शुभ्रशस्तमः । |
| | हरिश्चन्द्रो मरुद्गणः ॥ २ ॥ |
| २७ पवमानो * अश्नवद्... | पवमान व्य् अश्नुहि रश्मिभिर् वाजसातमः । |
| | दधत् स्तोत्रे सुवीर्यम् ॥ ३ ॥ |
| ९.१०७.१ | परीतो षिञ्चता सुतं सोमो य उत्तमं हविः । |
| | दधन्वां यो नर्यो अप्स्व् अन्तर् आ सुषाव सोमम् अद्रिभिः ॥ ४ ॥ |
| २ | नूनं पुनानो ऽविभिः परि स्रवादब्धः सुरभिंतरः । |
| | सुते चित् त्वाप्सु मदामो अन्धसा श्रीणन्तो गोभिर् उत्तरम् ॥ ५ ॥ |
| ३ * सुवानश्... | परि स्वानश् चक्षसे देवमादनः क्रतुर् इन्दुर् विचक्षणः ॥ ६ ॥ |
| ९.८२.१ | असावि सोमो अरुषो वृषा हरी राजेव दस्मो अभि गा अचिक्रदत् । |
| * * पर्येत्य् * * * * | पुनानो वारम् अत्य् एष्य् अव्ययं श्येनो न योनिं |
| * आसदम् | घृतवन्तम् आसदत् ॥ ७ ॥ |
| ३ | पर्जन्यः पिता महिषस्य पर्णिनो नाभा पृथिव्या गिरिषु क्षयं दधे । |
| * * * * उतासरन् * * नसते | स्वसार आपो अभि गा उद् आसरन् सं ग्रावभिर् वसते वीते अध्वरे ॥ ८ ॥ |
| २ ...सृष्टो (एवं कौ) * [ * * * | कविर् वेधस्या पर्य् एषि माहिनम् अत्यो न निक्तो अभि वाजम् अर्षसि । |
| अपसेधन् * * मृडय (नो नास्ति) घृतं | अपसेधं दुरिता सोम नो मृड घृता वसानः परि यासि |

| | |
|---|---|
| | निर्णिजम् ॥ ९ ॥ |
| ८.९९.३ | श्रायन्त इव सूर्यं विश्वेद् इन्द्रस्य भक्षत । |
| * जाते जनमान ... दीधिम | वसूनि जातो जनिमान्य् ओजसा प्रति भागं न दीधिमः ॥ १० ॥ |
| ४ अनर्षराति ... | अलर्षिरातिं वसुदाम् उप स्तुहि भद्रा इन्द्रस्य रातयः । |
| सो ... | यो अस्य कामं विधतो न रोषति मनो दानाय चोदयन् ॥ ११ ॥ |
| ८.६१.१३ | यत इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि । |
| * * * * * ऊतिभिर् ... | मघवन् शग्धि तव तन् न ऊतये वि द्विषो वि मृधो जहि ॥ १२ ॥ |
| १४ * * राधस्पते ... विधतः | त्वं हि राधसस् पते राधसो महः क्षयस्यासि विधर्ता । |
| | तं त्वा वयं मघवन्न् इन्द्र गिर्वणः सुतावन्तो हवामहे ॥ १३ ॥ ॥५५॥ |

३.५६

| | |
|---|---|
| क ९.६७.१ | त्वं सोमासि धारयुर् मन्द्र ओजिष्ठो अध्वरे । |
| | पवस्व मंहयद्रयिः ॥ १ ॥ |
| २ * * नृमादनो ... | त्वं सुतो मदिन्तमो दधन्वान् मत्सरिन्तमः । |
| इन्द्राय सूरिरन्धसा | इन्दुः सत्राजिद् अस्तृतः ॥ २ ॥ |
| ३ | त्वं सुष्वाणो अद्रिभिर् अभ्य् अर्ष कनिक्रदत् । |
| * * उत्तमम् | द्युमन्तं शुष्मम् आ भर ॥ ३ ॥ |
| ९.१०६.७ | पवस्व देववीतय इन्दो धाराभिर् ओजसा । |
| | आ कलशं मधुमान् सोम नः सदः ॥ ४ ॥ |
| ८ | तव द्रप्सा उदप्रुत इन्द्रं मदाय वावृधुः । |
| | त्वां देवासो अमृताय कं पपुः ॥ ५ ॥ |
| ९ | आ नः सुतास इन्दवः पुनाना धावता रयिम् । |
| | वृष्टिद्यावो रीत्यापः स्वर्विदः ॥ ६ ॥ |
| ९.९८.७ | परि त्यं हर्यतं हरिं बभ्रुं पुनन्ति वारेण । |
| | यो देवान् विश्वं इत् परि मदेन सह गच्छति ॥ ७ ॥ |
| ६ .. स्वसारो * | द्विर् यं पञ्च स्वयशसं सखायो अद्रिसंहतम् । |
| * * * प्रस्नापयन्त्यूर्मिणम् | प्रियम् इन्द्रस्य काम्यं प्रस्नापयन्त ऊर्मयः ॥ ८ ॥ |
| १० | इन्द्राय सोम पातवे वृत्रघ्ने परि षिच्यसे । |
| * * * देवाय * | नरे च दक्षिणावते वीराय सदनासदे ॥ ९ ॥ |
| ९.१०९.१० * * क्रत्वे ... | पवस्व सोम महे दक्षायाश्वो न निक्तो वाजी धनाय ॥ १० ॥ |
| १२ | शिशुं जज्ञानं हरिं मृजन्ति पवित्रे सोमं देवेभ्य इन्दुम् ॥ ११ ॥ |

| | |
|---|---|
| ११ तं... | प्र ते सोतारो रसं मदाय पुनन्ति सोमं महे द्युम्नाय ॥१२॥ |
| ९.६१.१३ | उपो षु जातम् अप्तुरं गोभिर् भङ्गं परिष्कृतम् । |
| | इन्दुं देवा अयासिषुः ॥ १३ ॥ |
| १५ * णः... | अर्षा नः सोम शं गवे धुक्षस्व पिप्युषीम् इषम् । |
| ...उक्थम् | वर्धा समुद्रम् उक्थ्य ॥ १४ ॥ |
| १४ | तम् इद् वर्धन्तु नो गिरो वत्सं संशिश्वरीर् इव । |
| | य इन्द्रस्य हृदंसनिः ॥ १५ ॥ |
| ८.१९.१९ | भद्रो नो अग्निर् आहुतो भद्रा रातिः सुभग भद्रो अध्वरः । |
| | भद्रा उत प्रशस्तयः ॥ १६ ॥ |
| २० ...सासहः | भद्रं मनः कृणुष्व वृत्रतूर्ये येना समत्सु सासहिः । |
| ...अभिष्टिभिः | अव स्थिरा तनुहि भूरि शर्धतां वनेमा ते अभिष्टये ॥ १७ ॥ |
| १.८४.७ | य एक इद् विदयते वसु मर्ताय दाशुषे । |
| | ईशानो अप्रतिष्कुत इन्द्रो अङ्ग ॥ १८ ॥ |
| ९ | यश् चिद् धि त्वा बहुभ्य आ सुतावं आविवासति । |
| | उग्रं तत् पत्यते शव इन्द्रो अङ्ग ॥ १९ ॥ |
| ८ | कदा मर्तम् अराधसं पदा क्षुम्पम् इव स्फुरत् । |
| | कदा नः शुश्रवद् गिर इन्द्रो अङ्ग ॥ २० ॥ |
| १.१०.१ | गायन्ति त्वा गायत्रिणो ऽर्चन्त्य् अर्कम् अर्किणः । |
| | ब्रह्माणस् त्वा शतक्रत उद् वंशम् इव येमिरे ॥ २१ ॥ |
| २ * * सानुमारुहद् ... | यत् सानोः सान्व् आरुहो भूर्य् अस्पष्ट कर्त्वम् । |
| | तद् इन्द्रो अर्थं चेतति यूथेन वृष्णिर् एजति ॥ २२ ॥ |
| ३ कौ युङ्क्ष्वा... | युक्ष्वा हि केशिना हरी वृषणा कक्ष्यप्रा । |
| | अथा न इन्द्र सोमपा गिराम् उपश्रुतिं चर ॥ २३ ॥ ॥५६॥ |

३.५७

| | |
|---|---|
| क १.१३.१ सुसमिद्धो ... | सुषमिद्धो न आ वह देवं अग्ने हविष्मते । |
| | होतः पावक यक्षि च ॥ १ ॥ |
| २ | मधुमन्तं तनूनपाद् यज्ञं देवेषु नः कवे । |
| कौ * * कृतवे | अद्या कृणुहि वीतये ॥ २ ॥ |
| ३ | नराशंसम् इह प्रियम् अस्मिन् यज्ञ उप ह्वये । |
| | मधुजिह्वं हविष्कृतम् ॥ ३ ॥ |
| ४ | अग्ने सुखतमे रथे देवं ईडित आ वह । |
| | असि होता मनुर्हितः ॥ ४ ॥ |
| ५.६८.३ | ता नः शक्तं पार्थिवस्य महो रायो दिव्यस्य । |
| | महि वां क्षत्रं देवेषु ॥ ५ ॥ |
| ४ | ऋतम् ऋतेन सपन्तेषिरं दक्षम् आशाते । |
| | अद्रुहा देवौ वर्धेते ॥ ६ ॥ |

| | |
|---|---|
| ५ | वृष्टिद्यावा रीत्यापेषस् पती दानुमत्याः । |
| | बृहन्तं गर्तम् आशाते ॥ ७ ॥ |
| १.६.१ | युञ्जन्ति ब्रध्नम् अरुषं चरन्तं परि तस्थुषः । |
| | रोचन्ते रोचना दिवि ॥ ८ ॥ |
| २ | युञ्जन्त्य् अस्य काम्या हरी विपक्षसा रथे । |
| | शोणा धृष्णू नृवाहसा ॥ ९ ॥ |
| ३ | केतुं कृण्वन्न् अकेतवे पेशो मर्या अपेशसे । |
| | सम् उषद्भिर् अजायथाः ॥ १० ॥ |
| ६.६०.१० | तम् ईडिष्व यो अर्चिषा वना विश्वा परिष्वजत् । |
| | कृष्णा कृणोति जिह्वया ॥ ११ ॥ |
| ११ | य इद्ध आविवासति सुम्नम् इन्द्रस्य मर्त्यः । |
| | द्युम्नाय सुतरा अपः ॥ १२ ॥ |
| १२ | ता नो वाजवतीर् इष आशून् पिपृतम् अर्वतः । |
| इन्द्रम्... | एन्द्रम् अग्निं च वोढवे ॥ १३ ॥ ॥५७॥ |
| | ३.५८ |
| ऋ ९.११०.८ दिवः ... | प्रत्नं पीयूषं पूर्व्यं यद् उक्थ्यं महो गाहाद् दिव आ निर् अधुक्षत । |
| | इन्द्रम् अभि जायमानं सम् अस्वरन् ॥ १ ॥ |
| ९ ...भुवनाभि | अध यद् इमे पवमान रोदसी इमा च विश्वा भुवनानि मज्मना । |
| * * निःष्ठा ... । कौ ... राजसि | यूथे न निष्ठा वृषभो वि तिष्ठसे ॥ २ ॥ |
| ६ | आद् ईं के चित् पश्यमानास आप्यं वसुरुचो दिव्या अभ्य् अनूषत । |
| कौ दिवो न वारं * * * | वारं न देवः सविता व्य् ऊर्णुते ॥ ३ ॥ |
| ९.९७.३७ * * * ऋता ... | आ जागृविर् विप्र ऋतं मतीनां सोमः पुनानो असदच् चमूषु । |
| | सपन्ति यं मिथुनासो निकामा अध्वर्यवो रथिरासः सुहस्ताः ॥ ४ ॥ |
| ३८ * * * * न धातोभे * * वि * * | स पुनान उप सूरे दधान ओभे अप्रा रोदसी वी ष आवः । |
| * * * * * स तू * * * * | प्रिया चिद् यस्य प्रियसास ऊती सतो धनं कारिणे न प्र यंसत् ॥ ५ ॥ |
| ३९ | स वर्धिता वर्धनः पूयमानः सोमो मीढ्वं अभि नो ज्योतिषावीत् । |
| येना... | यत्र नः पूर्वे पितरः पदज्ञाः स्वर्विदो अभि गा अद्रिम् |
| उष्णन् (कौ इष्णन्) | इष्णुः ॥ ६ ॥ |
| ८.१.१ | मा चिद् अन्यद् वि शंसत सखायो मा रिषण्यत । |

| | |
|---|---|
| | इन्द्रम् इत् स्तोता वृषणं सचा सुते मुहुर् उक्था |
| | च शंसत ॥ ७ ॥ |
| २ * * यथाजुरं... | अवक्रक्षिणं वृषभं यथाजुवं गां न चर्षणीसहम् । |
| * संवननोभयंकरं... | विद्वेषणं संवननम् उभयंकरं मंहिष्ठम् उभयाविनम् ॥ ८ ॥ |
| ८.३.१५ | उद् उ त्ये मधुमत्तमा गिरः स्तोमास ईरते । |
| | सत्राजितो धनसा अक्षितोतयो वाजयन्तो रथा इव ॥ ९ ॥ |
| १६ ...आनशुः | कण्वा इव भृगवः सूर्या इव विश्वम् इद् धीतम् आशत । |
| | इन्द्रं स्तोमेभिर् महयन्त आयवः प्रियमेधासो अस्वरन् । |
| | ॥ १० ॥ ॥५८॥ |

### ३.५९

| | |
|---|---|
| ऋ ९.१०८.१ | पवस्व मधुमत्तम इन्द्राय सोम क्रतुवित्तमो मदः । |
| | महि द्युक्षतमो मदः ॥ १ ॥ |
| २ ...पीता * | यस्य ते पीत्वा वृषभो वृषायते ऽस्य पीत्वा स्वर्विदः । |
| ...ऽच्छा (एवं का) * * | स सुप्रकेतो अभ्य् अक्रमीद् इषो ऽच्छा वाजं नैतशः ॥ २ ॥ |
| ९.१०६.१ | इन्द्रम् अच्छ सुता इमे वृषणं यन्तु हरयः । |
| श्रुष्टी... | श्रुष्टे जातास इन्दवः स्वर्विदः ॥ ३ ॥ |
| २ | अयं भराय सानसिर् इन्द्राय पवते सुतः । |
| | सोमो जैत्रस्य चेतति यथा विदे ॥ ४ ॥ |
| ३ ...गृभ्णीत * | अस्येद् इन्द्रो मदेष्व् आ ग्राभं गृभ्णाति सानसिम् । |
| * * वृषणं * समप्सुजित् (एवं का) | वज्रं च वृषभं भरत् ॥ ५ ॥ |
| ९.११०.१ | पर्य् ऊ षु प्र धन्व वाजसातये परि वृत्राणि सक्षणिः । |
| ...ईयसे | द्विषस् तरध्या ऋणया न ईरसे ॥ ६ ॥ |
| ३ | अजीजनो हि पवमान सूर्यं विधारे शक्मना पयः । |
| | गोजीरया रंहमाणः पुरन्ध्या ॥ ७ ॥ |
| २ | अनु हि त्वा सुतं सोम मदामसि महे समर्यराज्ये । |
| | वाजं अभि पवमान प्र गाहसे ॥ ८ ॥ |
| ९.१०९.१ | परि प्र धन्वेन्द्राय सोम स्वादुर् मित्राय पूष्णे भगाय ॥९॥ |
| ३ | एवामृताय महे क्षयाय स शुक्रो अर्ष दिव्यः पीयूषः ॥ १० ॥ |
| २ * * * * पेयाः... | इन्द्रस् ते सोम सुतस्य पेयात् क्रत्वे दक्षाय विश्वे च |
| | देवाः ॥ ११ ॥ |
| ९.६९.६ ...प्रसुपः * | सूर्यस्येव रश्मयो द्रावयित्नवो मत्सरासः प्रसुतः साकम् |
| | ईरते । |
| | तन्तुं ततं परि सर्गास आशवो नेन्द्राद् ऋते पवते धाम |
| | किं चन ॥ १२ ॥ |
| २ | उपो मतिः पृच्यते सिच्यते मधु मन्द्राजनी चोदते अन्तर् |
| | आसनि । |

| | |
|---|---|
| * * प्रघ्नताम्... | पवमानः संतनिः सुन्वताम् इव मधुमान् द्रप्सः परि वारम् अर्षति ॥ १३ ॥ |
| ४ * मिमाति... | उक्षा मिमेति प्रति यन्ति धेनवो देवस्य देवीर् उप यन्ति निष्कृतम् । |
| | अत्य् अक्रमीद् अर्जुनं वारम् अव्ययम् अत्कं न निक्तं परि सोमो अव्यत ॥ १४ ॥ |
| ७.१.१ ...हस्तच्युती जनयन्त | अग्निं नरो दीधितिभिर् अरण्योर् हस्तच्युतं जनयत प्रशस्तम् । |
| ...अथर्युम् | दूरेदृशं गृहपतिम् अथव्युम् ॥ १५ ॥ |
| ३ | प्रेद्धो अग्ने दीदिहि पुरो नो ऽजस्रया सूर्म्या यविष्ठ । |
| | त्वां शश्वन्त उप यन्ति वाजाः ॥ १६ ॥ |
| २ | तम् अग्निम् अस्ते वसवो न्य् ऋण्वन् सुप्रतिचक्षम् अवसे कुतश् चित् । |
| | दक्षाय्यो यो दम आस नित्यः ॥ १७ ॥ |
| १०.१८९.१ | आयं गौः पृश्निर् अक्रमीद् असदन् मातरं पुरः । |
| | पितरं च प्रयन् स्वः ॥ १८ ॥ |
| २ | अन्तश् चरति रोचनास्य प्राणाद् अपानती । |
| | व्य् अख्यन् महिषो दिवम् ॥ १९ ॥ |
| ३ | त्रिंशद् धाम वि राजति वाक् पतङ्गाय धीयते । |
| | प्रति वस्तोर् अह द्युभिः ॥ २० ॥ ॥५९॥ |

| | |
|---|---|
| | ४.१ |
| क ९.१११.१ ...स्वयुग्वभिः * * स्वयुग्वभिः | अया रुचा हरिण्या पुनानो विश्वा द्वेषांसि तरति सयु-<br>ग्वभिः सूरो न सयुग्वभिः । |
| * सुतस्य... | धारा पृष्ठस्य रोचते पुनानो अरुषो हरिः । |
| * * * परियात्य्... | विश्वा यद् रूपा परियास्य् ऋक्वभिः सप्तास्येभिर्<br>ऋक्वभिः ॥ १ ॥ |
| ३ पूर्वाम्... | प्राचीम् अनु प्रदिशं याति चेकितत् सं रश्मिभिर् यतते<br>दर्शतो रथो दैव्यो दर्शतो रथः । |
| | अग्मन्न् उक्थानि पौंस्येन्द्रं जैत्राय हर्षयन् । |
| | वज्रश् च यद् भवथो अनपच्युता समत्स्व् अनपच्युता<br>॥ २ ॥ |
| २ त्वं त्यत् (ह नास्ति)... | त्वं ह त्यत् पणीनां विदो वसु सं मातृभिर् मर्जयसि स्व<br>आ दम ऋतस्य धीतिभिर् दमे । |
| | परावतो न साम तद् यत्रा रणन्ति धीतयः । |
| | त्रिधातुभिर् अरुषीभिर् वयो दधे रोचमानो वयो दधे<br>॥ ३ ॥ |
| १०.१३३.१ | प्रोष्व् अस्मै पुरोरथम् इन्द्राय शूषम् अर्चत । |
| | अभीके चिद् उ लोककृत् सङ्गे समत्सु वृत्रहा । |
| | अस्माकं बोधि चोदिता नभन्ताम् अन्यकेषां ज्याका<br>अधि धन्वसु ॥ ४ ॥ |
| २ | त्वं सिन्धूंर् अवासृजो ऽधराचो अहन्न् अहिम् । |
| | अशत्रुर् इन्द्र जज्ञिषे विश्वं पुष्यसि वार्यम् । |
| | तं त्वा परि ष्वजामहे नभन्ताम् अन्यकेषां ज्याका<br>अधि धन्वसु ॥ ५ ॥ |
| ३ | वि षु विश्वा अरातयो ऽर्यो नशन्त नो धियः । |
| | अस्तासि शत्रवे वधं यो न इन्द्र जिघांसति । |
| | या ते रात्रिर् ददिर् वसु नभन्ताम् अन्यकेषां ज्याका<br>अधि धन्वसु ॥ ६ ॥ |
| ३.२७.१ | प्र वो वाजा अभिद्यवो हविष्मन्तो घृताच्या । |
| | देवान् जिगाति सुम्नयुः ॥ ७ ॥ |

२ इळे अग्निं विपश्चितं गिरा यज्ञस्य साधनम् ।
श्रुष्टीवानं धितावानम् ॥ ८ ॥
३ अग्ने शकेम ते वयं यमं देवस्य वाजिनः ।
अति द्वेषांसि तरेम ॥ ९ ॥
१.५०.१ उद् उ त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः ।
दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥ १० ॥ ॥१॥

४.२

ऋ १.५०.४ तरणिर् विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृद् असि सूर्य ।
विश्वम् आ भासि रोचनम् ॥ १ ॥
५ प्रत्यङ् देवानां विशः प्रत्यङ्ङ् उद् एषि मानुषान् ।
प्रत्यङ् विश्वं स्वर् दृशे ॥ २ ॥
८.९३.१ उद् घेद् अभि श्रुतामघं वृषभं नर्यापसम् ।
अस्तारम् एषि सूर्य ॥ ३ ॥
२ नव यो नवतिं पुरो बिभेद बाह्वोजसा ।
अहिं च वृत्रहावधीत् ॥ ४ ॥
३ स न इन्द्रः शिवः सखाश्वावद् गोमद् यवमत् ।
उरुधारेव दोहते ॥ ५ ॥
३.१२.९ इन्द्राग्नी रोचना दिवः परि वाजेषु भूषथः ।
तद् वां चेति प्र वीर्यम् ॥ ६ ॥
८ इन्द्राग्नी तविषाणि वां सधस्थानि प्रयांसि च ।
युवोर् अप्तूर्यं हितम् ॥ ७ ॥
७ इन्द्राग्नी अपसस् पर्य् उप प्र यन्ति धीतयः ।
ऋतस्य पथ्या अनु ॥ ८ ॥
१०.१७०.१ विभ्राड् बृहत् पिबतु सोम्यं मध्व् आयुर् दधद् यज्ञपताव् अविह्रुतम् ।
...पुपोष पुरुधा * वातजूतो यो अभिरक्षति त्मना प्रजाः पिपर्ति बहुधा वि राजति ॥ ९ ॥
२ विभ्राड् बृहत् सुभृतं वाजसातमं धर्मन् दिवो धरुणे सत्यम् अर्पितम् ।
अमित्रहा वृत्रहा दस्युहन्तमं ज्योतिर् जज्ञे असुरहा सपत्नहा ॥ १० ॥ ॥२॥

४.३

ऋ १०.१७०.३ इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिर् उत्तमं विश्वजिद् धनजिद् उच्यते बृहत् ।
विश्वभ्राड् भ्राजो महि सूर्यो दृश उरु पप्रथे सह ओजो अच्युतम् ॥ १ ॥

| | |
|---|---|
| ८.१०१.११ | वण् महं असि सूर्य बड् आदित्य महं असि । |
| * * * * पनस्यते ऽद्धा * * * | महस् ते सतो महिमा पनिष्टम मह्ना देव महं असि ॥ २ ॥ |
| १२ | बट् सूर्य श्रवसा महं असि सत्रा देव महं असि । |
| | मह्ना देवानाम् असुर्यः पुरोहितो विभु ज्योतिर् अदाभ्यम् ॥ ३ ॥ |
| ८.१०२.१३ | उप त्वा जामयो गिरो देदिशतीर् हविष्कृतः । |
| | वायोर् अनीके अस्थिरन् ॥ ४ ॥ |
| ७.९६.५ * * सरस्व… | ये ते सरस्वन्न् ऊर्मयो मधुमन्तो घृतश्चुतः । |
| | तेभिर् नो ऽविता भव ॥ ५ ॥ |
| ६.६१.१० | उत नः प्रिया प्रियासु सप्तस्वसा सुजुष्टा । |
| | सरस्वती स्तोम्या भूत् ॥ ६ ॥ |
| १.१८.१ सोमानं… | सोमानं स्वरणं कृणुहि ब्रह्मणस् पते । |
| | कक्षीवन्तं य औशिजः ॥ ७ ॥ |
| ३.६२.१० | तत् सवितुर् वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । |
| | धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ ८ ॥ |
| ९.६६.१९ | अग्न आयूंषि पवस आ सुवोर्जम् इषं च नः । |
| | आरे बाधस्व दुच्छुनाम् ॥ ९ ॥ |
| २१ | अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम् । |
| * रयिं मयि पोषम् (एवं कौ। | दधत् पोषं रयिं मयि ॥ १० ॥ ॥३॥ |
| | ४.४ |
| ऋ ९.६६.२० | अग्निर् ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः । |
| | तम् ईमहे महागयम् ॥ १ ॥ |
| ९.८८.१ | अयं सोम इन्द्र तुभ्यं सुन्वे तुभ्यं पवते त्वम् अस्य पाहि । |
| | त्वं ह यं चकृषे त्वं ववृष इन्दुं मदाय युज्याय सोमम् ॥ २ ॥ |
| २ | स ईं रथो न भूरिषाळ् अयोजि महः पुरूणि सातये वसूनि । |
| | आद् ईं विश्वा नहुष्याणि जाता स्वर्षाता वन ऊर्ध्वा नवन्त ॥ ३ ॥ |
| ७ | शुष्मी शर्धो न मारुतं पवस्वानभिशस्ता दिव्या यथा विट् । |
| कौ …पृतनाषाड् न | आपो न मक्षू सुमतिर् भवा नः सहस्राप्साः पृतनाषाण् न यज्ञः ॥ ४ ॥ |
| ६.१६.१ | त्वम् अग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः । |
| | देवेभिर् मानुषे जने ॥ ५ ॥ |
| २ | स नो मन्द्राभिर् अध्वरे जिह्वाभिर् यजा महः । |
| | आ देवान् वक्षि यक्षि च ॥ ६ ॥ |

| | |
|---|---|
| ३ | वेत्था हि वेधो अध्वनः पथश् च देवाञ्जसा । अग्ने यज्ञेषु सुक्रतो ॥ ७ ॥ |
| ९.१.८ * वारणं * | तम् ईं हिन्वन्त्य् अग्रुवो धमन्ति बाकुरं दृतिम् । त्रिधातु वारणं मधु ॥ ८ ॥ |
| ९ | अभीमम् अघ्न्या उत श्रीणन्ति धेनवः शिशुम् । सोमम् इन्द्राय पातवे ॥ ९ ॥ |
| १० | अस्येद् इन्द्रो मदेष्व् आ विश्वा वृत्राणि जिघ्नते । शूरो मघा च मंहते ॥ १० ॥ ॥४॥ |
| | ४.५ |
| * ८.१६.८ ...अभिभूतिः | स स्तोम्यः स हव्यः सत्यः सत्वा तुविकूर्मिः । एकश् चित् सन्न् अविभूतिः ॥ १ ॥ |
| ९ | तम् अर्केभिस् तं सामभिस् तं गायत्रैश् चर्षणयः । इन्द्रं वर्धन्ति क्षितयः ॥ २ ॥ |
| १० | प्रणेतारं वस्यो अच्छा कर्तारं ज्योतिः समत्सु । सासह्वांसं युधामित्रान् ॥ ३ ॥ |
| ११ | स नः पप्रिः पारयाति स्वस्ति नावा पुरुहूतः । इन्द्रो विश्वा अति द्विषः ॥ ४ ॥ |
| १०.१२०.१ | तद् इद् आस भुवनेषु ज्येष्ठं यतो जज्ञ उग्रस् त्वेषनृम्णः । सद्यो जज्ञानो नि रिणाति शत्रून् अनु यं विश्वे मदन्त्य् ऊमाः ॥ ५ ॥ |
| २ | वावृधानः शवसा भूर्योजाः शत्रुर् दासाय भियसं दधाति । अव्यनच् च व्यनच् च सस्नि सं ते नवन्त प्रभृता मदेषु ॥ ६ ॥ |
| ३ | त्वे क्रतुम् अपि वृञ्जन्ति विश्वे द्विर् यद् एते त्रिर् भवन्त्य् ऊमाः । स्वादोः स्वादीयः स्वादुना सृजा सम् अदः सु मधु मधुनाभि योधीः ॥ ७ ॥ ॥५॥ |
| | ४.६ |
| * ८.८८.५ * हि * * अन्तंभ्यस् * ...अनु स्वधां * | प्र यो रिरिक्ष ओजसा दिवः सदोभ्यस् परि । न त्वा विव्याच रज इन्द्र पार्थिवम् अति विश्वं ववक्षिथ ॥ १ ॥ |
| ६ | नकिः परिष्टिर् मघवन् मघस्य ते यद् दाशुषे दशस्यसि । अस्माकं बोध्य् उचथस्य चोदिता मंहिष्ठो वाजसातये ॥ २ ॥ |
| ८.६०.१३ | शिशानो वृषभो यथाग्निः शृङ्गे दविध्वत् । तिग्मा अस्य हनवो न प्रतिधृषे सुजम्भः सहसो यहुः ॥ ३ ॥ |

| | |
|---|---|
| १४ | नहि ते अग्ने वृषभ प्रतिधृषे जम्भासो यद् वितिष्ठसे । |
| | स त्वं नो होतः सुहुतं हविष् कृधि वंस्वा नो वार्या |
| | पुरु ॥ ४ ॥ |
| ८.१०२.१३ | उप त्वा जामयो गिरो देदिशतीर् हविष्कृतः । |
| | वायोर् अनीके अस्थिरन् ॥ ५ ॥ |
| १४ | यस्य त्रिधात्व् अवृतं बर्हिस् तस्थाव् असंदिनम् । |
| | आपश् चिन् नि दधा पदम् ॥ ६ ॥ |
| १५ | पदं देवस्य मीढुषो ऽनाधृष्टाभिर् ऊतिभिः । |
| | भद्रा सूर्य इवोपदृक् ॥ ७ ॥ |
| ६.१६.२८ * * * यासद् ... | अग्निस् तिग्मेन शोचिषा यंसद् विश्वं न्य् अत्रिणम् । |
| * * वनते * | अग्निर् नो वंसते रयिम् ॥ ८ ॥ |
| २९ | सुवीरं रयिम् आ भर जातवेदो विचर्षणे । |
| | जहि रक्षांसि सुक्रतो ॥९॥ |
| ३० | त्वं नः पाह्य् अंहसो जातवेदो अघायतः । |
| | रक्षा णो ब्रह्मणस् कवे ॥ १० ॥ ॥६॥ |
| | ४.७ |
| क ९.५३.१ | उत् ते शुष्मासो अस्थू रक्षो भिन्दन्तो अद्रिवः । |
| | नुदस्व याः परिस्पृधः ॥ १ ॥ |
| २ | अया निजघ्निर् ओजसा रथसङ्गे धने हिते । |
| | स्तवा अबिभ्युषा हृदा ॥ २ ॥ |
| ३ ...दूढ्या (एवं कौ) | अस्य व्रतानि नाधृषे पवमानस्य पूर्व्या । |
| | रुज यस् त्वा पृतन्यति ॥ ३ ॥ |
| ४ | तं हिन्वन्ति मदच्युतं हरिं नदीषु वाजिनम् । |
| ...मत्सरम् (एवं कौ) | इन्दुम् इन्द्राय मत्सरः ॥ ४ ॥ |
| ९.५७.१ | प्र ते धारा असश्चतो दिवो न यन्ति वृष्टयः । |
| | अच्छा वाजं सहस्रिणम् ॥ ५ ॥ |
| २ | अभि प्रियाणि काव्या विश्वा चक्षाणो अर्षति । |
| | हरिस् तुञ्जान आयुधा ॥ ६ ॥ |
| ३ ...सुव्रतः (एवं कौ) | स मर्मृजान आयुभिर् इभो राजेव सुव्रतम् । |
| | श्येनो न वंसु षीदति ॥ ७ ॥ |
| ४ * * * * वसूतो (एवं कौ) * * | स नो विश्वा दिवो वसु उत पृथिव्या अधि । |
| | पुनान इन्दव् आ भर ॥ ८ ॥ |
| ८.६४.१ * * * स्तोमाः... | उत् त्वा मन्दन्तु सोमाः कृणुष्व राधो अद्रिवः । |
| | अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥ ९ ॥ |
| २ कौ * पणीन्... | पदा पणींर् अराधसो नि बाधस्व महं असि । |
| | न हि त्वा कश् चन प्रति ॥ १० ॥ ॥७॥ |

| | |
|---|---|
| | ४.८ |
| ऋ ८.६४.३ | त्वम् ईशिषे सुतानाम् इन्द्र त्वम् असुनानाम् । |
| | त्वं राजा जनानाम् ॥ १ ॥ |
| ८.६.४ | सम् अस्य मन्यवे विशो विश्वा नमन्त कृष्टयः । |
| | समुद्रायेव सिन्धवः ॥ २ ॥ |
| ६ कौ द्वितीयतृतीयपादयोर् विपर्यासः { | वि चिद् वृत्रस्य दोधतो वज्रेण शतपर्वणा । |
| | शिरो बिभेद वृष्णिना ॥ ३ ॥ |
| ५ | ओजस् तद् अस्य तित्विष उभे यत् समवर्तयत् । |
| | इन्द्रश् चर्मेव रोदसी ॥ ४ ॥ |
| १.३६.१९ | नि त्वाम् अग्ने मनुर् दधे ज्योतिर् जनाय शश्वते । |
| | दीदेथ कण्व ऋतजात उक्षितो यं नमस्यन्ति कृष्टयः ॥५॥ |
| २० | त्वेषासो अग्नेर् अमवन्तो अर्चयो भीमासो न प्रतीतये । |
| | रक्षस्विनः सदम् इद् यातुमावतो विश्वं सम् अत्रिणं दह ॥ ६ ॥ |
| ८.९३.४ | यद् अद्य कच् च वृत्रहन्न् उदगा अभि सूर्य । |
| | सर्वं तद् इन्द्र ते वशे ॥ ७ ॥ |
| ५ | यद् वा प्रवृद्ध सत्पते न मरा इति मन्यसे । |
| | उतो तत् सत्यम् इत् तव ॥ ८ ॥ |
| ६ | ये सोमासः परावति ये अर्वावति सुन्विरे । |
| | सर्वांस् तं इन्द्र गच्छसि ॥ ९ ॥ |
| १.२२.१७ | इदं विष्णुर् वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम् । |
| ...पांसुरे | समूढम् अस्य पांसुले ॥ १० ॥ ॥८॥ |
| | ४.९ |
| ऋ १.२२.१८ | त्रीणि पदा वि चक्रमे विष्णुर् गोपा अदाभ्यः । |
| | अतो धर्माणि धारयन् ॥ १ ॥ |
| १९ | विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे । |
| | इन्द्रस्य युज्यः सखा ॥ २ ॥ |
| २० | तद् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः । |
| | दिवीव चक्षुर् आततम् ॥ ३ ॥ |
| १.२७.१० | जराबोध तद् विड्ढि विशेविशे यज्ञियाय । |
| | स्तोमं रुद्राय दृशीकम् ॥ ४ ॥ |
| ११ | स नो महं अनिमानो धूमकेतुः पुरुश्चन्द्रः । |
| * * हिन्वतु (एवं कौ) | धिये वाजाय हिन्वति ॥ ५ ॥ |
| १२ | स रेवं इव विश्पतिर् दैव्यः केतुः शृणोतु नः । |
| | उक्थैर् अग्निर् बृहद्भानुः ॥ ६ ॥ |
| ६.४५.२२ | तद् वो गाय सुते सचा पुरुहूताय सत्वने । |

शं यद् गवे न शाकिने ॥ ७ ॥
२३ न घा वसुर् नि यमते दानं वाजस्य गोमतः ।
यत् सीम् उप श्रवद् गिरः ॥ ८ ॥
२४ कुवित्सस्य प्र हि व्रजं गोमन्तं दस्युहा गमत् ।
शचीभिर् अप नो वरत् ॥ ९ ॥
८.१२.१६ यत् सोमम् इन्द्र विष्णवि यद् वा घ त्रित आप्त्ये ।
यद् वा मरुत्सु मन्दसे सम् इन्दुभिः ॥ १० ॥ ॥९॥

४.१०

ऋ ८.१२.१७ यद् वा शक्र परावति समुद्रे अधि मन्दसे ।
अस्माकम् इत् सुते रणा सम् इन्दुभिः ॥ १ ॥
१८ यद् वासि सुन्वतो वृधो यजमानस्य सत्पते ।
उक्थे वा यस्य रण्यसि सम् इन्दुभिः ॥ २ ॥
शौ ६.४९.१ तं आ ६.१०.१ न हि ते अग्ने तन्वे क्रूरं विवेद मर्त्यः ।
कपिर् बभस्ति तेजनं पुनर् जरायु गौर् इव ॥ ३ ॥
शौ २ त्वष तु वेत् सं च वि चैव ऋण्वसि यद् उत्तराद्रा उपरेषु खादसि ।
शीर्ष्णा शिरो वक्षसा वक्षो अर्धयन्न् अंशुं बिभर्षि हरितेभिर् आसभिः ॥ ४ ॥
ऋ ८.१.७ क्वयथ क्वेद् असि पुरुत्रा चिद् धि ते मनः ।
अलर्षि युध्म खजकृत् पुरंदर प्र गायत्रा अगासिषुः ॥ ५ ॥
८ प्रास्मै गायत्रम् अर्चत वावातुर् यः पुरंदरः ।
याभिः काण्वस्योप बर्हिर् आसदं यासद् वज्री भिनत् पुरः ॥ ६ ॥
९ ये ते सन्ति दशग्विनः शतिनो ये सहस्रिणः ।
अश्वासो ये ते वृषणो रघुद्रुवस् तेभिर् नस् तूयम् आ गहि ॥ ७ ॥
८.९४.१ गौर् धयति मरुतां श्रवस्युर् माता मघोनाम् ।
युक्ता वह्नी रथानाम् ॥ ८ ॥
२ यस्या देवा उपस्थे व्रता विश्वे धारयन्ते ।
सूर्यामासा दृशे कम् ॥ ९ ॥
३ तत् सु नो विश्वे अर्य आ सदा गृणन्ति कारवः ।
मरुतः सोमपीतये ॥ १० ॥ ॥१०॥

४.११

ऋ ४.१७.८ सत्राहणं दाधृषिं तुम्रम् इन्द्रं महाम् अपारं वृषभं सुवज्रम् ।

हन्ता यो वृत्रं सनितोत वाजं दाता मघानि मघवा सुराधाः ॥ १ ॥
९ अयं वृतश् चातयते समीचीर् य आजिषु मघवा शृण्व एकः ।
अयं वाजं भरति यं सनोत्य् अस्य प्रियासः सख्ये स्याम ॥ २ ॥
१० अयं शृण्वे अध जयन्न् उत घ्नन्न् अयम् उत प्र कृणुते युधा गाः ।
यदा सत्यं कृणुते मन्युम् इन्द्रो विश्वं दृढं भयत एजद् अस्मात् ॥ ३ ॥
८.७७.१० विश्वेत् ता विष्णुर् आ भरद् उरुक्रमस् त्वेषितः ।
शतं महिषान् क्षीरपाकम् ओदनं वराहम् इन्द्र एमुषम् ॥ ४ ॥
११ तुविक्षं ते सुकृतं सूमयं धनुः साधुर् बुन्दो हिरण्ययः ।
उभा ते बाहू रण्या सुसंस्कृत ऋदूपे चिद् ऋदूवृधा ॥ ५ ॥
८.१०३.६ यो विश्वा दयते वसु होता मन्द्रो जनानाम् ।
...वन्त्य् * मधोर् न पात्रा प्रथमान्य् अस्मै प्र स्तोमा यन्त्व् अग्नये ॥ ६ ॥
७ अश्वं न गीर्भी रथ्यं सुदानवो मर्मृज्यन्ते देवयवः ।
उभे तोके तनये दस्म विश्पते पर्षि राधो मघोनाम् ॥ ७ ॥
१.४४.१ अग्ने विवस्वद् उषसश् चित्रं राधो अमर्त्य ।
आ दाशुषे जातवेदो वहा त्वम् अद्या देवं उषर्बुधः ॥ ८ ॥
२ जुष्टो हि दूतो असि हव्यवाहनो ऽग्ने रथीर् अध्वराणाम् ।
सजूर् अश्विभ्याम् उषसा सुवीर्यम् अस्मे धेहि श्रवो बृहत् ॥ ९ ॥
१.२७.४ इमम् ऊ षु त्वम् अस्माकं सनिं गायत्रं नव्यांसम् ।
अग्ने देवेषु प्र वोचः ॥ १० ॥ ॥११॥

४.१२

ऋ १.२७.५ आ नो भज परमेष्व् आ वाजेषु मध्यमेषु ।
शिक्षा वस्वो अन्तमस्य ॥ १ ॥
६ विभक्तासि चित्रभानो सिन्धोर् ऊर्मा उपाक आ ।
सद्यो दाशुषे क्षरसि ॥ २ ॥
८.६.१० ...जग्रभ अहम् इद् धि पितुष् परि मेधाम् ऋतस्य जग्रह ।
अहं सूर्य इवाजनि ॥ ३ ॥
११ कौ * * जन्मना... अहं प्रत्नेन मन्मना गिरः शुम्भामि कण्ववत् ।
येनेन्द्रः शुष्मम् इद् दधे ॥ ४ ॥

१२ ये त्वाम् इन्द्र न तुष्टुवुर् ऋषयो ये च तुष्टुवुः ।
ममेद् वर्धस्व सुष्टुतः ॥ ५ ॥
९.६६.१९ अग्न आयूंषि पवस आसुवोर्जम् इषं च नः ।
आरे बाधस्व दुच्छुनाम् ॥ ६ ॥
२१ अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम् ।
* रयिं मयि पोषम् (एवं कौ) दधत् पोषं रयिं मयि ॥ ७ ॥
२० अग्निर् ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः ।
तम् ईमहे महागयम् ॥ ८ ॥
५.२६.१ अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया ।
आ देवान् वक्षि यक्षि च ॥ ९ ॥
१.१२.१० स नः पावक दीदिवो ऽग्ने देवं इहा वह ।
उप यज्ञं हविश् च नः ॥ १० ॥
९ यो अग्निं देववीतये हविष्मं आविवासति ।
तस्मै पावक मृडय ॥ ११ ॥
८.४४.२१ अग्निः शुचिव्रततमः शुचिर् विप्रः शुचिः कविः ।
शुची रोचत आहुतः ॥ १२ ॥
१७ उद् अग्ने शुचयस् तव शुक्रा भ्राजन्त ईरते ।
तव ज्योतींष्य् अर्चयः ॥ १३ ॥
२.७.४ शुचिः पावक वन्द्यो ऽग्ने बृहद् वि रोचसे ।
त्वं घृतेभिर् आहुतः ॥ १४ ॥
१.७५.३ कस् ते जामिर् जनानाम् अग्ने को दाश्वध्वरः ।
को ह कस्मिन्न् असि श्रितः ॥ १५ ॥ ॥१२॥

४.१३

ऋ १.७५.४ त्वं जामिर् जनानाम् अग्ने मित्रो असि प्रियः ।
सखा सखिभ्य ईड्यः ॥ १ ॥
५ यजा नो मित्रावरुणा यजा देवं ऋतं बृहत् ।
अग्ने यक्षि स्वं दमम् ॥ २ ॥
३.२७.१३ ईळेन्यो नमस्यस् तिरस् तमांसि दर्शतः ।
सम् अग्निर् इध्यते वृषा ॥ ३ ॥
१४ वृषो अग्निः सम् इध्यते ऽश्वो न देववाहनः ।
तं हविष्मन्त ईळते ॥ ४ ॥
१५ वृषणं त्वा वयं वृषन् वृषणः सम् इधीमहि ।
अग्ने दीद्यतं बृहत् ॥ ५ ॥
८.४४.४ उत् ते बृहन्तो अर्चयः समिधानस्य दीदिवः ।
अग्ने शुक्रास ईरते ॥ ६ ॥
५ उप त्वा जुह्वो मम घृताचीर् यन्तु हर्यत ।

अग्ने हव्या जुषस्व नः ॥ ७ ॥
६ मन्द्रं होतारम् ऋत्विजं चित्रभानुं विभावसुम् ।
अग्निम् ईडे स उ श्रवत् ॥ ८ ॥
१०.३.१ इनो राजन्न् अरतिः समिद्धो रौद्रो दक्षाय सुषुमं अदर्शि ।
चिकिद् वि भाति भासा बृहतासिक्नीम् एति रुशतीम् अपाजन् ॥ ९ ॥
२ कृष्णां यद् एनीम् अभि वर्पसा भूज् जनयन् योषां बृहतः पितुर् जाम् ।
ऊर्ध्वं भानुं सूर्यस्य स्तभायन् दिवो वसुभिर् अरतिर् वि भाति ॥ १० ॥
३ भद्रो भद्रया सचमान आगात् स्वसारं जारो अभ्य् एति पश्चात् ।
सुप्रकेतैर् द्युभिर् अग्निर् वितिष्ठन् रुशद्भिर् वर्णैर् अभि रामम् अस्थात् ॥ ११ ॥ ॥१३॥

४.१४

ऋ ८.६०.९ पाहि नो अग्न एकया पाह्य् उत द्वितीयया ।
पाहि गीर्भिस् तिसृभिर् ऊर्जां पते पाहि चतसृभिर् वसो ॥ १ ॥
१० पाहि विश्वस्माद् रक्षसो अराव्णः प्र स्म वाजेषु नोऽव ।
त्वाम् इद् धि नेदिष्ठं देवतातय आपिं नक्षामहे वृधे ॥ २ ॥
८.८४.४ कया ते अग्ने अङ्गिर ऊर्जो नपाद् उपस्तुतिम् ।
वराय देव मन्यवे ॥ ३ ॥
५ दाशेम कस्य मनसा यज्ञस्य सहसो यहो ।
कद् उ वोच इदं नमः ॥ ४ ॥
६ अधा त्वं हि नस् करो विश्वा अस्मभ्यं सुक्षितीः ।
वाजद्रविणसो गिरः ॥ ५ ॥
८.७१.१० अच्छा नः शीरशोचिषं गिरो यन्तु दर्शतम् ।
* * * पुरूवसुं ( एवं कौ ) ... अच्छा यज्ञासो नमसा पुरोवसुं पुरुप्रशस्तम् ऊतये ॥ ६ ॥
११ अग्निं सूनुं सहसो जातवेदसं दानाय वार्याणाम् ।
द्विता यो भूद् अमृतो मर्त्येष्व् आ होता मन्द्रतमो विशि ॥ ७ ॥
१४ अग्निम् ईडिष्वावसे गाथाभिः शीरशोचिषम् ।
...भाग्निं * * अग्निं राये पुरुमीढ श्रुतं नरो ऽग्निः सुदीतये छर्दिः ॥ ८ ॥
१५ अग्निं द्वेषो योतवै नो गृणीमस्य् अग्निं शं योश् च दातवे ।

विश्वासु विक्ष्व् अवितेव हव्यो भुवद् वस्तुर् ऋषूणाम्
॥ ९ ॥ ॥१४॥

४.१५

ऋ ३.११.५ अदाभ्यः पुरएता विशाम् अग्निर् मानुषीणाम् ।
तूर्णी रथः सदा नवः ॥ १ ॥
६ साह्वान् विश्वा अभियुजः क्रतुर् देवानाम् अमृक्तः ।
अग्निस् तुविश्रवस्तमः ॥ २ ॥
७ अभि प्रयांसि वाहसा दाश्वं अश्नोति मर्त्यः ।
क्षयं पावकशोचिषः ॥ ३ ॥
१.७९.४ अग्ने वाजस्य गोमत ईशानः सहसो यहो ।
* धेहि... अस्मे देहि जातवेदो महि श्रवः ॥ ४ ॥
५ स इधानो वसुष् कविर् अग्निर् ईडेन्यो गिरा ।
रेवद् अस्मभ्यं पुर्वणीक दीदिहि ॥ ५ ॥
६ क्षपो राजन्न् उत त्मनाग्ने वस्तोर् उतोषसः ।
स तिग्मजम्भ रक्षसो दह प्रति ॥ ६ ॥
८.७४.१ विशोविशो वो अतिथिं वाजयन्तः पुरुप्रियम् ।
अग्निं वो दुर्यं वचः स्तुषे शूषस्य मन्मभिः ॥ ७ ॥
२ यं जनासो हविष्मन्तो मित्रं न सर्पिर् आसुतिम् ।
प्रशंसन्ति प्रशस्तिभिः ॥ ८ ॥
३ पन्यांसं जातवेदसं यो देवतात्य् उद्यता ।
हव्यान्य् ऐरयद् दिवि ॥ ९ ॥
६.१५.७ समिद्धम् अग्निं समिधा गिरा गृणे शुचिं पावकं पुरो अध्वरे ध्रुवम् ।
विप्रं होतारं पुरुवारम् अद्रुहं कविं सुम्नैर् ईमहे जातवेदसम् ॥ १० ॥ ॥१५॥

४.१६

ऋ ६.१५.८ त्वां दूतम् अग्ने अमृतं युगेयुगे हव्यवाहं दधिरे पायुम् ईड्यम् ।
देवासश् च मर्तासश् च जागृविं विभुं विश्पतिं नमसा नि षेदिरे ॥ १ ॥
९ विभूषन्न् अग्न उभयं अनु व्रता दूतो देवानां रजसी सम् ईयसे ।
यत् ते धीतिं सुमतिम् आवृणीमहे ऽध स्मा नस्
* * भव (एवं कौ) त्रिवरूथः शिवो भवा ॥ २ ॥
८.१०१.९ आ नो यज्ञं दिविस्पृशं वायो याहि सुमन्मभिः ।

अन्तः पवित्र उपरि श्रीणानो ऽयं शुक्रो अयामि ते ॥ ३ ॥
१० वेत्य् अध्वर्युः पथिभी रजिष्ठैः प्रति हव्यानि वीतये ।
अधा नियुत्व उभयस्य नः पिब शुचिं सोमं गवाशिरम् ॥ ४ ॥
८.२.४ इन्द्र इत् सोमपा एक इन्द्रः सुतपा विश्वायुः ।
अन्तर् देवान् मर्त्यांश् च ॥ ५ ॥
५ न यं शुक्रो न दुराशीर् न तृप्रा उरुव्यचसम् ।
अपस्पृण्वते सुहार्दम् ॥ ६ ॥
६ गोभिर् यद् ईम् अन्ये अस्मन् मृगं न व्रा मृगयन्ते ।
अभित्सरन्ति धेनुभिः ॥ ७ ॥
७ त्रय इन्द्रस्य सोमाः सुतासः सन्तु देवस्य ।
स्वे क्षये सुतपाव्नः ॥ ८ ॥
८ त्रयः कोशासः श्चोतन्ति तिस्रश् चम्वः सुपूर्णाः ।
समाने अधि भार्मन् ॥ ९ ॥
९ शुचिर् असि पुरुनिःष्ठाः क्षीरैर् मध्यत आशीर्तः ।
दध्ना मन्दिष्ठः शूरस्य ॥ १० ॥ ॥१६॥

४.१७

ऋ ९.९८.१० इन्द्राय सोम पातवे वृत्रघ्ने परि षिच्यसे ।
* * * देवाय * नरे च दक्षिणावते वीराय सदनासदे ॥ १ ॥
९ स वां यज्ञेषु मानवी इन्दुर् जनिष्ट रोदसी ।
देवो देवी गिरिष्ठा अस्रेधन्तं तुविष्वणि ॥ २ ॥
१२ * * पुरोरुचं... । कौ... वयं यूयं [ * * तं सखायः पुरूरुचं यूयं वयं च सूरयः ।
अश्याम वाजगन्ध्यं सनम वाजपस्त्यम् ॥ ३ ॥
८.४५.१ आ घा ये अग्निम् इन्धते स्तृणन्ति बर्हिर् आनुषक् ।
येषाम् इन्द्रो युवा सखा ॥ ४ ॥
२ बृहन्न् इद् इध्म एषां भूरि शस्तं पृथुः स्वरुः ।
येषाम् इन्द्रो युवा सखा ॥ ५ ॥
३ अयुद्ध इद् युधा वृतं शूर आजति सत्वभिः ।
येषाम् इन्द्रो युवा सखा ॥ ६ ॥
८.२४.१९ एतो न्व् इन्द्रं स्तवाम सखायः स्तोम्यं नरम् ।
कृष्टीर् यो विश्वा अभ्य् अस्त्य् एक इत् ॥ ७ ॥
२० अगोरुधाय गविषे द्युक्षाय दस्म्यं वचः ।
घृतात् स्वादीयो मधुनश् च वोचत ॥ ८ ॥
२१ यस्यामितानि वीर्या न राधः पर्येतवे ।
ज्योतिर् न विश्वम् अभ्य् अस्ति दक्षिणा ॥ ९ ॥
कौ * * * * सरूप... सुमन्मा वस्वी रन्ती सूनरी सुरूप वृषन्न् आ गहि ।

| | |
|---|---|
| इमौ मन्त्रावृग्वेदे न स्तः | इमौ भद्रौ धुर्याव् अभि ताव् इमा उप सर्पतः ॥ १० ॥ |
| | नीव शीर्षाणि मृढ्वं मध्य आपस्य तिष्ठति । |
| | शृङ्गेभिर् दशभिर् दिशन् ॥ ११ ॥ ॥१७॥ |

४.१८

| | |
|---|---|
| ऋ ५.२६.४ | अग्ने विश्वेभिर् आ गहि देवेभिर् हव्यदातये । |
| | होतारं त्वा वृणीमहे ॥ १ ॥ |
| ५ | यजमानाय सुन्वत आग्ने सुवीर्यं वह । |
| | देवैर् आ सत्सि बर्हिषि ॥ २ ॥ |
| ६ | समिधानः सहस्रजिद् अग्ने धर्माणि पुष्यसि । |
| | देवानां दूत उक्थ्यः ॥ ३ ॥ |
| ५.७१.२ | विश्वस्य हि प्रचेतसा वरुण मित्र राजथः । |
| | ईशाना पिप्यतं धियः ॥ ४ ॥ |
| १ | आ नो गन्तं रिशादसा वरुण मित्र बर्हणा । |
| | उपेमं चारुम् अध्वरम् ॥ ५ ॥ |
| ३ | उप नः सुतम् आ गतं वरुण मित्र दाशुषः । |
| | अस्य सोमस्य पीतये ॥ ६ ॥ |
| ८.५३.३ | आ नो विश्वेषां रसं मध्वः सिञ्चन्त्व् अद्रयः । |
| | ये परावति सुन्विरे जनेष्व् आ ये अर्वावतीन्दवः ॥ ७ ॥ |
| ४ | विश्वा द्वेषांसि जहि चाव चा कृधि विश्वे सन्वन्त्व् आ वसु । |
| | शीष्टेषु चित् ते मदिरासो अंशवो यत्रा सोमस्य तृम्पसि ॥ ८ ॥ |
| ८.९०.१ * * * हव्य इन्द्रः * भूषतु | आ नो विश्वासु हव्यम् इन्द्रं समत्सु भूषत । |
| * * * वृत्रहा * ऋचीषमः (कौ ऋचीषम) | उप ब्रह्माणि सवनानि वृत्रहन् परमज्या ऋचीषमा ॥ ९ ॥ |
| २ | त्वं दाता प्रथमो राधसाम् अस्य् असि सत्य ईशानकृत् । |
| | तुविद्युम्नस्य युज्या वृणीमहे पुत्रस्य शवसो महः ॥ १० ॥ ॥१८॥ |

४.१९

| | |
|---|---|
| ऋ ८.५१.९ | यस्यायं विश्व आर्यो दासः शेवधिपा अरिः । |
| | तिरश् चिद् अर्ये रुशमे पवीरवि तुभ्येत् सो अज्यते रयिः ॥ १ ॥ |
| १० | तुरण्यवो मधुमन्तं घृतश्चुतं विप्रासो अर्कम् आनृचुः । |
| ... सुवानास * | अस्मे रयिः पप्रथे वृष्ण्यं शवो ऽस्मे स्वानास इन्दवः ॥ २ ॥ |
| १.३६.५ | मन्द्रो होता गृहपतिर् अग्ने दूतो विशाम् असि । |

त्वे विश्वा संगतानि व्रता ध्रुवा यानि देवा अकृण्वत ॥ ३ ॥
६ त्वे इद् अग्ने सुभगे यविष्ठ्य विश्वम् आ हूयते हविः ।
स त्वं नो अद्य सुमना उतापरं यक्षि देवान् सुवीर्या ॥ ४ ॥
४.८.१ दूतं वो विश्ववेदसं हव्यवाहम् अमर्त्यम् ।
यजिष्ठम् ऋञ्जसे गिरा ॥ ५ ॥
२ स हि वेदा वसुधितिं महं आरोधनं दिवः ।
स देवं एह वक्षति ॥ ६ ॥
३ स वेद देव आनमं देवं ऋतायते दमे ।
दाति प्रियाणि चिद् वसु ॥ ७ ॥
९.८९.२ राजा सिन्धूनाम् अवसिष्ट वास ऋतस्य नावम् आरुहद् रजिष्ठाम् ।
अप्सु द्रप्सो वावृधे श्येनजूतो दुह ईं पिता दुह ईं पितुर् जाम् ॥ ८ ॥
३ सिंहं नसन्त मध्वो अयासं हरिम् अरुषं दिवो अस्य पतिम् ।
शूरो युत्सु प्रथमः पृच्छते गा अस्य चक्षसा परि पात्य् उक्षा ॥ ९ ॥
४ मधुपृष्ठं घोरम् अयासम् अश्वं रथे युञ्जन्त्य् उरुचक्र ऋष्वम् ।
स्वसार ईं जामयो मर्जयन्ति सनाभयो वाजिनम् ऊर्जयन्ति ॥ १० ॥ ॥११॥

४.२०

ऋ ८.४.७ मा भेम मा श्रमिष्मोग्रस्य सख्ये तव ।
महत् ते वृष्णो अभिचक्ष्यं कृतं पश्येम तुर्वशं यदुम् ॥ १ ॥
८ सव्याम् अनु स्फिग्यं वावसे वृषा न दानो अस्य रोषति ।
...पिब (एवं कौ) मध्वा संपृक्ताः सारघेण धेनवस् तूयम् एहि द्रवा पिबा ॥ २ ॥
८.३३.१० सत्यम् इत्था वृषेद् असि वृषजूतिर् नो ऽवृतः ।
वृषा ह्य् उग्र शृण्विषे परावति वृषो अर्वावति श्रुतः ॥ ३ ॥
११ वृषणस् ते अभीशवो वृषा कशा हिरण्ययी ।
वृषा रथो मघवन् वृषणा हरी वृषा त्वं शतक्रतो ॥ ४ ॥
१२ वृषा सोता सुनोतु ते वृषन्न् ऋजीपिन्न् आ भर ।
वृषा दधन्वे वृषणं नदीष्व् आ तुभ्यं स्थातर् हरीणाम् ॥ ५ ॥

| | |
|---|---|
| ८.३.३ * * * पुरूवसो (एवं कौ)... | इमा उ त्वा पुरोवसो गिरो वर्धन्तु या मम ।<br>पावकवर्णाः शुचयो विपश्चितो ऽभि स्तोमैर् अनूषत ॥ ६ ॥ |
| ४ | अयं सहस्रम् ऋषिभिः सहस्कृतः समुद्र इव पप्रथे ।<br>सत्यः सो अस्य महिमा गृणे शवो यज्ञेषु विप्रराज्ये ॥ ७ ॥ |
| ९.८६.४३ ...मधुनाभ्य् | अञ्जते व्य् अञ्जते सम् अञ्जते क्रतुं रिहन्ति मध्वाभ्य् अञ्जत ।<br>सिन्धोर् उच्छ्वासे पतयन्तम् उक्षणं हिरण्यपावाः पशुम् |
| आसु * | अप्सु गृभ्णते ॥ ८ ॥ |
| ४५ | अग्रेगो राजाप्यस् तविष्यते विमानो अह्नां भुवनेष्व् अर्पितः ।<br>हरिर् घृतस्नुः सुदृशीको अर्णवो ज्योतीरथः पवते राय ओक्यः ॥ ९ ॥ |
| ४४ | विपश्चिते पवमानाय गायत मही न धारात्य् अन्धो अर्षति ।<br>अहिर् न जूर्णाम् अति सर्पति त्वचम् अत्यो न क्रीडन्न् असरद् वृषा हरिः ॥ १० ॥ ॥२०॥ |
| | ४.२१ |
| क ७.१६.११ ...विवष्ट्य् * | देवो वो द्रविणोदाः पूर्णां विवष्ट्व् आसिचम् ।<br>उद् वा सिञ्चध्वम् उप वा पृणध्वम् आद् इद् वो देव ओहते ॥ १ ॥ |
| १२ | तं होतारम् अध्वरस्य प्रचेतसं वह्निं देवा अकृण्वत ।<br>दधाति रत्नं विधते सुवीर्यम् अग्निर् जनाय दाशुषे ॥ २ ॥ |
| ८.१०३.१<br>...नक्षन्त * * | अदर्शि गातुवित्तमो यस्मिन् व्रतान्य् आदधुः ।<br>उपो षु जानम् आर्यस्य वर्धनम् अग्निं नक्षन्तु नो गिरः ॥ ३ ॥ |
| ३<br>...सपर्यत | यस्माद् रेजन्त कृष्टयश् चर्कृत्यानि कृण्वतः ।<br>सहस्रसां मेधसाताव् इव त्मनाग्निं धीभिर् नमस्यत ॥ ४ ॥ |
| २ * * * * अच्छा * *<br>...सानवि | प्र दैवोदासो अग्निर् देवं इन्द्रो न मज्मना ।<br>अनु मातरं पृथिवीं वि वावृते तस्थौ नाकस्य शर्मणि ॥ ५ ॥ |
| ९.१७.८ | मधोर् धाराम् अनु क्षर तीव्रः सधस्थम् आसदः ।<br>चारुर् ऋताय पीतये ॥ ६ ॥ |
| १ | प्र निम्नेनेव सिन्धवो घ्नन्तो वृत्राणि भूर्णयः ।<br>सोमा असृग्रम् आशवः ॥ ७ ॥ |
| २ * सुवानास... | अभि स्वानास इन्दवो वृष्टयः पृथिवीम् इव । |

* * अक्षरन् (एवं कौ) इन्द्रं सोमासो अस्वरन् ॥ ८ ॥
८.२.१० इमे त इन्द्र सोमास् तीव्रा अस्मे सुतासः ।
शुक्रा आशिरं याचन्ते ॥ ९ ॥
११ तं आशिरं पुरोडाशम् इन्द्रेमं सोमं श्रीणीहि ।
रेवन्तं हि त्वा शृणोमि ॥ १० ॥ ॥२१॥

४.२२

ऋ ८.२.१२ हृत्सु पीतासो युध्यन्ते दुर्मदासो न सुरायाम् ।
ऊधर् न नग्ना जरन्ते ॥ १ ॥
९.६६.२४ पवमान ऋतं बृहच् छुक्रं ज्योतिर् अजीजनत् ।
कृष्णा तमांसि जङ्घनत् ॥ २ ॥
२६ पवमानो रथीतमः शुभ्रेभिः शुभ्रशस्तमः ।
हरिश्चन्द्रो मरुद्गणः ॥ ३ ॥
२७ * * अश्नवद् ... पवमान व्यू अश्नुहि रश्मिभिर् वाजसातमः ।
दधत् स्तोत्रे सुवीर्यम् ॥ ४ ॥
८.१६.१ प्र सम्राजं चर्षणीनाम् इन्द्रं स्तोता नव्यं गीर्भिः ।
नरं नृषाहं मंहिष्ठम् ॥ ५ ॥
२ यस्मिन्न् उक्थानि रण्यन्ति विश्वानि च श्रवस्या ।
अपाम् अवो न समुद्रे ॥ ६ ॥
३ तं सुष्टुत्या विवासे ज्येष्ठराजं भरे कृत्नुम् ।
महो वाजिनं सनिभ्यः ॥ ७ ॥
३.१२.५[१.२] प्र वाम् अर्चन्त्य् उक्थिनो नीथाविदो जरितारः ।
४[३] इन्द्राग्नी इष आ वृणे ॥ ८ ॥
६ इन्द्राग्नी नवतिं पुरो दासपत्नीर् अधूनुतम् ।
साकम् एकेन कर्मणा ॥ ९ ॥
७ इन्द्राग्नी अपसस् पर्य् उप प्र यन्ति धीतयः ।
ऋतस्य पथ्या अनु ॥ १० ॥ ॥२२॥

४.२३

ऋ ३.१२.४ तोशा वृत्रहणा हुवे सजित्वानापराजिता ।
इन्द्राग्नी वाजसातमा ॥ १ ॥
८.८९.३ प्र व इन्द्राय बृहते मरुतो ब्रह्मार्चत ।
वृत्रं हनति वृत्रहा शतक्रतुर् वज्रेण शतपर्वणा ॥ २ ॥
४ अभि प्र भर धृषता धृषन्मनः श्रवश् चित् ते असद् बृहत् ।
अर्षन्त्व् आपो जवसा वि मातरो हनो वृत्रं जया स्वः ॥ ३ ॥

| | |
|---|---|
| ८.३.५ | इन्द्रम् इद् देवतातय इन्द्रं प्रयत्य् अध्वरे । |
| | इन्द्रं समीके वनिनो हवामह इन्द्रं धनस्य सातये ॥ ४ ॥ |
| ६ | इन्द्रो मह्ना रोदसी पप्रथच् छव इन्द्रः सूर्यम् अरोचयत् । |
| ... सुवानास * | इन्द्रे ह विश्वा भुवनानि येमिर इन्द्रे स्वानास इन्दवः ॥ ५ ॥ |
| ७.१००.५ * * * * * नामार्यः * * | प्र तत् ते अद्य शिपिविष्ट हव्यम् अर्यः शंसामि वयुनानि विद्वान् । |
| | तं त्वा गृणाभि तवसम् अतव्यान् क्षयन्तम् अस्य रजसः पराके ॥ ६ ॥ |
| ६ कौ * * * * परिचक्षि नाम * * * * | किम् इत् ते विष्णो परिचक्ष्यं भूत् प्र यद् ववक्षे शिपिविष्टो अस्मि । |
| | मा वर्पो अस्मद् अप गूह एतद् यद् अन्यरूपः समिथे |
| बभूथ (एवं कौ) | बभूथा ॥ ७ ॥ |
| | वषट् ते विष्णव् आस आ कृणोभि तन् मे जुषस्व शिपिविष्ट हव्यम् । |
| | वर्धन्तु त्वा सुष्टुतयो गिरो मे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ८ ॥ |
| ४.४७.१ | वायो शुक्रो अयाभि ते मध्वो अग्रं दिविष्टिषु । |
| | आ याहि सोमपीतये स्पार्हो देव नियुत्वता ॥ ९ ॥ |
| २ | इन्द्रश् च वायव् एषां सोमानां पीतिम् अर्हथः । |
| | युवां हि यन्तीन्दवो निम्नम् आपो न सध्र्यक् ॥१०॥ ॥२३॥ |
| | ४.२४ |
| ऋ ४.४७.३ | वायव् इन्द्रश् च शुष्मिणा सरथं शवसस् पती । |
| | नियुत्वन्ता न ऊतय आ यातं सोमपीतये ॥ १ ॥ |
| ९.९९.२ अध (एवं कौ) ... गाहते | अधा क्षपा परिष्कृतो वाजं अभि प्र गाहसे । |
| | यदी विवस्वतो धियो हरिं हिन्वन्ति यातवे ॥ २ ॥ |
| ३ | तम् अस्य मर्जयामसि मदो य इन्द्रपातमः । |
| | यं गाव आसभिर् दधुः पुरा नूनं च सूरयः ॥ ३ ॥ |
| ४ | तं गाथया पुराण्या पुनानम् अभ्य् अनूषत । |
| * कृपन्त (एवं कौ) ... | उतो श्रवन्त धीतयो देवानां नाम बिभ्रतीः ॥ ४ ॥ |
| १.२७.१ | अश्वं न त्वा वारवन्तं वन्दध्या अग्निं नमोभिः । |
| | सम्राजन्तम् अध्वराणाम् ॥ ५ ॥ |
| २ | स घा नः सूनुः शवसा पृथुप्रगामा सुशेवः । |
| | मीढ्वं अस्माकं बभूयात् ॥ ६ ॥ |
| ३ | स नो दूराच् चासाच् च नि मर्त्याद् अघायोः । |
| | पाहि सदम् इद् विश्वायुः ॥ ७ ॥ |

| | |
|---|---|
| जै ४.१०.३ | न हि ते अग्ने तन्वै शूरं विवेद मर्त्यः ।<br>कपिर् बभस्ति तेजनं पुनर् जरायु गौर् इव ॥ ८॥ |
| ३.२४.४ | अग्ने विश्वेभिर् अग्निभिर् देवेभिर् महया गिरः ।<br>यज्ञेषु ये उ चायवः ॥ ९॥ |
| ५ | अग्ने दा दाशुषे रयिं वीरवन्तं परीणसम् ।<br>शिशीहि नः सूनुमतः ॥ १०॥ ॥२४॥ |
| | ४.२५ |
| ऋ ३.२४.१ | अग्ने सहस्व पृतना अभिमातीर् अपास्य ।<br>दुष्टरस् तरन्न् अरातीर् वर्चो धा यज्ञवाहसे ॥ १॥ |
| ८.६९.२ | नदं व ओदतीनां नदं योयुवतीनाम् ।<br>पतिं वो अघ्न्यानां धेनूनाम् इषुध्यसि ॥ २॥ |
| ३ | ता अस्य सूददोहसः सोमं श्रीणन्ति पृश्नयः ।<br>जन्मन् देवानां विशस् त्रिष्व् आ रोचने दिवः॥ ३॥ |
| ८.६०.१ | अग्न आ याह्य् अग्निभिर् होतारं त्वा वृणीमहे ।<br>आ त्वाम् अनक्तु प्रयता हविष्मती यजिष्ठं बर्हिर् आसदे ॥ ४॥ |
| २ | अच्छा हि त्वा सहसः सूनो अङ्गिरः स्रुचश् चरन्त्य् अध्वरे ।<br>ऊर्जो नपातं घृतकेशम् ईमहे ऽग्निं यज्ञेषु पूर्व्यम् ॥ ५॥ ॥२५॥ |
| | ४.२६ |
| ऋ ९.१०१.१३ * सुन्वानस्यान्धसो * * [वृत * * | प्र सुन्वानायान्धसो मर्तो न वष्ट तद् वचः ।<br>अप श्वानम् अराधसं हता मखं न भृगवः ॥ १॥ |
| १४ | आ जामिर् अत्के अव्यत भुजे न पुत्र ओण्योः ।<br>सरज् जारो न योषणां वरो न योनिम् आसदम् ॥ २॥ |
| १५ | स वीरो दक्षसाधनो वि यस् तस्तम्भ रोदसी ।<br>हरिः पवित्रे अव्यत वेधा न योनिम् आसदम् ॥ ३॥ |
| ७.३२.१ * चिन्... श्रुधि (एवं कौ) | मो षु त्वा वाघतश् चनारे अस्मन् नि रीरमन् ।<br>आरात्ताद् वा सधमादं न आ गहीह वा सन्न् उप श्रुधी ॥ ४॥ |
| २ | इमे हि ते ब्रह्मकृतः सुते सचा मधौ न मक्ष आसते ।<br>इन्द्रे कामं जरितारो वसूयवो रथे न पादम् आ दधुः ॥ ५॥ |
| ८.५२.९ | अस्तावि मन्म पूर्व्यं ब्रह्मेन्द्राय वोचत ।<br>पूर्वीर् ऋतस्य बृहतीर् अनूषत स्तोतुर् मेधा असृक्षत ॥ ६॥ |

१० सम् इन्द्रो रायो बृहतीर् अधूनुत सं क्षोणी सम् उ
सूर्यम् ।
सं शुक्रासः शुचयः सं गवाशिरः सोमा इन्द्रम् अमन्दिषुः
॥ ७ ॥
३.२७.७ होता देवो अमर्त्यः पुरस्ताद् एति मायया ।
विदथानि प्रचोदयन् ॥ ८ ॥
८ वाजी वाजेषु धीयते ऽध्वरेषु प्र णीयते ।
विप्रो यज्ञस्य साधनः ॥ ९ ॥
९ धिया चक्रे वरेण्यो भूतानां गर्भम् आ दधे ।
दक्षस्य पितरं तना ॥ १० ॥ ॥२६॥

४.२७

ऋ ८.९२.७ त्यम् उ वः सत्रासाहं विश्वासु गीर्ष्व् आयतम् ।
आ च्यावयस्य् ऊतये ॥ १ ॥
८ युध्मं सन्तम् अनर्वाणं सोमपाम् अनपच्युतम् ।
नरम् अवार्यक्रतुम् ॥ २ ॥
९ शिक्षा ण इन्द्र राय आ पुरु विद्वं ऋचीषम ।
अवा नः पार्ये धने ॥ ३ ॥
९.३२.१ ...मघोनः प्र सोमासो मदच्युतः श्रवसे नो मघोनाम् ।
सुता विदथे अक्रमुः ॥ ४ ॥
३ आद् ईं हंसो यथा गणं विश्वस्यावीवशन् मतिम् ।
अत्यो न गोभिर् अज्यते ॥ ५ ॥
२ आद् ईं त्रितस्य योषणो हरिं हिन्वन्त्य् अद्रिभिः ।
इन्दुम् इन्द्राय पीतये ॥ ६ ॥
७.३२.१४ * * * त्वावसुम्... कस् तम् इन्द्र त्वावसव् आ मर्त्यो दधर्षति ।
* इत्... श्रद्धा हि ते मघवन् पार्ये दिवि वाजी वाजं सिषासति
॥ ७ ॥
१५ मघोनः स्म वृत्रहत्येषु चोदय ये ददति प्रिया वसु ।
तव प्रणीती हर्यश्व सूरिभिर् विश्वा तरेम दुरिता ॥ ८ ॥
८.६८.१० तं त्वा यज्ञेभिर् ईमहे तं गीर्भिर् गिर्वणस्तम ।
इन्द्र यथा चिद् आविथ वाजेषु पुरुमाय्यम् ॥ ९ ॥
११ यस्य ते स्वादु सख्यं स्वाद्वी प्रणीतिर् अद्रिवः ।
यज्ञो वितन्तसाय्यः ॥ १० ॥ ॥२७॥

४.२८

ऋ ८.६८.१२ उरु णस् तन्वे तन उरु क्षयाय नस् कृधि ।
उरु णो यन्धि जीवसे ॥ १ ॥

५.२५.७ यद् वाहिष्ठं तद् अग्नये बृहद् अर्च विभावसो ।
महिषीव त्वद् रयिस् त्वद् वाजा उद् ईरते ॥ २ ॥
८ तव द्युमन्तो अर्चयो ग्रावेवोच्यते बृहत् ।
उतो ते तन्यतुर् यथा स्वानो अर्त त्मना दिवः ॥ ३ ॥
९ एवाँ... एवो अग्निं वसूयवः सहसानं ववन्दिम ।
स नो विश्वा अति द्विषः पर्षन् नावेव सुक्रतुः ॥ ४ ॥
९.६३.७ अया पवस्व धारया यया सूर्यम् अरोचयः ।
हिन्वानो मानुषीर् अपः ॥ ५ ॥
८ अयुक्त सूर एतशं पवमानो मनाव् अधि ।
अन्तरिक्षेण यातवे ॥ ६ ॥
९ * * * दश... [उत त्या हरितो रथे सूरो अयुक्त यातवे । ]
इन्दुर् इन्द्र इति ब्रुवन् ॥ ७ ॥
८.६०.३ अग्ने कविर् वेधा असि होता पावक यक्ष्यः ।
मन्द्रो यजिष्ठो अध्वरेष्व् ईड्यो विप्रेभिः शुक्र मन्मभिः ॥ ८ ॥
४ अद्रोघम् आ वहोशतो यविष्ठ्य देवं अजस्र वीतये ।
अभि प्रयांसि सुधिता वसो गहि मन्दस्व धीतिभिर् हितः ॥ ९ ॥
१०.९.४ शं नो देवीर् अभिष्टय आपो भवन्तु पीतये ।
शं योर् अभि स्रवन्तु नः ॥ १० ॥ ॥२८॥

४.२९

ऋ. १०.९.५ ईशाना वार्याणां क्षयन्तीश् चर्षणीनाम् ।
अपो याचामि भेषजम् ॥ १ ॥
७ आपः पृणीत भेषजं वरूथं तन्वे मम ।
ज्योक् च सूर्यं दृशे ॥ २ ॥
८.१९.१ तं गूर्धया स्वर्णरं देवासो देवम् अरतिं दधन्विरे ।
* * ओहिरे देवत्रा हव्यम् ऊहिषे ॥ ३ ॥
२ विभूतरातिं विप्र चित्रशोचिषम् अग्निम् ईडिष्व यन्तुरम् ।
अस्य मेधस्य सोम्यस्य सोभरे प्रेम् अध्वराय पूर्व्यम् ॥ ४ ॥
७.१६.५ त्वम् अग्ने गृहपतिस् त्वं होता नो अध्वरे ।
त्वं पोता विश्ववार प्रचेता यक्षि वेषि च वार्यम् ॥ ५ ॥
६ कृधि रत्नं यजमानाय सुक्रतो त्वं हि रत्नधा असि ।
आ न ऋते शिशीहि विश्वम् ऋत्विजं सुशंसो यश् च दक्षते ॥ ६ ॥

| | |
|---|---|
| ७.३१.१० * * * महिवृधे… | प्र वो महे महेवृधे भरध्वं प्रचेतसे प्र सुमतिं कृणुध्वम् । |
| …चरा * | विशः पूर्वीः प्र चर चर्षणिप्राः ॥ ७ ॥ |
| ११ | उरुव्यचसे महिने सुवृक्तिम् इन्द्राय ब्रह्म जनयन्त विप्राः । |
| | तस्य व्रतानि न मिनन्ति धीराः ॥ ८ ॥ |
| १२ | इन्द्रं वाणीर् अनुत्तमन्युम् एव सत्रा राजानं दधिरे सहध्यै । |
| | हर्यश्वाय बर्हया सम् आपीन् ॥ ९ ॥ |
| ९.४९.२ | तया पवस्व धारया यया गाव इहागमन् । |
| …गृहम् (एवं कौ) | जन्यास उप नो गृहान् ॥ १० ॥ ॥२९॥ |

४.३०

| | |
|---|---|
| ॠ ९.४९.३ | घृतं पवस्व धारया यज्ञेषु देववीतमः । |
| | अस्मभ्यं वृष्टिम् आ पव ॥ १ ॥ |
| ४ | स न ऊर्जे व्य् अव्ययं पवित्रं धाव धारया । |
| | देवासः शृणवन् हि कम् ॥ २ ॥ |
| १०.१८६.१ | वात आ वातु भेषजं शंभु मयोभु नो हृदे । |
| * ण… | प्र न आयूंषि तारिषत् ॥ ३ ॥ |
| ३ कौ * * * * * ऽमृतं निहितं गुहा | यद् अदो वात ते गृहे ऽमृतस्य निधिर् हितः । |
| * * देहि * । कौ तस्य… | ततो नो धेहि जीवसे ॥ ४ ॥ |
| २ | उत वात पितासि न उत भ्रातोत नः सखा । |
| | स नो जीवातवे कृधि ॥ ५ ॥ |
| ७.३२.२६ | इन्द्र क्रतुं न आ भर पिता पुत्रेभ्यो यथा । |
| | शिक्षा णो अस्मिन् पुरुहूत यामनि जीवा ज्योतिर् अशीमहि ॥ ६ ॥ |
| २७ | मा नो अज्ञाता वृजना दुराध्यो माशिवासो अव क्रमुः । |
| | त्वया वयं प्रवतः शश्वतीर् अपो अति शूर तरामसि ॥ ७ ॥ ॥३०॥ |

॥ इति जैमिनीयसंहिता समाप्ता ॥

# मन्त्रप्रतीकानि